प्राङ्निवेदनम

स्य नागराक्षरे मुद्रणं अत्यपेक्षितमिति नाविदितचरं भारतीयाम्। मगधपालिभाषयोरतिसामीप्यादपि यत् परस्सहस्रेभ्य मज्ञेभ्य पालिग्रन्थगहनावगाहनं दुर्गमिव प्रतिभाति तत् लिपिभेदमात्रमभिनव प्रयास। अत्र नूतना अपि पाठभेदा निवेशा मनीषा पर कालात्ययभीत्याऽत्र प्रथमभागे धम्मपदादन्यत्र न तत् तेष्टिप्पणीषु सन्निवेशिताः पाठभेदा। प्राय Pali Text Society येभ्य उद्धृता।

स्तं बिना अस्मत्कर्मीहितं हृदि निगूहितमेव स्यात्। तत्र भदन्तेन ण नाम्ना प्रकार मद्गुणकृतमिति निवेदयति—

त्रिरत्नशुक्लैकादश्यां
२४८० बुद्धाब्दे

राहुल सांकृत्यायन.
आनन्दः कौसल्यायन
जगदीश काश्यपश्च

सुत्त-सूची

———

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।

इतिवुत्तकं

१—एकनिपातो

१—पाटिभोग-वग्गो

(१—राग-सुत्तं १।१।१)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"एकधम्मं[1] भिक्खवे! पजहथ[2]। अहं वो पाटिभोगो[3] अनागामिताय। कतमं एकधम्मं? लोभं भिक्खवे! एकधम्मं पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामितायाति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

येन लोभेन लुद्धासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
तं लोभं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति॥

अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥१॥

(२—दोस-सुत्तं १।१।२)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"एकं धम्मं भिक्खवे! पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामिताय। कतमं एकधम्मं? दोसं[4] भिक्खवे! एकधम्मं

१. [1]एकध° [2]पजहत B. अनागते [3]'पाटिभोगो ति पटिभू' A,
२. [4]द्वेष=दोसो द्वेष दोसमन्ति अनत्थम्मे अधरीति आघातो आपतीति . A

पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामिताया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

> येन दोसेन दुट्ठासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
> तं दोसं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
> पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति॥
> अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥२॥

(३—मोह-सुत्तं १।१।३)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"एकधम्मं भिक्खवे! पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामिताय। कतमं एकधम्मं? मोहं भिक्खवे! एकधम्मं पजहथ।

अहं वो पाटिभोगो अनागामिताया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

> येन मोहेन मूळ्हासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
> तं मोहं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
> पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति॥
> अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥३॥

(४—कोध-सुत्तं १।१।४)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"एकधम्मं भिक्खवे! पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामिताय। कतमं एकधम्मं? कोधं भिक्खवे! एकधम्मं पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामिताया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

> येन कोधेन कुद्धासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
> तं कोधं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
> पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति॥
> अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥४॥

(५—मक्ख-सुत्तं १।१।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं एकधम्मं भिक्खवे¹ पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामिताय। कतमं एकधम्मं? मक्खं भिक्खवे¹ एकधम्मं पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामितायाति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

> येन मक्खेन मक्खासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
> तं मक्खं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
> पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति
> अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥५॥

(६—मान-सुत्तं १।१।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"एकधम्मं भिक्खवे! पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामिताय। कतमं एकधम्मं? मानं भिक्खवे! एकधम्मं पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामिताय। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

> येन मानेन मत्तासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
> तं मानं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
> पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति॥
> अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥६॥

(७—सब्ब-सुत्तं १।१।७)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"सब्बं¹ भिक्खवे! अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय। सब्बञ्च खो भिक्खवे! अभिजानं परिजानं तत्थ चित्तं विराजयं पजहं भब्बो² दुक्खक्खयाया'ति।

५. १ C. D. E. P. Pa. इत्येषु मानसुत्तं प्राग् पश्चाद् मक्खसुत्तं। अनुसरन्ति B. M. च A.; १० सुत्तानन्तरं उद्दानं द्रष्टव्यम्।
७. ¹ सब्बम्पि, B.   ² अभब्बो, C.

एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

यो सब्बं सब्बतो ञत्वा सब्बत्थेसु[1] न[2] रज्जति[3]।
स वे[4] सब्बं[5] परिञ्ञा सो[6] सब्बदुक्खं[7] उपच्चगा[8] ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥७॥

(८—मान-सुत्तं १।१।८)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"मानं भिक्खवे अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय। मानञ्च खो भिक्खवे अभिजानं परिजानं तत्थ चित्तं विराजयं पजहं भब्बो दुक्खक्खयाया"ति। एतमत्थं भगवा अवोच—तत्थेतं इति वुच्चति।

मानुपेता अयं पजा मानगन्था[9] भवे[10] रता।
मानं अपरिजानन्ता[11] आगन्तारो[12] पुनब्भवं॥
ये च मानं पहत्वान[13] विमुत्ता मानसङ्खये[14]।
ते मानगन्थाभिभुनो[15] सब्बदुक्ख[16] उपच्चगुन्ति[17]॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥८॥

---

[1] सब्बमत्तेसु, P.Pa. [2] न पुन, B. [3] सज्जति, E., शोधितं-रज्जति, D. [4] सवे, M.; सचे, B.C.P. Pa.; सब्बे, D.E., अट्ठकथा व्याख्यान (व्यतं, एवंमेन) मपि वे—सपञ्ञोयं (स निपातमत्त)। [5] सब्बं, B.C.P.Pa.; सब्ब, M.D.E., D. पुस्तके शोधितं—सब्बं। [6] परिञ्ञा मो B. M. Pa.; परिञ्ञायो, C.; परिञ्ञातो, D.E.; A. पुस्तके-सब्बपरिञ्ञा' ति सब्बं [?] परिजाननतो यथावुत्तस्स सब्बस्स परिञ्ञाभिसमयवसेन परिजाननतो सो हि [?] यथावुत्तो योगावचरो अरियो। [7] °दुक्खमुप,° M. [8] उपच्चगा, C.P.Pa.

८. [9] °गन्था, C. D. E. M.; °गन्टा, P.Pa.; °सन्था, B. [10] भावे, B. [11] *मानं न परिजानन्ति,* P.P.a. [12] आगन्तारो, D.E.M.; अगन्थारो C; यगन्थारो P.Pa.; आगन्त्वायो, B. [13] पहत्वान, D. E.; पहन्त्वान, B.; पहन्तान, M.; पहन्तानं, C. Pa. A. (अट्ठकथा व्याख्यानं—पजहित्वा)। [14] °मय D.E., D. पुस्तकेसु शोध्यते-°सङ्खये, मतुसंखये, C. [15] °गन्तामि भुनो, M., °गन्थाभिभूनो, C. P. Pa.; °भुनो च, B. °गन्थाभिभूनो मो D.E. D. पुस्तकेसु शोध्यते— °भुना, सो—स्वरूपे। [16] °दुक्खमुप°, M. [17] उपच्चगा, C.P.Pa.

(९ लोभ-सुत्तं १।१।९)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"लोभं भिक्खवे ! अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय। लोभञ्च खो भिक्खवे ! अभिजानं परिजानं तत्थ चित्तं विराजयं पजहं भब्बो दुक्खक्खयाया"ति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

येन लोभेन लुद्धासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
तं लोभं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥९॥

(१० — दोस-सुत्तं १।१।१०)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"दोसं भिक्खवे ! अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय। दोसञ्च खो भिक्खवे ! अभिजानं परिजानं तत्थ चित्तं विराजयं पजहं भब्बो दुक्खक्खयाया"ति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

येन दोसेन दुट्ठासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
तं दोसं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥१०॥

पाटिभोग-वग्गो पठमो

तस्सुद्दानं[1]
राग (१) दोसा (२) अथ मोहो (३)
कोध[2] (४) मक्ख[3] (५) मानं[4] (६) सब्बं (७)।
मानतो (८) राग (९) दोसा (१०) पुन द्वे
पकासिता वग्गमाहु पठमन्ति॥

---

१०. [1] M. पुस्तके एव, M पुस्तके तु [illegible] पुस्तके [2] कोध, M., कुज्झनं, B.C.; [illegible] [3] मक्खं मानं, C., मानमक्खं, D.E.; [4] [illegible] C.M.P.Pa.

२— दुतियो वग्गो

(११— मोह-सुत्तं २।१)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहताति मे सुतं —'मोहं भिक्खवे ! अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय। मोहञ्च खो भिक्खवे ! अभिजानं परिजानं तत्थ चित्तं विराजयं पजहं भब्बो दुक्खक्खयाया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

येन मोहेन मूळ्हासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं[2]।
तं मोहं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनं॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥१॥

(१२—कोध-सुत्तं १।२।२)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहताति मे सुतं—'कोधं भिक्खवे ! अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय। कोधञ्च खो भिक्खवे ! अभिजानं परिजानं तत्थ चित्तं विराजयं पजहं भब्बो दुक्खक्खयाया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

येन कोधेन कुद्धासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं[4]।
तं कोधं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनं॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥२॥

---

११. [1] सो —स्पष्टं D.E. Pa. (P. पुस्तके पत्रैरयो योजितम्)
[2] दुग्गति, P.Pa. [3] ति B.
१२. [4] दुग्गति, Pa.

(१३—मक्खो-सुत्तं १।२।३)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"मक्खं भिक्खवे ! अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय। मक्खञ्च खो भिक्खवे ! अभिजानं परिजानं तत्थ चित्तं विराजयं पजहं भब्बो दुक्खक्खयायाति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

यैन मक्खेन मक्खासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गति[1]।
तं मक्खं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥३॥

(१४—मोह-सुत्तं १।२।४)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"नाहं भिक्खवे ! अञ्ञं एक-नीवरणम्पि[2] समनुपस्सामि येन नीवरणेन[3] निवुता पजा दीघरत्तं सन्धावन्ति संसरन्ति यथयिदं[4] भिक्खवे। अ वि ज्जा नीवरणं[5]। अविज्जानीवरणेन[6] हि[7] भिक्खवे निवुता पजा दीघरत्तं सन्धावन्ति संसरन्तीति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

नत्थञ्ञो एकधम्मोपि[8] येनेव निवुता पजा।
संसरन्ति अहोरत्तं यथा[9] मोहेन आवुता[10]॥
ये च मोहं पहन्त्वान[11] तमोक्खन्धं[12] पदालयुं।
न ते पुन संसरन्ति हेतु[13] तेसं न विज्जती'ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥४॥

---

१३. [1] दुग्गतिं, P.Pa.

१४ [2] एकनिव°, B.Pa. [3] निव°, B.Pa. [4] यथायिदं, B.P.Pa. [5] °निव°, B.P.Pa. [6] °निव°, B.Pa. [7] हि—[illegible] D.E. पुनक्खो [8] च, D.E. [9] सदा, D.E. [10] आवुटा, P.Pa. [11] पहन्त्वान, D.E.; पहन्त्वान B.C.; पहन्तान M.; पहन्तानं, P.; पहन्मान, Pa. [12] तमोक्खन्धं; तमोखन्धा, C. [13] हेतुमूलकारणं अविज्जा तेसं न विज्जति सब्बसो नत्थि समुच्छिन्नत्ता ति, A.

(१५—तण्हा-सुत्तं १।२।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहताति मे सुतं—"नाहं भिक्खवे! अञ्ञं¹ एकसंयोजनम्पि² समनुपस्सामि येनेवं³ संयोजनेन⁴ संयुत्ता⁵ सत्ता दीघरत्तं सन्धावन्ति संसरन्ति यथयिदं⁶ भिक्खवे तण्हा—संयोजनं⁷। तण्हासंयोजनेन हि भिक्खवे! संयुत्ता सत्ता दीघरत्तं सन्धावन्ति संसरन्तीति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—⁸

तण्हादुतियो⁹ पुरिसो दीघमद्धानं संसरं।
इत्थभावञ्ञथाभावं¹⁰ संसारं नातिवत्तति¹¹ ॥
एतमा¹² दीनवं ञत्वा¹³ तण्हादुक्खस्स सम्भवं।
वीततण्हो अनादानो सतो भिक्खु परिब्बजेति¹⁴ ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति¹⁵ ॥५॥

(१६—सेख-सुत्तं १।२।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहताति मे सुतं¹⁶—"सेखस्स¹⁷ भिक्खवे! भिक्खुनो अप्पत्तमानसस्स¹⁸ अनुत्तरं योगक्खेमं पत्थयमानस्स विहरतो अज्झत्तिकं अङ्गन्ति करित्वा¹⁹ न अञ्ञं एकङ्गम्पि समनुपस्सामि एवं बहुकारं²⁰ यथयिदं²¹ भिक्खवे!

१५. ¹ अञ्ञं°, एकं B. ² °सञ्ञोजनं, B.M. ³ येन, M. ⁴ सञ्ञोज°, B.M. ⁵ संयुत्ता, एकः न कारो, D.E. ⁶ यथायिदं, ⁷ सञ्ञोजनं?, B.M. B.C.P.Pa. ⁸ एतत् M.पुस्तके एव ⁹ तण्हादुतियो तण्हासहायो (द्वितीयो इत्यस्य—सहायो), A. ¹⁰ इत्थभाव°, C.A. तस्स इत्थभावो मनुस्सत्तं अञ्ञथा भावो ततो अवसिट्ठ सत्तावासा. ¹¹ नातिवत्तति न अतिक्कमति, A. ¹² एवं, C.M.P.Pa.A.; एतं B.D.E. ¹³ ञत्वा, C.P.Pa. ¹⁴ एतासां एव गाथानां पुनरावृत्तिः १०५ सूत्रे। ¹⁵ पञ्च° M. पुस्तके एव

१६. ¹⁶ सुतं° M. एव ¹⁷ सेक्खस्स, C.D.E. अप्पत्त°, B.D. ¹⁸ E.P. M. Aa; अप्पत्तम?, o. Pa.; अप्पत्तमानसस्स, C.; अप्पत्त अरहत्तस्साति, A., मानस शब्दस्य पर्यायः अयं शब्दार्थ प्रतीयते। धम्मपदे २५५ (S.Childers, Dict.S.V. देखो). ¹⁹ अज्झत्तं सन्ताने समुट्ठितं कारणं करित्वा, A. ²⁰ बहूकारं, C. ²¹ यथायिदं, B.; यथाइदं, D.

योनिसो मनसिकारो। योनिसो भिक्खवे ! भिक्खु मनसि[1] करोन्तो अकुसलं पजहति कुसलं भावेतीति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति[2]—

योनिसो मनसिकारो धम्मो सेखस्स[3] भिक्खुनो।
नत्थञ्ञो एवं बहूपकारो[4] उत्तमत्थस्स पत्तिया।
योनिसो पदहं[5] भिक्खु[6] खयं दुक्खस्स पापुणे ति[7]
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[8] ॥६॥

(१७—कल्याणमित्तता-सुत्तं १।२।७)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं[9]—"सेखस्स[10] भिक्खवे ! भिक्खुनो अप्पत्तमानसस्स अनुत्तरं योगक्खेमं पत्थयमानस्स विहरतो बाहिरं अङ्गन्ति करित्वा न अञ्ञं एकङ्गम्पि समनुपस्सामि एवं बहूपकारं यथयिदं[11] भिक्खवे कल्याणमित्तता[12]। कल्याणमित्तो भिक्खवे ! भिक्खु अकुसलं पजहति कुसलं भावेतीति[13]। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति[14]—

कल्याणमित्तो यो भिक्खु सप्पतिस्सो[15] सगारवो।
करं[16] मित्तानं वचनं सम्पजानो पतिस्सतो[17]।
पापुणे अनुपुब्बेन सब्बसंयोजनक्खयन्ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[18] ॥७॥

(१८—संघभेद-सुत्तं १।२।८)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं[19]—"एकधम्मो भिक्खवे ! लोके उप्पज्जमानो उप्पज्जति बहुजनाहिताय बहुजनासुखाय[20] बहुनो जनस्स[21]

---

[1] C. मनसि .... एका पंक्ति स्खलन [2] एतं° M. एव। [3] ध° सेख म्°, B.; ध° सेक्खस्स, D.E. [4] बहूकारो, M [5] पदहं, D E. [6] भिक्खु, E. भिक्खवे, D. [7] पापुणेति, E., °णाति, D. [8] अयं° M. एव।

१७. [9] वुत्त° M. एव। [10] सेक्खस्स, C.D.E. [11] यथयिदं, B Pa [12] °मित्तं, P.Pa. [13] भावेति, B. [14] °एतं M एव। [15] सप्पतिस्सो, M [16] कल्याणमि°, C. [17] पटि°, M. [18] अय°, M एव

१८ [19] वुत्तं° M. एव। [20] बहुजन अहिताय बहुजन असुखाय, B P Pa.; D E. इमे शब्दा स्खलिता। [21] बहुनोजनस्स, B C. (B प्रथम अक्खरो विलिखित।

अनत्थाय अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सानं। कतमो[1] एकधम्मो? संघभेदो। संघे खो पन भिक्खवे! भिन्ने होति,[2] अञ्ञमञ्ञं भण्डनानि चेव होन्ति, अञ्ञमञ्ञं परिभासा च परिक्खेपा च होन्ति अञ्ञमञ्ञं परिच्चजना[3] च[4] होन्ति, तत्थ अप्पसन्ना चेव नप्पसीदन्ति, पसन्नानञ्च एकच्चानं अञ्ञथत्तं[5] होतीति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति[6]

आपायिको[7] नेरयिको कप्पट्ठो संघभेदको।
वग्गारामो[8] अधम्मट्ठो योगक्खेमा पधंसति[9]।
संघं समग्गं[10] भित्वान[11] कप्पं निरयम्हि[12] पच्चतीति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥८॥

(१९—संघसमग्गी-सुत्तं १।२।९)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"एकधम्मो भिक्खवे! लोके उप्पज्जमानो उप्पज्जति बहुजनहिताय बहुजनसुखाय, बहुनो जनस्स अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं। कतमो एकधम्मो? संघस्स सामग्गी[13]। संघे खो पन भिक्खवे! समग्गे न चेव अञ्ञमञ्ञा भण्डनानि[14] होन्ति, न च अञ्ञमञ्ञा परिभासा होन्ति, न च अञ्ञमञ्ञा परिक्खेपा होन्ति,[15], न च अञ्ञमञ्ञा परिच्चजना[16] होन्ति तत्थ अप्पसन्ना चेव पसीदन्ति[17] पसन्नानञ्च[18] भीयो भावो[19] होतीति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

[1] कतमो च, D.E. [2] अ° परिभासा च हु° त्यक्तः Pa. [3] परिच्चज्ज°, B. [4] च—त्यक्तः C. [5] अञ्ञथत्तं, C.E.M.; अञ्ञातत्थं, B.D.P.Pa.A. [6] एतं° M. एव [7] आपा°, M.; अपायि शेषेषु हस्तलेखेषु। [8] वग्गारामो, B.C.M. (कम्मारामो, सुत्ते ७९.); वग्गरामो, P.Pa.; वग्गरतो D-E. [9] योगक्खेमा विधमति, M.; धंसति द्रष्टव्यं Journ.P.T.S., 1885, p. 4. [10] सद्धम्मामगि, B. (सुत्ते १९). [11] भेत्वान, D.E.Pa. [12] निरयम्हि (?) पच्चति—नैव, निरये।

१९. निरयम्हि च P.Pa.

१९ [13] सामग्गी, P.; अन्येषु सर्वेषु हु०. इ° [14] भण्डना, D.E. [15] Pa. त्यज्यते—न च......होन्ति। [16] परिच्चज्जना, B. [17] पसीद°, Pa. [18] पसन्न°, P.Pa. [19] भिय्यो°, B.M.P.Pa.

सुखा[1] संघस्स सामग्गी[2] समग्गानञ्च'नुग्गहो[3] ।
समग्गरतो धम्मट्ठो योगक्खेमा न धंसति ।
संघं समग्गं[4] कत्वान कप्पं सग्गम्हि मोदतीति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥९॥

(२०—दुट्ठचित्त-सुत्तं १।२।१०)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"इधाहं भिक्खवे ! एकच्चं पुग्गलं पदुट्ठचित्तं एवं चेतसा चेतो परिच्च पजानामि, इमम्हि चायं समये पुग्गलो कालं करेय्य यथा भतं निक्खित्तो एवं निरये[5] । तं किस्स हेतु ? चित्तञ्हिस्स भिक्खवे ! पदुट्ठं । चेतोपदोसहेतु खो पन[6] भिक्खवे ! एवमिधेकच्चे सत्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जन्तीति[7] । एतमत्थं भगवा अवोच । तत्थेतं इति वुच्चति—

पदुट्ठचित्तं[8] ञत्वान एकच्चं इध पुग्गलं ।
एतमत्थञ्च ब्याकासि बुद्धो भिक्खून सन्तिके ॥
इमम्हि चायं समये कालं करियाथ[9] पुग्गलो ।
निरयं उपपज्जेय्य चित्तञ्हिस्स पदूसितं[10] ॥
यथा हरित्वा निक्खिपेय्य एवमेव तथाविधो ।
चेतो पदोसहेतू हि[11] सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१०॥

वग्गो दुतियो ॥ २ ॥

[1] सुखाय, B. [2] इ—सर्वत्र [3] °चनुग्गहो, C.D.E.M.P.Pa., A2, °चानुग्गहो, B. [4] संघं समग्गं, M; समग्गस्स°, P.Pa; संघस्स स°, D.E; संघसामग्गिं, C.; °इ, B.

२० [5] निरये' ति, P.Pa. [6] पन—त्यज्यते C.M. [7] उपपज्ज°, D.E. [8] चित्तं तं, D.E. [9] करियाथ, C.D.E.M; करियाथ, B, करिया, P.Pa. [10] °पदूसितं, D.E.P.; उ, Pa.; पदुसितं, B.C.M. [11] हेतुहि, C.D.E.M.; हि, P. Pa, हेतु हि, B.

[illegible] —

[illegible] (११) [illegible] (१२) [illegible] ।
(१३) [illegible] (१४) [illegible] (१५) [illegible] (११, १०) ।
[illegible] (१६) [illegible] (१७) [illegible]
(१८) [illegible]

---

[1] उद्दानं, अत्यशु दसवँषु हस्तलेखेषु । [2] कोध—मवं० ह०, [3] मक्खनो, B.P.Pa ; मक्खायो, M ; मक्खिनो, D.E. मक्खकों, C. [4] मुह्, B., मुहा, M , मुमा, C D.E.P Pa. [5] काम, B.C.M.P Pa ; कामर, D.E [6] सेक्ख, D.E.M.; सेख P.Pa. [7] भेदमोद, P.; ° मेद, Pa.; ° मेघ, D.E; ° मेव, B.C.; ° सामग्ग, M. [8] वुच्चनीति, D.E.M. Pa.

३—ततियवग्गो

(२१—चित्त-सुत्तं १।३।१)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता, ति मे सुतं—"इधाहं भिक्खवे ! एक
पसन्नचित्तं एवं चेतसा चेतो परिच्च पजानामि, इमम्हि¹ चायं समय
कालं करेय्य यथा भतं निक्खित्तो एवं सग्गे। तं किस्स हेतु ? चि
भिक्खवे ! पसन्नं। चेतोपसादहेतु खो पन भिक्खवे² एवमिधेकच्चे सत्ता
भेदा परम्मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जन्तीति³। एतमत्थं भगवा
तत्थेतं इति वुच्चति—

पसन्नचित्तं ञत्वान एकच्चं इध पुग्गलं।
एतमत्थञ्च³ ब्याकासि बुद्धो भिक्खूनं सन्तिके ॥
इमम्हि चायं समये कालं कयिराथ⁴ पुग्गलो।
सुगतिं⁵ उपपज्जेय्य⁶ चित्तञ्हिस्स पसादितं ॥
यथा हरित्वा निक्खिपेय्य एवमेव⁷ तथाविधो।
चेतो पसादहेतू⁸ हि सत्ता गच्छन्ति सुगतिन्ति⁹ ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१॥

---

२१. ¹इमस्मि, M.
²अत्थं (स्वस्थले, च) D.E.Pa
कयिराथ, B.P.Pa.
⁶उपपज्ज, D.E.
⁸°हेतू C.M ; °हेतु, B.D.E.P.Pa
⁹सुग° ०,C.D.E.M.

³उपपन्न°, D.E.
⁴कयिराथ, C.D.E.M ;
⁵सुगतिं C.M
⁷एवमेव, B.C.Pa.

(२२—भायी-सुत्तं १।३।२)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"[1]मा भिक्खवे! पुञ्ञानं भायित्थ, सुखस्सेतं भिक्खवे अधिवचनं, इट्ठस्स कन्तस्स पियस्स मनापस्स, यदिदं पुञ्ञानि। अभिजानामि खो पनाहं भिक्खवे! दीघरत्तं कतानं पुञ्ञानं दीघरत्तं इट्ठं[2] कन्तं पियं मनापं विपाकं पच्चनुभूतं। सत्त वस्सानि मेत्तचित्तं भावेत्वा सत्त[3] संवट्टविवट्टकप्पे[4] न-यिमं लोकं पुनरागमासिं,[5] संवट्टमाने सुदं भिक्खवे! कप्पे आभस्सरूपगो होमि, विवट्टमाने कप्पे सुञ्ञं ब्रह्मविमानं उपपज्जामि। तत्र सुदं भिक्खवे! ब्रह्मा होमि[5] महाब्रह्मा अभिभू अनभिभूतो अञ्ञदत्थुदसो[6] वसवत्ती[7]। छत्तिंसक्खत्तुं खो पनाहं भिक्खवे! सक्को अहोसिं[8] देवानमिन्दो, अनेकसतक्खत्तुं राजा अहोसिं,[9] चक्कवत्ती धम्मिको धम्मराजा चातुरन्तो विजितावी[7] जनपदत्थावरियप्पत्तो[10] सत्तरतनसमन्नागतो[11]। को पन वादो पदेसरज्जस्स? तस्स मय्हं भिक्खवे! एतदहोसि। किस्स[12] नु खो मे इदं कम्मस्स फलं,[13] किस्स[13] कम्मस्स विपाको, येनाहं एतरहि एवं महिद्धिको एवं महानुभावो ति? तस्स मय्हं भिक्खवे! एतदहोसि। तिण्णं[14] खो मे इदं कम्मानं फलं, तिण्णं कम्मानं विपाको, येनाहं एतरहि एवं महिद्धिको एवं महानुभावोति, सेय्यथीदं[15] दानस्स दमस्स सञ्ञमस्सा[16] ति। एत अत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

पुञ्ञमेव सो सिक्खेय्य आयतग्गं सुखिन्द्रियं[17]।

२२. [1] विरामाभावः—मा भिक्खवे......पदेसरज्जस्स; B.M. पुस्तकयोः—भायित्थ इत्येतदनन्तरं—पुञ्ञानि, होमि, उपपज्जामि, वसवत्ति, कोपन—इत्यतःप्राग् M. तथा-इत्येतदनंतरं पच्चनुभूतं इन्दो; यथा D. पश्चात्—मनापस्स, पच्चनुभूतं, आगमासि, उपपज्जामि वसवत्ति, इन्दो, धम्मराजा, प्राक्—कोपन; E. पुस्तके—भायित्थ—इत्येतदनंतरं अधिवचनं, मनापस्स, पच्चनुभूतं, .. .यथा D. [2]M. त्यज्यते द्वितीयं—दीघरत्तं; भिक्खवे दीघरत्तं अदानं इट्ठं, B. [3]सत्त—त्यज्यते D E. सत्तसंवट्टकप्पे, P.Pa. [4]पुन, B.C. M.P.Pa; आगमा C.M. [5]अहोसि, P.Pa. [6]°त्थुसो, D.E.; °त्थुते, C.; अञ्ञदत्थुदस्सा, P.; अञ्ञदत्थु, ५ इ० सुत्ते ११२ एतेषां शब्दानां पुनरुक्तिस्तत्र [7]°इ सर्वत्र हस्त० विजितावी E.M. [8]अहोसि, D.M.; °इ पुस्तकयोरेव [9]अहोसि, M.; °इ-सर्वत्रान्येषु [10]पत्तो, B.M. [11]°सम्पन्नो, B.M. [12]तस्स, D.E. [13]त्यज्यते D.E. [14]तिन्नं, C. [15]°थिदं, B.M.P. ५ [16]संञ्ञा° B. [17]सुखन्द्रियं, D.E

दानञ्च समचरियञ्च मेत्तचित्तञ्च[1] भावये ॥
एते धम्मे भावयित्वा तयो सुखसमुद्दये[2] ।
अब्यापज्झं[3] सुखं लोकं पण्डितो उपपज्जतीति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥२॥

(२३—उभो अत्थ-सुत्तं १।३।३)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता, ति मे सुतं—"एकधम्मो भिक्खवे ! बहुलीकतो उभो अत्थे समधिगय्ह[1] तिट्ठति दिट्ठधम्मिकञ्चेव अत्थं सम्परायि कतमो एकधम्मो ? अप्पमादो कुसलेसु धम्मेसु । अयं खो भिक्खवे[1] ए भावितो बहुलीकतो उभो अत्थे समधिगय्ह[2] तिट्ठति दिट्ठधम्मिकञ्चेव सम्परायिकञ्चा"ति । एतं अत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

अप्पमादं पसंसन्ति पुञ्ञकिरियासु[1] पण्डिता ।
अप्पमत्तो उभो अत्थे अधिगण्हाति पण्डितो ॥
दिट्ठे धम्मे च यो अत्थो यो चत्थो सम्परायिको ।
अत्थाभिसमया[3] धीरो पण्डितो ति पवुच्चतीति ॥
अयम् पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥३॥

(२४—वेपुल्लपब्बत-सुत्तं १।३।४)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"एकपुग्गलस्स भिक्खवे ! कप्प

[1] मेत्ता॰ B. [2] ॰समुद्दये, M ; ॰समुदये, P. च; सुखे समुद्दिते, B, तयो सुखसमुद्दिते, C.; यो सुखसमुद्दिये, D ; समुद्दिये, I ; A. वेदना— सुखसमुद्दिये (?) ति सुखानिसंसे आनिसंसे उपलब्भन्ते तं सुखमेव-ति दस्सेति अब्यापज्झं...., सुखे १० अपि, गाथाउपरि, समुदये—इति सुद्धतम । एतादृशा शब्द· तेलकटाहगाथायां ८९—दानादिपुञ्ञकिरियानि सुखदायानि कत्वा, इ० भद्दसुत्त॰ Part.I p.97

२३ [1] ॰समधिगय्ह D. च
[2] समधिगय्ह, D.P.Pa
[3] अत्थाभि॰ P.Pa.

[3] ब्रह्म, B.M.
[1] भिक्खु, C
[1] ॰किरियासु, M

सन्धावतो संसरतो सिया[1] एवं महा[2] अट्ठिकङ्कलो[3] अट्ठिपुञ्जो अट्ठिरा
यथायं वेपुल्लपब्बतो,[4] स चे संहारको[5] अस्स, सम्भतञ्च[6] न विनस्सेय्या
एतं अत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

एकस्सेकेन कप्पेन पुग्गलस्सट्ठिसञ्चयो[7] ।
सिया पब्बतसमो रासि इति वुत्तं महेसिना[8] ॥
सो[9] खो पनायं अक्खातो वेपुल्लो[10] पब्बतो महा ।
उत्तरो गिज्झकूटस्स[11] मगधानं गिरिब्बजे ॥
यतो च[12] अरियसच्चानि सम्मप्पञ्ञाय पस्सति ॥
दुक्खं दुक्खसमुप्पादं दुक्खस्स च अतिक्कमं ।
अरियं[13] 'अट्ठङ्गिकं[14] मग्गं दुक्खूपसमगामिनं[15] ।
स[16] सत्तक्खत्तुं परमं सन्धावित्वान पुग्गलो ॥
दुक्खस्सन्तकरो होति सब्बसंयोजनक्खया ति ।
अयं पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥४॥

(२५—सम्पजानमुसावाद-सुत्तं १।३।५)

एकधम्मं[1] अतीतस्स[2] मुसावादिस्स[3] जन्तुनो।
वितिण्णपरलोकस्स नत्थि पापं अकारियन्ति[4] ॥
अयं पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥५॥

(२६—दान-सुत्तं ३।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता, ति मे सुतन्ति—एवञ्चे भिक्खवे सत्ता जानेय्यु दानसंविभागस्स विपाकं यथाहं जानामि, न अदत्वा भुञ्जेय्यु, न च नेसं मच्छेरमलं चित्तं परियादाय तिट्ठेय्य[5] यो पि नेसं अस्स चरिमो आलोपो चरिमं कबलं,[6] ततो पि न असंविभजित्वा भुञ्जेय्यु, सचे नेसं पटिग्गाहका अस्सु। यस्मा च खो भिक्खवे सत्ता न[7] एवं जानन्ति दानसंविभागस्स विपाकं यथाहं जानामि, तस्मा अदत्वा भुञ्जन्ति मच्छेरमलञ्च नेसं चित्तं परियादाय तिट्ठतीति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

एवञ्चे सत्ता जानेय्यु यथा वुत्तं महेसिना।
विपाकं संविभागस्स यथा होति महप्फलं ॥
विनेय्य[8] मच्छेरमलं विप्पसन्नेन चेतसा।
दज्जु[9] कालेन अरियेसु यत्थ दिन्नं महप्फलं ॥
अन्नञ्च दत्वा बहुनो[10] दक्खिणेय्येसु दक्खिणं।
इतो चुता मनुस्सत्ता सग्गं गच्छन्ति दायका ॥
ते च सग्गं[11] गता तत्थ[12] मोदन्ति कामकामिनो।
विपाकं संविभागस्स अनुभोन्ति अमच्छरानि ॥
अयं पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥६॥

---

[1] एकं ध°, C.D.E. [2] भणितस्स, P.Pa.
[3] °वादस्स, B.P. Pa.A. अ [4] इदमेव पदे. धम्म १७६
२६. [5] तिट्ठेय्यं, C., तिट्ठेय्यु, B [6] कबलं, M
[7] न., BC. [8] विनेय्यु, M; A. पुस्तके मच्छरियं मलं अपनेत्वा
[9] दज्जं, C.; दज्ज, B; A. पु० दज्जं (?) ददेय्यु [10] बाहुनो D.E.
[11] सग्गं, M.P.Pa.; सग्ग, B.C; D.E. [12] एते सग्गगता सत्ता, C.

[illegible]

२०. [1]मातृग्राम ० । ३।८६-८७ [illegible] [2]ओसधिकानि, P. [illegible] [3][illegible]

[4]विय,° M. [5][illegible], M., [illegible], P1 [6][illegible], A. [7][illegible], B. [8]ता—[illegible] B. C. P. ग [9][illegible], M. P. P1. A. म., वल्लिमा, B. वल्लिमान, C. D. E. [illegible], M. P1. [10]वालाभा, M. [11]मानि, B. C. P. P1. [12][illegible] P1. [13]एवं सो, B. C. M. P. P1. [14][illegible] C. [15][illegible], B. [17]वग्ग°, M. P. P1. [18]विहे, D. E. M. P. P1., A. — विहेथ उद्दिहे। (उद्दिहे?) वेथविगमेन दुरितुनो, वि प्रस्थो [19][illegible], B. [20]अभुसक्कमानो ति उसमुगासो [illegible] [illegible], A.; [illegible]—[illegible] Child. Dict., [illegible]—[illegible]-and [illegible]° [illegible], M.; आभुसमु°, P.; अभस्सन°, P1, अनभुसक्कमासो, E., अभुसक्कमासो, D; आमासमानो, B. C. [21]पासगत, B.; [illegible] तमं तमं, D. E. [22]अभिरुहय, E. अभिरुहय, D. [23]om. P. P1. [23]ओसधिकानि, B. C. [24]° विस°, M. [25]काल, B. [26]तग्ग° M. P. Pa.

अधिग्गहेत्वा भासते च तपते[1] च[1] विरोचति च। सेय्यथापि भिक्खवे ! रत्तिया पच्चूससमयं ओसधितारका भासते च तपते[2] च[3] विरोचति[3] च, एवमेव खो भिक्खवे ! यानि कानिचि ओपधिकानि[4] पुञ्ञकिरियवत्थूनि[5] सब्बानि तानि मेत्ताय चेतोविमुत्तिया कलं नाग्घन्ति[6] सोळसिं, मेत्ता येव तानि चेतोविमुत्ति अधिग्गहेत्वा भासते च तपते[7] च[7] विरोचति चेति"[8] एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

यो च[9] मेत्तं भावयति अप्पमाणं[10] पटिस्सतो[11]।
तनु[12] संयोजना होन्ति पस्सतो[13] उपधिक्खयं॥

एकम्पि चे पाणमदुट्ठचित्तो[14] मेत्तायति कुसलो[15] तेन होति।
सब्बे च पाणे मनसानुकम्पं[16] पहूतम[17]रियो पकरोति पुञ्ञं॥

ये[18] सत्तसण्डं[19] पथविं[20] विजित्वा[21] राजीसयो[22] यजमानानुपरियगा[23]।
(अस्समेधं[24] पुरिसमेधं[25] सम्मापासं[26] वाजपेय्यं[27] निरग्गळं[28])
मेत्तस्स चित्तस्स सुभावितस्स[29] कलम्पि ते नानुभवन्ति सोळसिं[28]॥
(चन्दप्पभा तारगणा' व[30] सब्बे)

[1] ओसधितारानि, B. C. [2] तपपा, P. तपन्त Pa. [3] च तपन्त Pa ; वासवो च विरोचति, B. [4] ओसधितारानि, B.C. [5]तपन्त C. [6] मघ°, C.M. P Pa. [7] तपया, P.; तपन्त Pa. [8] च [वाति] ति, C.D E.P. [9] तपन्त D.E. Pa. [10] अप्पमानं, B. C. D. E. A. अ. [11] पटिस्स°, M.; पतियतो, B. [12] मनु, C.; तन्य, D. E. [13] पस्सधीरो, C. [14] पानपदुट्ठ°, C.; पाणपदु°, B [15] कुसली D E. [16] °कम्पं, B.; कम्पि, D.E. [17] पहूतम्, M. (च सबधेन) D; बहूनम्, E.; बहूतम, C. P.Pa. बाहूनम, B. [18] यो, C.M. [19] °सन्तं, B. C., सत्ता°, B [20] पठवि,C. D. E. [21] विजेत्वा, D. E. P. Pa [22] राजीसयो, E ; राजीसयो, D.M.; राजीसयो, Pa.; राजिस्सयो, C. P ; राजिस्सरो, B. [23] यजमानो नुपरि°, P. Pa.; ये यजमाननुप°, C.; °नुपरियगा सर्वत्र हस्तलेखेषु A. अनुपरियहा (सिच् !) ति विभरिसु'; अनुपरियगु' °गू —वायुक्यते बहुवचनं [24] तस्स°, B. C.M. [25] पू°, B ; पुरिसस्समे°,C [26] सपोसं, C. [27] वाच°, C.; वाचा°, B. M. P. Pa. [28] I.C. [29] सभा°, D. E.; सभासितस्स, C. [30] च, B. C. E. M. बन्धनीस्थ पाठ पुराण ग्रन्थेर दृष्टाभाति, अट्ठकथायामप्युपलभ्यते। (अस्समेधं ... निरग्गलं) लभ्यते संयुत्त-निकाय, Part I, P.76.

यो न हन्ति न घातेति[1] न[2] जिनाति[3] न[4] जाप...
मेत्त सो[5] सब्बभूतेसु वेरं तस्स न केनची ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥७॥
[उद्दान][7]
चित्त(२१) झायि(२२) उभो अत्थे[8] (२३) पुञ्ञा[9] वेपु...
सम्पजानमुसावादो (२५) दानञ्च (२६) मेत्तभावञ्च...
सत्तिमानि च सुत्तानि पुरिमानि च वीसति ।[11]
एकधम्मेसु सुत्तन्ता सत्तवीसति सङ्गहा ॥
एकनिपातो निट्ठितो,
द्वे धम्मे अनुक्कटि ।[12]

---

[1] घातेति, D.; घाचेति, E.; नाग्घतीति, C. [2] न च, P P2.
[3] जिनाति, B. [4] न च, P2. [5] जासये, B [6] मेत्तासो, P P2;
मेत्तंयो, C. [7] (उद्दानं) त्यज्यते सर्वत्र ह० [8] अत्था, M , अत्ता, C
[9] पुञ्ञा (एष शब्दः सुत्त. २४), M. [10] मेत्त°, C D L M,
मेत्ता°, B.; मेत्तं, P.P2; °भावञ्च, B. M.; °भावच, C, °भावा ...
D. E.; बाधपृष, P. P2.; मेत्ताभावना अभिप्रेता [11] सत्तिमानि
वीमनि M पुनरे. [12] अनुक्कटि, M.; °र, C.; मनुक्कुटि, B , अनुक्...
D. E.; मनुक्कटि, P2. (P.?).

१—पठमोवग्गो

(२८ —इन्द्रिय-सुत्त २।१।८)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"द्वीहि भिक्खवे। धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु दिट्ठे'व[1] धम्मे दुक्खं विहरति सविघातं स-उपायासं[2] सपरिळाहं कायस्स भेदा परम्मरणा दुग्गति पाटिकङ्खा। कतमेहि द्वीहि? इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारताय च[3] भोजने अमत्तञ्ञुताय च[4]। इमेहि भिक्खवे द्वीहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु दिट्ठे'व[5] धम्मे दुक्खं विहरति सविघातं स-उपायासं सपरिळाहं, कायस्स भेदा परम्मरणा दुग्गति पाटिकङ्खा'ति।" एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

चक्खु[6] सोतञ्च घानञ्च जिव्हा कायो तथा मनो।
एतानि यस्स द्वारानि अगुत्तानि'ध[7] भिक्खुनो॥
भोजनम्हि[8] अमत्तञ्ञू[9] इन्द्रियेसु असंवुतो।
कायदुक्खं चेतोदुक्खं दुक्खं सो[10] अधिगच्छति॥
डय्हमानेन कायेन डय्हमानेन चेतसा।
दिवा वा यदि वा रत्तिं[11] दुक्खं विहरति तादिसो'ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥ १॥

---

[1] चेव, B.P.Pa., A. अ. [2] सउप°, B.A. अ. [3] दक्ख B.
[4] अगुत्तद्वारो ..अमत्तञ्ञू, A अ., इति पाठान्तरं पुस्तके [5] चेव, B
[6] भिक्खु, D.E. [7] च, B.D.E. Aa.; अगुत्तानिध C. [8] भो° च, C.
[9] °ञ्ञ°, M.; °उ, B.C.D.E.; अप्पमत्°, P.Pa. [10] दुक्खं सो, C., दुक्खतो, B.; A. पुस्तके दुक्खंसो न समत्तेपदे यथा मेत्तंसो सुत्त २७
[11] °रत्ति, B.P.Pa.

(३० —तपनीय सुत्तं २।१।३)

वुत्तं[16] हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं — "द्वेमे भिक्खवे [illegible]

[illegible][17]। कतमे द्वे ? [illegible]

[illegible][18] [illegible][19] [illegible]

२९ [1]वेत, D ; द्रष्टव्य मूल [illegible] [2]नुमति, D E P P2.
[3]रसद्द°, B [4]भोजनेन, B. [5]पुमेहि मो, D E. [6][illegible], B
[7]चेत, D.E. [8]अपो, B.C.M. [9]D E. [illegible]
[10]प, C.M.; च, B.D E.P.P2. [11] °ऊ, M ; [illegible]
[12]मुत्तं मो, M.P.P2 (इ० सु० २८) एत्थ नत्थि—सुत्त, D E , [illegible], B C
[13]अटाप्°, B.; वप् D.E. [14]अवप्°, B P P2, वप्°, D E
[15]° रत्ति, B.P.P2.

३० [16] इ०. अङ्गुत्तरनिकाय, II.1.3. [17]तपनिया, B M.P2
[18]° भिरुत्तानो, B°; भीरुणो, E.; °रुणो, D ; [illegible] [illegible], C
[19] °त्पद्दो, C; °त्पद्दो, E; °लुद्दो, B. M.; °लुद्दो, D. P. P2.

कल्याणं ति¹ तप्पति,² कतं मे पापं ति तप्पति²। इमे खो भिक्खवे द्वे धम्मा तपनीया³ ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

> कायदुच्चरितं⁴ कत्वा वचीदुच्चरितानि⁴ च⁵।
> मनोदुच्चरितं⁶ कत्वा यञ्चञ्ञं दोससञ्हितं⁶॥
> अकत्वा कुसलं कम्मं⁷ कत्वानाकुसलं बहुं।
> कायस्स भेदा दुप्पञ्ञो निरयं सो⁸ उपपज्जतीति⁸॥
> अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥३॥

(११—अतपनीय-सुत्तं २।१।४)

⁹वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"द्वेमे भिक्खवे धम्मा अतपनीया¹⁰। कतमे द्वे? इध भिक्खवे एकच्चो कतकल्याणो होति कतकुसलो कतभीरुत्ताणो, अकतपापो अकतलुद्दो¹¹ अकतकिब्बिसो। सो कतं मे कल्याणं ति पि न तप्पति¹²। अकतं मे पापं ति पि¹³ न तप्पति¹²। इमे खो भिक्खवे द्वे धम्मा अतपनीया¹⁴ ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

> कायदुच्चरितं हित्वा वचीदुच्चरितानि च¹⁵।
> मनोदुच्चरितं हित्वा यञ्चञ्ञं दोससञ्हितं¹⁶॥
> अकत्वा कुसलं¹⁷ कम्मं¹⁸ कत्वान कुसलं बहुं।
> कायस्स भेदा सप्पञ्ञो सग्गं सो उपपज्जतीति॥
> अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥४॥

---

¹तप्पते Aa. ²तप्पति Aa (द्रष्टव्यं धम्मपदे, गाथा १७); तपति सर्वत्र हस्तलेखेषु ³तपनिया, B.M.P.Pa. ⁴°दुच्चर°, B. ⁵वा, M. ⁶°संहितं, D.E. ⁷धम्मं, B.C.M. ⁸सोपपज्जतीति, M.

११ ⁹द्र० अङ्गुत्तर-निकाय, II.1.4. ¹⁰अतपनिया, B.M.Pa. ¹¹°रुद्दो, C.; °लद्दो, E.; °लुद्दो, B.P.; °लुद्दो, D.M.Pa. ¹²तप्पति—किन्तु तपति सर्वत्र हस्त० इ० मु० इ० A. न व्याख्यायते इदं सुत्तं ¹³ए तप्पते B.P.Pa. ¹⁴अतपनिया, B.M.Pa. ¹⁵वा, B.M. ¹⁶°संहितं, M.; यं चञ्ञं दोससंहितं, D.E. ¹⁷अकत्वा अकुसलं, B.D.E.P.Pa. ¹⁸धम्मं, C.

(३२—सील-सुत्तं २।१।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"द्वीहि भिक्खवे ! धम्मेहि समन्नागतो पुग्गलो यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि द्वीहि ? पापकेन च सीलेन पापिकाय च दिट्ठिया। इमेहि खो भिक्खवे ! द्वीहि धम्मेहि समन्नागतो पुग्गलो यथाभतं[1] निक्खित्तो एवं निरये"ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

पापकेन च सीलेन पापिकाय च दिट्ठिया।
एतेहि द्वीहि धम्मेहि यो समन्नागतो नरो।
कायस्स भेदा दुप्पञ्ञो निरयं सो[2] उपपज्जतीति[2]॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥५॥

(३३—सील-सुत्तं २।१।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"द्वीहि भिक्खवे ! धम्मेहि समन्नागतो पुग्गलो यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे[3]। कतमेहि द्वीहि ? भद्रकेन च सीलेन भद्रिकाय च दिट्ठिया। इमेहि खो भिक्खवे ! द्वीहि धम्मेहि समन्नागतो पुग्गलो यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे"ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

भद्रकेन च सीलेन भद्रिकाय च दिट्ठिया।
एतेहि द्वीहि धम्मेहि यो समन्नागतो नरो।
कायस्स भेदा सप्पञ्ञो सग्गं सो उपपज्जतीति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥६॥

(३४—अनोत्तप्पी-सुत्तं २।१।७)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"अनातापी[4] भिक्खवे ! भिक्खु अनोत्तप्पी[5] अभब्बो सम्बोधाय अभब्बो निब्बानाय अभब्बो अनुत्तरस्स

३२–[1] इ०. अङ्गुत्तर-निकाय, III,10;153. [2] इति त्यज्यते. C. सोपपञ्जतीति, M.

३३–[3] सग्गे ति, C.

३४–[4] °ई, M.; °इ, B.C.P.Pa; अनतप्पामिपि, D.E. [5] °ई, C.; °इ, B.D.E.P.Pa.; अनोत्तापि, M.

योगक्खेमस्स अधिगमाय । आतापी[1] च[2] भिक्खवे[1] भिक्खु ओत्तापी[3] भब्बो सम्बोधाय भब्बो निब्बानाय भब्बो अनुत्तरस्स योगक्खेमस्स अधिगमाया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

अनातापी[4] अनोत्तप्पी[5] कुसीतो हीनवीरियो[6] ।
यो थीनमिद्धबहुलो अहिरीको[7] अनादरो।
अभब्बो तादिसो भिक्खु फुट्ठुं[8] सम्बोधिमुत्तमं ॥
यो च सतिमा[9] निपको झायी[10] आतापी[11] ओत्तप्पी[12] च अप्पमत्तो।
संयोजनं जातिजराय छेत्वा इधेव सम्बोधिमनुत्तरं[13] फुसे'ति।
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥७॥

(३५—कुहना-सुत्तं २।१।८)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"नयिदं भिक्खवे[1] ब्रह्मचरियं वुस्सति[14] जनकुहनत्थं[15] जनलपनत्थं[16] लाभसक्कारसिलोकानिसंसत्थं[17] इति मं जनो जानातू'ति[18]। अथ खो इदं भिक्खवे[1] ब्रह्मचरियं वुस्सति संवरत्थं[19] पहानत्थञ्चा'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

[1] °हे, M; °व, अन्येषु हस्त० [2] खलु C.Pa. [3] °हे, C, °व, B.P.Pa; ओत्तापी, M, °व D.L. [4] °हे, M.; °व, अन्येषुहस्त० [5] °व, सर्वेषु हस्त० न स्थित अनोत्तापी M [6] °वीरियो, C.D.L M, °वीरियो, B.P.Pa. [7] अहिरीको, C.; अहीरिको, M, °अहिरिको, B D.E.P.Pa. [8] फुट्ठुं, M, फुट्ठं, अन्येषु हस्त०, इ० सुत्त० ७९,८०,११० [9] सतिमा, C. [10] झायी, M.Aa, झानलाभी, D L., °व, B C.P Pa [11] °हे, M., °व, अन्येषु हस्त० [12] ओत्तप्पी, M, ओत्तापि, अन्येषु हस्त० [13] सम्बोधि अनुत्त°, B.

३५ [14] वुस्सति, P.Pa., वसीति, C. [15] जनकु°, B C.
[16] जनलप्°, M.P. Pa. Aa, न जनलप्°, D. L ; जन लप्°, B लपन ; C.
[17] M. P. Pa. Aa पुस्तकेषु, अन्येषु हस्त० न लाभसक्क° ।
[18] सर्वेषु हस्त०, न तु M. Aa., —जानातु—मेति सं° ।
[19] °संवरत्थं°, D.E.; संवरणत्थेव, P., सवुनत्थेव, Pa

संवरत्थं पहानत्थं ब्रह्मचरियं अनीतिहं[1] ।
अदेसयी[2] सो भगवा निब्बानोगधगामिनं ॥
एस मग्गो महन्तेहि[3] अनुयातो महेसिना[4] ।
ये ये[5] तं पटिपज्जन्ति यथा बुद्धेन देसितं ।
दुक्खस्सन्तं करिस्सन्ति सत्थुसासनकारिनो'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥८॥

(३६—कुहना-सुत्तं २।१।९)

[6]वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"नयिदं भिक्खवे ब्रह्मचरियं वुस्सति[7] जनकुहनत्थं[8] जनलपनत्थं[9] लाभसक्कारसिलोकानिसंसत्थं[10] इति मं जनो जानातु'ति[11] । अथ खो इदं भिक्खवे ब्रह्मचरियं वुस्सति अभिञ्ञात्थ-ञ्चेव[12] परिञ्ञात्थञ्चा'ति[13] । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

अभिञ्ञात्थं परिञ्ञात्थं ब्रह्मचरियं अनीतिहं[14] ।
अदेसयी[15] सो भगवा निब्बानोगधगामिनं ॥
ऐस मग्गो महन्तेहि[16] अनुयातो महेसिना[17] ।
ये ये त पटिपज्जन्ति यथा बुद्धेन देसित ।
दुक्खस्सन्तं करिस्सन्ति सत्थुसासनकारिनोति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥९॥

---

[1] अनीतिहं, C. M ; अनीतिहं, B ; अनीतिहं, E , अनीतिमं, D.; अनिहितम् P.Pa ; द्र० Journ. P T.S. 1886. P. 111.
[2] अदेसयी, C. D E ; °इ. B M P. Pa.
[3] महत्तेहि, C D.E. Pa ; °त्थेहि, P ; महन्तेहीति (?) महा आनुमेहि, A.; महन्तेहि, B.M [4] °सिना, P Pa.; महेसिहि, D E. [5] पि, D E.
३६ [6] द्र० सुत्त ३५ [7] वुसति, P Pa. [8] नच कुह्°, B C. [9] जनलप्°, M.; न जनलप°, D.E.P ; न च लप°, B C. [10] लाभसक्क°, M ; न लाभ्°, D E.P.Pa ; न च लाभ्°, B.C. [11] इति मं°, M.; न इति म°, सर्वत्र अन्य हस्त० [12] °अत्तञ्चेव, C [13] °अत्तञ्जाति, C [14] अनिहित, P.Pa. [15] °ई, C.E.; °इ, अन्येषु हस्त० [16] °त्थेहि, P.; महन्तेभि, B.M. [17] महेसिहि, D E.

(१७—संवेजनिय-सुत्तं २।१।१०)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता’ति मे सुतं—“द्वीहि भिक्खवे[1] धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु दिट्ठे’व[1] धम्मे सुखसोमनस्सबहुलो विहरति, योनिसो[2] आरद्धो होति[3] आसवानं खयाय[3]। कतमेहि द्वीहि[4]? संवेजनीयेसु[5] ठानेसु संवेजनेन संवेगस्स[5] च योनिसो पधानेन[6]। इमेहि खो भिक्खवे[7] द्वीहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु दिट्ठे’व[8] धम्मे सुखसोमनस्सबहुलो विहरति, योनिसो[2] आरद्धो होति आसवानं खयाया”ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

संवेजनीयेसु[9] ठानेसु संविज्जेथेव[10] पण्डितो।
आतापी[11] निपको भिक्खु पञ्ञाय समवेक्खिय॥
एवं विहारी[12] आतापी[12] सन्तवुत्ति अनुद्धतो।
चेतोसमथ[13]मनुयुत्तो खयं दुक्खस्स पापुणे’ति[13]॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥१०॥

वग्गो पठमो[14]।

तस्सुद्दानं—
द्वे इन्द्रिय (१०,११) द्वे तपनीया (१०,११) सीलेन अपरे[15] द्वे (११,११)।
अनोत्तापी[16] (१०) कुहना द्वे[17] च ते[18] (११,११)

---

१७. [1] वेद’ B.D.E.P.Pa. [2] योनिसो, C.; योनिसा, M.; योनि-स्सता, B.; योनीवास, D.E. (योनिसु° द्वितीयवारं योनिसो चस्स’ P.Pa. [3] खयाया’ति B.C.Pa. [4] °द्वेसु’ R.C.M.Pa. [5] A. संवेगस्स-सर-क्खित्वा [6] पधानेन च, सर्वत्र द्वय न तु A2.M. [7] °द्वेसु, B.C.P.Pa.; संवेजनियट्ठानेसु, M. [8] वेद’ B.D.E.P.Pa. [9] संविज्जेथेव—भिक्खु संविज्जेथ, M.; सम्वेदियि A2. A. संवेजने—संविज्जेथ, संवेग करोन्त, संविग्गिया ? इति पाठान्तरं लिखित—संवेजेथेव, D.E.; संवज्जेथ च, P.Pa.; संवेजनेय’ C.; संवेजने च’ B.; संवेग्गुत्ते संविज्जति, सम्भवं Fausböll. [10] °ई’ M.; °इ, अन्येषु इत्यर्थः [11] समवेक्खियमम्, E.; °वेक्खियम्, D. [12] सातुवुत्ति, D.E. [13] संनिट्ठो, M.; B.C. P.; पुनवेवेति उदान: इत्यत्र च; D.E. Pa. वग्गो—इति वेदव्यं। [14] सानुवाने (?) वेदव M. [15] अपरे, D.E. [16] अनोत्तप्पि, B.P.; °ई, M. [17] वेच, C.D.E. [18] सेन C.P

२—दुतियवग्गो

(३८—वितक्क-सुत्तं २।२।१)

वुत्त हेत भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुत। तथागत भिक्खवे! अरहन्त[1] सम्मासम्बुद्ध द्वे वितक्का[2] बहुल[2] समुदाचरन्ति, खेमो च वितक्को पविवेको[3] च[3]। अब्यापज्झारामो[4] भिक्खवे! तथागतो अब्यापज्झरतो[5] तमेन भिक्खवे! तथागत अब्यापज्झाराम अब्यापज्झरत[6] एसे'व[7] वितक्को बहुलं समुदाचरति—'इमायाहं इरियाय न किञ्चि ब्याबाधेमि[8] तस[9] वा थावर वा' ति। पविवेकारामो[10] भिक्खवे! तथागतो पविवेकरतो[11]। तमेनं भिक्खवे! तथागतं पविवेकारामं पविवेकरत[12] एसेव[13] वितक्को बहुल समुदाचरति—'यं अकुसल त पहीनन्ति। तस्मात िह[14] भिक्खवे! तुम्हे' पि[15] अब्यापज्झारामा विहरथ अब्यापज्झरता[16]। तेमवो[17] भिक्खवे! तुम्हाक अब्यापज्झारामान[18] विहरत[19] अब्यापज्झरतान[20] एसेव वितक्को बहुल समुदाचरिस्सति[21]—'इमाय मय[22] इरियाय न किञ्चि ब्याबाधेम[23] तस[24] वा थावर

मा'ति । पविवेकारामा[1] भिक्खवे विहरथ[2] पविवेकरता[3] । तेसं वो[4] भिक्खवे तुम्हाकं पविवेकारामानं विहरतं[5] पविवेकरतानं एसेव[6] वितक्को बहुलं समुदाचरिस्सति[7]—'किं[8] अकुसलं किं[9] अप्पहीनं किं पजहामा'ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

तथागतं बुद्धमसय्हसाहिनं[10] दुवे वितक्का समुदाचरन्ति नं ।
खेमो वितक्को पठमो उदीरितो ततो[11] विवेको दुतियो पकासितो ॥
तमोनुदं पारगतं[12] महेसिं[13] तं[14] पत्तिपत्तं वसिमं[15] अनासवं ।
विसन्तरं[16] तण्हक्खये विमुत्तं तं वे मुनिं[17] अन्तिमदेहधारिं[18] ॥
मानं जहं[19] ब्रूमि[20] जराय पारगुं[21] ॥
सेले यथा पब्बतमुद्धनिट्ठितो[22] यथा पि पस्से जनतं समन्ततो ।
तथूपमं धम्ममयं[23] सुमेधो[24] पासादमारुय्ह[25] समन्तचक्खु[26] ।
सोकावतिण्णं[27] जनतं[28] अपेतसोको अवेक्खति[29] जातिजराभिभूतन्ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१॥

---

[1] °अरामा, C.E. [2] स्यक्न: B. [3] °आरता, P Pa. [4] स्तो, B. [5] स्यक्न C.M. [6] एवमेव, C. [7] °चरिस्सतीति, C.Pa; °चरतीति, B. [8] किं, स्यक्न: B.C.D E. [9] किं, स्यक्त: B C. [10] बुद्धस्सम्हं साहिनं, D E.; बुद्धसय्हसाहिनं, P C. पाठे प्रमाद [11] तथा, P.; स्यक्न B Pa. [12] पारग°, B. [13] महेसि, M ; महेसि, अन्येषु ह० Mss. [14] नं, D.E. [15] वसीमं, D.E. [16] विसन्त°, C.; वेसन्त°, B.M.Aa ; वेसन्त°, P.Pa. [17] मुनिं, M.; मुनि, D.Pa ; मूनि, B ; मुनी, C.; मुणी, E.; पुनि, P. [18] °धारिं, D.E. M.; B धारि, B.C.P.Pa. [19] मार°, P Pa.; मारञ्च (?) Aa.; मामहं, D.E. [20] ब्रूह, D.E. [21] पारगुं, C.M.; °गु, B.; °तं, D E.; पारङ्गुति, P.; पारङ्गतिं, Pa. एतदेव पादद्वयं सुत्ते ४६. [22] सेलो, C.D.E. [23] °ट्ठितो, B. P.Pa. [24] धम्मवरं, C. सुमेध, B M.D. [25] आरुय्ह, B. [26] °चक्खू, B E.M.; चक्खुं, C. [27] °तिण्णं, D.E. [28] जनतमपे°, D.E.M.P.Pa ; जनतं अपेतं सोको, C. तृतीया [29] अवेक्खति, D.E. गाथा (सेले यथा) दृश्यते ब्रह्मसंयुत्तं १.९.

२—दुतियवग्गो

(३८—वितक्क-सुत्तं २।२।१)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं। तथागतं भिक्खवे ! अरहन्तं[1] सम्मासम्बुद्धं द्वे वितक्का[2] बहुलं[2] समुदाचरन्ति, खेमो च वितक्को पविवेको[3] च[3]। अब्यापज्झारामो[4] भिक्खवे ! तथागतो अब्यापज्झरतो[5] तमेनं भिक्खवे ! तथागतं अब्यापज्झारामं अब्यापज्झरतं[6] एसेव[7] वितक्को बहुलं समुदाचरति—'इमायाहं इरियाय न किञ्चि ब्याबाधेमि[8] तसं[9] वा थावरं वा' ति। पविवेकारामो[10] भिक्खवे ! तथागतो पविवेकरतो[11]। तमेनं भिक्खवे ! तथागतं पविवेकारामं पविवेकरतं[12] एसेव[13] वितक्को बहुलं समुदाचरति—'यं अकुसलं तं पहीनन्ति। तस्मातिह[14] भिक्खवे ! तुम्हे' पि[15] अब्यापज्झारामा विहरथ अब्यापज्झरता[16]। तेसं वो[17] भिक्खवे ! तुम्हाकं अब्यापज्झारामानं[18] विहरतं[19] अब्यापज्झरतानं[20] एसेव वितक्को बहुलं समुदाचरिस्सति[21]—'इमाय मयं[22] इरियाय न किञ्चि ब्याबाधेम[23] तसं[24] वा थावरं

३८ [1] अरहतं, B.; अरहन्तं तं C. [2] वितक्कबहुला, C. [3] पविवेको च वितक्को D.E. [4] M. सर्वदा—अब्यापज्झ°; अन्येषु तु सर्वदा—अब्यापज्ज°। [5] °आरतो, B.C.P. [6] °आरतं, B.P; त्यक्त: C. [7] एसो P. (Pa. त्यक्त: तमेनं समुदाचरति). [8] ब्यापाधेमि, Pa.; ब्यापा. . . . .(अशुद्ध:) P.; ब्यापादेम, B. [9] तपं, B.C. [10] °अरामो, C.P [11] °आरते, P. पुस्तकस्य सर्वत्र, Pa. पुस्तकस्य घट्टे P. (प्रमादपाठा न दत्ता:) [12] °आरतं, B. [13] एसो, Pa. [14] तीहि, D.E.Pa. [15] पि, D.E.M.Pa.; हि, B.C. [16] °अराम°, [17] °आरता, B.P.Pa. [18] A.—तस्स वो ति निपातमत्तं; खो, B. C. [19] विहरन्ति, D.E. [20] °आरत°, B.P.Pa. [21] °चरतीति, B.Pa; °चरियेन्ति, P. [22] इमायाहं, D. E.; त्यक्त Pa. [23] ब्याबाधेमि, D.E.; ब्यापादेम, B C.P. (Pa. अशुद्ध.). [24] तपं, B.; तं, C.

था"ति । पविवेकारामा[1] भिक्खवे ! विहरथ[2] पविवेकरता[3] । तेसं वो[4] भिक्खवे ! तुम्हाकं पविवेकारामानं विहरतं[5] पविवेकरतानं एसेव[6] वितक्को बहुलं समुदाचरिस्सति[7]—'किं[8] अकुसलं किं[9] अप्पहीनं किं पजहामा'ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

तथागत बुद्धमसय्हसाहिनं[10] दुवे वितक्का समुदाचरन्ति नं ।
खेमो वितक्को पठमो उदीरितो ततो[11] विवेको दुतियो पकासितो ॥
तमोनुद पारगु[12] महेसि[13] त[14] पत्तिपत्तं वसिमं[15] अनासवं ।
विसन्तर[16] तण्हक्खये विमुत्त त वे मुनि[17] अन्तिमदेहधारि[18] ॥
मानं जहं[19] ब्रूमि[20] जराय पारगु[21] ॥
सेले यथा पब्बतमुद्धनि ट्ठितो[22] यथा पि पस्से जनतं समन्ततो ।
तथूपम धम्ममयं[23] सुमेधो[24] पासादमारुय्ह[25] समन्तचक्खु[26] ।
सोकावतिण्णं[27] जनतं[28] अपेतसोको अवेक्खति[29] जातिजराभिभूतन्ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१॥

---

[1] °अरामा, C.E. [2] त्यक्त. B. [3] °आरता, P.Pa. [4] खो, B. [5] त्यक्त C.M. [6] एवमेव, C. [7] °चरिस्सतीति, C.Pa; °चरतीति, B. [8] किं, त्यक्त: B.C.D.E. [9] किं, त्यक्त· B.C. [10] बुद्धस्सरहं साहिनं, D.E.; बुद्धसय्हसाहिनं, P.C. पाठे प्रमाद [11] तथा, P.; त्यक्त: B.Pa. [12] पारगु°, B. [13] महेसिं, M.; महेसि, अन्येषु हु० Mss. [14] नं, D.E. [15] वसीमं, D.E. [16] विसन्त°, C.; वेस्सन्त°, B.M.Aa.; वेसन्त°, P.Pa. [17] मुनिं, M; मुनि, D.Pa; मूनि, B; मुनी, C.; मुणी, E.; पुनि, P. [18] °धारिं, D.E.M; B. धारि, B.C.P.Pa. [19] मार°, P.Pa; मारज्ज (?) Aa.; माजहं, D.E. [20] ब्रूह, D.E. [21] पारगुं, C.M.; °गु, B.; °गं, D.E.; पारज्जुति, P.; पारङ्गति, Pa. एतदेव पाठद्वयं सुत्ते ४६. [22] सेलो, C.D.E. [23] °ट्ठितो, B. P.Pa. [24] धम्ममयं, C. सुमेध, B.M.D. [25] आरुय्ह, B [26] °चक्खू, B.E.M; चक्खुं, C. [27] °तिण्णं, D.E. [28] जनतमपे°, D.E.M P.Pa; जनतं अपेतं सोकं, C. तृतीया [29] अपेक्खति, D.E. गाथा (सेले यथा) दृश्यते ब्रह्मसुत्तं १.९.

(३९—देसना-सुत्तं २।२।२)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"तथागतस्स भिक्खवे ! अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स द्वे धम्मदेसना परियायेन भवन्ति । कतमा द्वे ? पापं पापकतो[1] पस्सथा-ति[2] अय पठमा धम्मदेसना । पापं पापकतो दिस्वा तत्थ निब्बिन्दथ विरज्जथ[3] विमुच्चथा'ति अयं दुतिया धम्मदेसना । तथागतस्स भिक्खवे ! अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स इमा द्वे धम्मदेसना परियायेन भवन्तीति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

तथागतस्स बुद्धस्स सब्बभूतानुकम्पिनो ।
परियाय[4] वचनं पस्स[5] द्वे च धम्मा पकासिता ॥
पापकं पस्सथ चेतं[6] तत्थ चापि विरज्जथ
ततो विरत्तचित्तासे[7] दुक्खस्सन्तं करिस्सथा[8]'-ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥२॥

(४०—विज्जा-सुत्तं २।२।३)

वुत्त हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"अविज्जा भिक्खवे ! पुब्बङ्गमा[9] अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया, अन्वदेव[10] अहिरीकं अनोत्तप्पं । विज्जा च खो भिक्खवे ! पुब्बङ्गमा कुसलानं धम्मानं समापत्तिया, अन्वदेव हिरोत्तप्पन्ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

या काचिमा दुग्गतियो अस्मिं लोके परम्हि च ।
अविज्जामूलका सब्बा इच्छालोभसमुस्सया [11] ॥
यतो च होति पापिच्छो अहिरीको[12] अनादरो ।

३९. [1] पापतो, D.E. [2] सम्पस्स° B. [3] त्यजत: D.E. [4] परियायेन, P.P3. [5] पस्स' C.P.Pa.M.A.; चस्स, D.E.; मस्स, B. [6] चेतं, M.; चेका, P. Pa.; छेका, D.E.; चेतं, B.C. [7] विरत्तचित्ताय' D.E.; तथेवरत्तचित्तासे, Pa; तत्थेवरत्तं°, P. [8] करिस्सथाति, B. प्रथम गाथा या पूर्वार्द्ध देवनामंयुत्तेऽपि

४० [9] °गमान' D.E. [10] द्र० E. Muller The Pali Gramm, p,63. [11] इच्छालोकसमुस्सयं, D.E. [12] अहिरीको, C; अहीरिको, M.; अहिरिको, B.D.E.Pa.

ततो पापं पसवति अपायं तेन[1] गच्छति ॥
तस्मा छन्दञ्च[2] लोभञ्च[3] अकुसलञ्च[4] विराजयं[5] ।
विज्जं उप्पादयं[6] भिक्खु सब्बा दुग्गतियो जहे ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता ति मे सुतन्ति ॥३॥

[illegible] ॥४॥

(४१—पञ्ञा-सुत्तं २।२।४)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं "ते भिक्खवे सत्ता सुपरिहीना ये अरियाय पञ्ञाय परिहीना, ते दिट्ठे व[7] धम्मे दुक्खं विहरन्ति[8], सविघातं सउपायासं सपरिळाहं, कायस्स भेदा परम्मरणा दुग्गति[9] पाटिकङ्खा। ते भिक्खवे सत्ता अपरिहीना[10] ये अरियाय पञ्ञाय, अपरिहीना, ते दिट्ठे व[7] धम्मे सुखं विहरन्ति, अविघातं अनुपायासं अपरिळाहं, कायस्स[11] भेदा परम्मरणा सुगति[12] पाटिकङ्खा ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति —

पञ्ञाय परिहानेन[13] पस्स लोकं सदेवकं ।
निविट्ठं नामरूपस्मिं इदं सच्चन्ति[14] मञ्ञति ॥
पञ्ञा हि सेट्ठा[15] लोकस्मिं यायं निब्बेधगामिनी[16] ।
या च सम्मा[17] पजानाति जातिभवपरिक्खयं ॥
तेसं देवा[18] मनुस्सा च[19] सम्बुद्धानं सतीमतं[20] ।

[1] अपायन्तेन, B.C.M. [2] छन्दा, C.; इच्छञ्च, D.E.A2. [3] लोभञ्च, D.E. [4] अविज्जाय, C.P.Pa. [5] विराजियं, D C. [6] उप्पादयं, M ; उप्पादियं C.

४१. [7] दिट्ठेव M.; इ० सुत्त० २९ इति. [8] B च—योज्यते. [9] °ति B ; सुगति, D E. [10] परिहिना, B. [11] कायस्स............वुच्चति—त्यक्त D.E. [12] सुगति, B [13] परिहीनेन, C.; °हिनेन, P.Pa [14] सच्चन्ति, C. [15] सेट्ठ, C.; सेट्ठं, B. [16] °ई D.E M.; °इ B.C.P.Pa. [17] M.A. पुस्तकयो.; M पुस्तकेऽस्ति—याय सम्मा; A. पुस्तके—या च, सम्मा अविपरीतं जानाति; C. या च यस्मा; अन्येषु हस्त० सा च यस्मा। [18] देव, D E. Pa [19] वा, B; चि, P.; मनुस्सानञ्च, Pa. [20] सति°, B.P.Pa

पिहयन्ति हासपञ्ञानं¹ सरीरन्तिमधारिनं² ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥४॥

(४२ —धम्म-सुत्तं २।२।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"द्वे मे भिक्खवे ! सुक्का धम्मा लोकं पालेन्ति। कतमे द्वे³ ? हिरि च ओत्तप्पञ्च। इमे चे⁴ भिक्खवे ! द्वे⁵ सुक्का धम्मा लोकं न पालेय्युं, नयिध⁶ पञ्ञायेथ माता'ति वा मातुच्छा'ति वा मातुलानी'ति वा आचरियभरिया'ति वा गरूनं⁷ दारा'ति वा⁸, सम्भेदं लोको अगमिस्स⁹ यथा अजेळका¹⁰ कुक्कुटसूकरा सोणसिगाला¹¹। यस्मा च¹² खो भिक्खवे ! इमे द्वे सुक्का धम्मा लोकं पालेन्ति, तस्मा पञ्ञायति¹³ माता'ति वा मातुच्छा'ति वा मातुलानी'ति वा आचरियभरिया'ति वा गरूनं⁷ दारा'ति वा'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

येसं ¹⁴ हिरिओत्तप्पं सब्बदा च न विज्जति ।
वोक्कन्ता ¹⁵ सुक्कमूला ते जातिमरणगामिनो ॥
येसञ्च ¹⁶ हिरिओत्तप्पं सदा सम्मा¹⁷ उपट्ठिता ।
विरूळ्हब्रह्मचरिया ते सन्तो खीणपुनब्भवा'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥५॥

---

¹पिहयन्ति सुपञ्ञानं, D.E.; अन्येषु हस्त० A. पुस्तके च—पिहन्ति हास-पञ्ञानं; A.व्याख्यायते—....निब्बानमच्छिकिरियाहावेदतुट्ठिपामोज्ज बहुलताय हासपञ्ञानं; पिहन्तिहा—पुराण प्रमादपाठः, पिहयन्ति—स्थाने। ²सरियन्तिमसरिरन्ति, B., A. अन्तिमसरीरधारिन।

42. ³C. योज्यते धम्मे। ⁴चे B.Pa.; से. P. द्वे.; C.M.; त्यज्यते D.E ⁵त्यक्त M. ⁶न इध D.E. ⁷गुरुनं, P.Pa. ⁸वा ति, C. ⁹अगमिस्स, D.E.M; आगमिस्सति, B.C.P.Pa. इ ¹⁰यथाजेळका B.; यथा अजेलका, C.D.E. ¹¹सोन, C. सु, D.E.P.Pa. सोणा वा, B; सिगाल, E.Pa. ¹²त्यक्तः C. ¹³सञ्ञा°, C. पञ्ञायेथ, D-B ¹⁴वे C. ¹⁵वोक्कन्तं P. वोक्कमन्ति,. Pa ¹⁶°चे M. ¹⁷धम्मा, C.P.Pa.

(४३—अजात-सुत्तं २।२।६)

[1]वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"अत्थि भिक्खवे ! अजातं अभूतं अकतं असङ्खतं। नो चे तं भिक्खवे ! अभविस्स[2] अजातं अभूतं अकतं असङ्खतं नयिध जातस्स[3] भूतस्स कतस्स सङ्खतस्स निस्सरणं पञ्ञायेथा'ति[4]। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

जातं भूतं समुप्पन्नं कतं सङ्खतमद्धुवं[5]।
जरामरणसङ्घातं रोगनीळं[6] पभङ्गुरं।
आहारनेत्तिप्पभवं[7] नालं तदभिनन्दितुं ॥
तस्स निस्सरणं सन्तं अतक्कावचरं[8] धुवं[9]।
अजातं असमुप्पन्नं असोकं विरजं पदं[10]
निरोधो दुक्खधम्मानं सङ्खारूपसमो सुखो'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥७॥

(४४—धातु-सुत्तं २।२।७)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—द्वेमा भिक्खवे ! निब्बानधातुयो। कतमा द्वे ? सउपादिसेसा च[11] निब्बानधातु अनुपादिसेसा च[12] निब्बानधातु। कतमा[13] भिक्खवे ! सउपादिसेसा निब्बानधातु ? इध भिक्खवे ! भिक्खु अरहं होति खीणासवो वुसितवा कतकरणीयो ओहितभारो अनुप्पत्तसदत्थो[14]

४३. [1] इति A. च D.E.P. Pa. (वत्त°, D.E.), B.C.M. तेसं खीणा पुनब्भवाति। [2] अभविस्सा, B. [3] नयिधम्मजातस्स, D.E. [4] पञ्ञायतीति, M [5] अध्धुवं, C.; अधुवं, B.; [6] °नीलं, M.; °निद्दं, C.; °निड्ढं, P. Pa च A.; °निद्दं, B; रोगनिड्ढं, D.E. (पुर्वतरा शब्दा अशुद्धा D.E.); A अक्षिरोगादीनं अनेकेसं रोगादीनं पुलवकम्मि (?), रोगनिड्ढ (?); क० धम्म० गाथ वा १४८ Chld. Dict S.V. निड्ढं। [7] आहारनेत्ति°, C., आहारनेत्ति°, B; आहारनेत्तिपभवं, D.E. [8] अतक्करजं, C. [9] धुवं, D.E. [10] पदं, C.

४४. [11] स्यस्सते D.E.Pa. [12] स्यस्सते D.E. [13] B.M. मोस्सते—स्व. [14] °सदत्थो B.

परिक्खीणभवसंयोजनो[1] सम्मदञ्ञाविमुत्तो। तस्स
अविगतत्ता[2] मनापामनापं पच्चनुभोति, सुखदुक्ख
रागक्खयो दोसक्खयो मोहक्खयो, अयं वुच्चति भिक्ख
धातु। कतमा च भिक्खवे। अनुपादिसेसा निब्बानध
अरहं होति खीणासवो वुसितवा कतकरणीयो ओहि
परिक्खीणभवसंयोजनो सम्मदञ्ञाविमुत्तो। तस्स इ
यितानि[6] अनभिनन्दितानि सीतीभविस्सन्ति,[7] अय
अनुपादिसेसा निब्बानधातु। इमा खो भिक्खवे। द्वे निब्ब
एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—
दुवे इमा[8] चक्खुमता पकासिता निब्बानधातू [9]अनिस्सि
एका हि धातु[10]इध दिट्ठधम्मिका सउपादिसेसा भवनेत्ति
अनुपादिसेसा पन सम्परायिका[11] यम्हि निरुज्झन्ति भवा
ये एतदञ्ञाय पदं असङ्खतं विमुत्तचित्ता[12] भवनेत्तिसङ्ख
ते[14] धम्मसाराधिगमा[15] खये रता[16] पहंसु[17] ते सब्बभवानि
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥७॥

(४५—पटिसल्लान-सुत्तं २।२।८)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"पटिसल्लानारामा भिक्ख
विहरथ पटिसल्लानरता[1] अज्झत्तं चेतोसमथमनुयुत्ता[2] अनिराकतज्झा

[1]संञ्ञ°, B.C.M. [2]°ग्या C.P. अविगत° P Pa [3]°इयानि ...
D.E; वेदेति M.Aa. [4]यो. C M P (Pa रोयाणकक्खयो) ...
A., खो B.; [5]ग्यकत. D E. [6]वेदयितानि (नत्थि—सब्ब), B.
[7]सारि°, D.E. [8]दुवे इमा, M.; द्वे इमा, B C P Pa ; इमा, D E.
[9]°ञ्ञ, M ; °उ अञ्ञेसु हत्थ°. [10]°ञ, M. [11]°ई पि कम्हि D E.
[12]कधानि, C. [13]विमुत्त° M A ; विमुत्ति°, अञ्ञेसु हत्थ°. [14]एते, C.
[15]शुद्धः पाठः केवलं M.A.; धम्म, B C. Pa; [16]°साराधिगमक्खये, Pa ;
°साराधिगमक्ख°, P ; °साराधितमक्ख°, D E. °साराधिक...
B ; सारधिकम्मक्खयेरया, C. [17]पजहिंसु, P D...
४५. [1]°रतानं, C. [2]चेत°...
अनिराकतमनुयुत्ता, C.

विपस्सनाय समन्नागता ब्रूहेता¹ सुञ्ञागारानं² । पटिसल्लानाराम
भिक्खवे ! विहरथ³ पटिसल्लानरतानं अज्झत्तं चेतोसमथमनुयुत्तानं अनिरा
कतज्झानानं⁴ विपस्सनाय समन्नागतानं ब्रूहेतानं⁵ सुञ्ञागारानं द्विन्नं फलानं
अञ्ञतरं फलं पाटिकङ्खं दिट्ठेव⁶ धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे⁷
अनागामिता' ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

ये सन्तचित्ता निपका सतिमन्तो च झायिनो ।
सम्मा धम्मं विपस्सन्ति कामेसु अनपेक्खिनो⁸ ॥
अप्पमादरता सन्ता पमादे भयदस्सिनो ।
अभब्बा परिहानाय निब्बानस्सेव सन्तिके ति ॥⁹
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥८॥

(४६— सिक्खा-सुत्त २।२।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं —' सिक्खानिसंसा भिक्खवे ! विहरथ, पञ्ञुत्तरा विमुत्तिसारा¹⁰ सताधिपतेय्या । सिक्खानिसंसानं भिक्खवे ! विहरतं पञ्ञुत्तरानं विमुत्तिसारानं¹¹ सताधिपतेय्यानं द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकङ्खं दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे¹² अनागामिता ति । एतमत्थं भगवा अवोच तत्थेतं इति वुच्चति—

परिपुण्णसेखं अपहानधम्मं¹³ पञ्ञुत्तरं खयन्तदस्सिं¹⁴ ।
तं¹⁵ वे मुनिं¹⁶ अन्तिमदेहधारिं¹⁶ मानं जहं¹⁷ ब्रूमि जराय पारगुं ॥¹⁸

¹ब्रूहेता, C. M. P. P₂ (ब्रूहेतारो—अनेकत्र A), ब्रूहेतानं, B.; ब्रूहितु' D L. ²सुञ्ञागारानं, C. ³विहरथ, B. C. ⁴अनिराकत°, B., निराकत°, P. P₂. ⁵'ब्रूहेता' P. P₂. ⁶चेव, B. ⁷°सेसा' D L. ⁸अनुप°, B., अनपेक्खनो, D L. ⁹द्वितीया गाथा, स्वल्प भेदेन धम्मपदे Dhp. गाथा, ३२.

४६. ¹⁰विमुत्तिहरा, B., °सार, C. ¹¹°हरानं, B., C. विमु° सताधिप°—इच्चत्र-सर्वं ¹²°सेसा, B. ¹³अपहान°, M. P., अप्पहान, A.; असहान°, D L., पहान°, B. C. A पुस्तके—पहानधम्मो कुप्पधम्मो.... अकुप्पधम्मो अप्पहानधम्मो, इत्येतेष्वन्तु—अपहान° इत्यत्र—आसितव° तस्यामेवगाथायाम् ¹⁴°दस्से, M.; °इ, अन्येषु हस्त० दस्सिनं । ¹⁵वे, B., दस्सिनं त वे C. ¹⁶°धारि°, M., °इ अन्येषु हस्त० ¹⁷°जहं, D L.; मानजहं, P. P₂ ¹⁸°गुं, D L. उत्तराद्धं कुरुन्ते पुन० ३८

तस्मा हवे जागरियं भजेथ आतापी। भिक्खु निपको झानलाभी[२]।
संयोजनं जातिजराय छेत्वा इधेव सम्बोधि[३] मनुत्तरं फुसे'ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१०॥

(४८—अपायिक-सुत्त[४] २।२।११)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"द्वे मे भिक्खवे। अपायिका[४] नेरयिका इदमप्पहाय[५]। कतमे द्वे ? यो अब्रह्मचारी[६] ब्रह्मचारी'पटिञ्ञो, यो च परिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं चरन्तं अमूलकेन अब्रह्मचरियेन अनुद्धंसेति। इमे खो भिक्खवे। द्वे[८] अपायिका[४] नेरयिका इदमप्पहाया'[७]ति। एतमत्थं भगवा अवोच तत्थेत इति वुच्चति—

अभूतवादी निरयं उपेति यो वापि[९] कत्वान करोमि चाह[१०]।
उभो' पि ते पेच्च[११] समा भवन्ति निहीनकम्मा मनुजा परत्थ॥
कासावकण्ठा बहवो पापधम्मा असञ्ञता।
पापा पापेहि कम्मेहि निरयन्ते उपपज्जरे॥
सेय्यो अयोगुळो[१२] भुत्तो तत्तो[१३] अग्गिसिखूपमो।
यञ्चे[१४] भुञ्जेय्य दुस्सीलो रट्ठपिण्डं असञ्ञतो 'ति'॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति।

---

[१] °इ सर्वत्र ह० [२] °ई, D.M.; °इ, अन्येषु ह० [३] °बोधि, B

४८. [४] आपायिका, M. [५] इदप्प°, D.E., इधमप्प°, B. [६] °इ, P.Pa; स्वचक: B.C. स्वचक: D.E. [७] °ई, M; °इ, B.C.P.Pa; [८] द्वेमे C.—इमा ति खो गाथा धम्मपदेऽपि ३०६-८ [९] चापि, P.Pa. [१०] न करोमि चाह, M., न करोमीति चाहं, P.Pa; °चाह, D.E. करोमि (नास्ति—न) तीह, C.; न करोमिहि चाह, B; A. यो वा पन पापकम्मं कत्वा नाहं एवं करोमीति आह, ह० (Tausboll), धम्मपदं P.394. [११] पच्च, B.C.D.Pa. [१२] °गुळो, D.E., अयोगुड्हो, B. [१३] तत्थो, C. [१४] यञ्च, C. अस्या गाथा ९१ सुत्तेऽपि

तस्मा सदा[1] झानरता समाहिता आतापिनो जातिखयन्तदस्सिनो।
मारं ससेनं अभिभुय्य[2] भिक्खवो[3] भवथ[4] जातिमरणस्स पारगा ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥९॥

(४७—जागरियसुत्तं २।२।१०)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"जागरो चस्स[5] भिक्खवे! भिक्खु विहरेय्य सतो[6] सम्पजानो समाहितो पमुदितो[7] विप्पसन्नो[8] तत्थ कालविपस्सी[9] च कुसलेसु धम्मेसु। जागरस्स भिक्खवे! भिक्खुनो विहरतो सतस्स सम्पजानस्स समाहितस्स पमुदितस्स[10] विप्पसन्नस्स[11] तत्थ कालविपस्सिनो कुसलेसु धम्मेसु द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकङ्खं—दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे[12] अनागामिता ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

जागरन्ता सुणाथेतं[13] ये सुत्ता ते पबुज्झथ[14]।
सुत्ता[15] जागरितं सेय्यो[16] नत्थि जागरतो भयं॥
यो जागरो च सतिमा सम्पजानो समाहितो मुदितो[17] विप्पसन्नो[18] च[19]।
कालेन सो सम्मा धम्मं परिवीमंसमानो[20] एकोदिभूतो[21] विहने तमं सो॥

[1] तस्मा रतास°, D.E. सदाझ°, B. [2] °भुय्य, B.P. [3] °वे, D.E.P2. [4] भवथ, B.D.E. A.; भवथ, P.P2.; भवेथ, C; भवथ, M.; भवेथ—छन्दोऽनुरूपः पाठः

४७. [5] चस्स B.M.P. A. (च सद्दो सम्पिण्डनत्थो.....अस्साति सिया भवेय्य), च सतस्स, C.P2.; चस्स, D.E. A. पुस्तके पाठान्तर—जागरो च भिक्खु विहरेय्याति—इति तु, आरम्भ.... विहरतो—इत्यस्यानुरूप पाठः; विप्पसन्नो इत्यतः पर A. ......अस्सातिसम्बन्धो विहरेय्याति वा। [6] सते, C [7] पमुदितो, B.; पमुदितो पामोज्जबहुलो, A. [8] विप्पसन्नो, C.; विप्पसन्ने, D.E. [9] कालविपस्सि, B.P2. [10] पमुदितस्स, C.; मुदितस्स, B [11] विप्पसन्नस्स, C.; विप्पसन्नस्स, D.E. [12] सेसा, B. [13] सुणन्तेतं, B.; जागरन्ते सुणातेतं, C. [14] ते पबु°, M.P.P2. A2; ते च बु°; D.E.; ते सम्बु°, B.C. (C. स्खलनः—ते). [15] सुत B.C. [16] जागरस्सेयो, D.E. जागरियं, P.P2. [17] मुदित, P.; स्खलनः P2. [18] विप्पसन्न,° P2.; अविप्पसन्न°, P.; विप्पन्न, C.; विप्पन्नो, D.E. [19] च स्खलन D.E. [20] परिवीमंसमान°, C. [21] एकोदि°, B.C.; एकोदि°, D.E.—द्विपदगाथायाः छन्दोभङ्गः; उपरि पाठस्तु M.; B. पुस्तके—यो जागरो..... धम्मं—इत्यर्धद्वयस्य समासः कृतः, अन्येषु पुस्तकेषु विरामविरहितम्

तस्मा हवे जागरियं भजेथ आतापी[1] भिक्खु निपको झानलाभी[2] ।
संयोजनं जातिजराय छेत्वा इधेव सम्बोधि[3] मनुत्तरं फुसे'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१०॥

(४८—अपायिक-सुत्तं २।२।११)

वुत्त हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"द्वे'मे भिक्खवे ! अपायिका[4] नेरयिका इदमप्पहाय[5] । कतमे द्वे ? यो अब्रह्मचारी[6] ब्रह्मचारी[7]पटिञ्ञो, यो च परिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं चरन्तं अमूलकेन अब्रह्मचरियेन अनुद्धंसेति । इमे खो भिक्खवे ! द्वे[8] अपायिका[4] नेरयिका इदमप्पहाया'[5]ति । एतमत्थं भगवा अवोच तत्थेतं इति वुच्चति—

अभूतवादी निरयं उपेति यो वापि[9] कत्वान करोमि चाह[10] ।
उभो' पि ते पेच्च[11] समा भवन्ति निहीनकम्मा मनुजा परत्थ ॥
कासावकण्ठा बहवो पापधम्मा असञ्ञता ।
पापा पापेहि कम्मेहि निरयन्ते उपपज्जरे ॥
सेय्यो अयोगुळो[12] भुत्तो तत्तो[13] अग्गिसिखूपमो ।
यञ्चे[14] भुञ्जेय्य दुस्सीलो रट्ठपिण्डं असञ्ञतो 'ति' ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ।

---

[1] °इ सर्वत्र इ० [2] °ई, D.M.; °इ, अन्येषु इ० [3] °बोधि, B

४८. [4] आपायिका, M. [5] इदप्प°, D.E.; इधमप्प°, B. [6] °इ, P.P2 ; स्थाने B.C. [7] °ई, M.; °इ, B.C.P.P3; स्थाने: D.E. [8] स्थाने C.—इमा ति स्रो गाथा धम्मपदेऽपि ३०६-८ [9] वापि, P.P2. [10] न करोमि चाह, M ; न करोमीति चाहं, P.P2; °चाह, D.E. करोमि (नास्ति—न) चाह, C.; न करोमिहि चाह, B.; A. यो वा पन पापकम्मं कत्वा नाहं एतं करोमीति आह; इ० (Fausboll), धम्मपदं p.394. [11] पच्च, B.C.D.P2. [12] °गुळो, D.E.; अय्योगुळ्हो, B. [13] अत्थो, C. [14] यञ्च, C. अनया गाथा २१ सुत्तेऽपि

यै[10] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] ।

[illegible][11] [illegible] न [illegible] ॥

२९. [1] [illegible], [illegible] [2] [illegible] D [illegible] [3] [illegible] C F
[4] भवन्ति, B D E M [5] [illegible], B [illegible], M.
[7] °[illegible], C A2 [8] [illegible], D [illegible], [illegible] [9] [illegible]
[9] °मुञ्चति, B P P2 [10] [illegible] E P. [illegible]—[illegible]
भिक्षवे [illegible] (सुत्त० [illegible])—[illegible] न [illegible] [illegible]
भवन्ति, B. [12] —[illegible] [illegible] [illegible] P [illegible] S [illegible]
p.104; [illegible] नि (?) [illegible], [illegible]
[13] A [illegible]—[illegible] —[illegible]। [14] [illegible], B [illegible]
P.; [illegible], D L. [15] [illegible], M, [illegible], D E
[16] पनो°, C A2. [17] एत [illegible], D, [illegible], E M, यथा एत
च धारन्ति P; यथा च एत धारन्ति, C, [illegible] धारन्ति, B [18] [illegible]
C.D.E.P. [19] C.M P [illegible] च B [illegible] [illegible]. [20] [illegible], M
[21] यथाभूतं, D.E.

स वे[1] भूतपरिञ्ञातो सो[2] वीततण्हो[3] भवाभवे ।
भूतस्स विभवा भिक्खु नागच्छति[4] पुनब्भवन्ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१२॥[5]

दुकनिपातं निट्ठितं ।

तस्सुद्दानं—

संवेजनीयेन (३७) ते दस[6] ॥

वितक्का[6] (३८) देसना (३९) विज्जा[7] (४०) पञ्ञा (४१) धम्मेन (४२) पञ्चमं ।



[1] लवे, M.; भवे, D.E.; A लबेति लिपालमत्तं। [2] सो, A2; [3] परिञ्ञातो सो, B.; परियोतो, D E. [3] वितातण्हो, D.E. [4] नागच्छन्ति, C. [5] अन्तं वाक्यं केवलं M. [6] वितक्क, D.E. [7] विसज्जा, B.

कायेन अमतं धातुं फस्सयित्वा[1] निरुपधिं[2]।
उपधिप्पटिनिस्सग्गं[3] सच्छिकत्वा[4] अनासवो।
देसेति सम्मासम्बुद्धो असोकं विरजं पदन्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥२॥

(५२—वेदना-सुत्तं ३।१।३)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"तिस्सो इमा भिक्खवे ! वेदना। कतमा[5] तिस्सो ? सुखा[6] वेदना दुक्खा[7] वेदना अदुक्खमसुखा[8] वेदना। इमा खो भिक्खवे ! तिस्सो वेदना ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

समाहितो सम्पजानो सतो बुद्धस्स सावको।
वेदना च पजानाति वेदनानञ्च सम्भवं॥
यत्थ[9] चेता[10] निरुज्झन्ति मग्गञ्च खयगामिनं।
वेदनानं खया भिक्खु निच्छातो[11] परिनिब्बुतो ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥३॥

(५३—वेदना-सुत्तं ३।१।४)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"तिस्सो इमा भिक्खवे ! वेदना। कतमा[12] तिस्सो ? सुखा[13] वेदना दुक्खा[13] वेदना अदुक्खमसुखा वेदना।[14]

[1] फस्सयित्वा, P.; फुस्स°, B. A2 पुस्तकयोः; फुस्सयित्वा, M.; परस°, C.D.E. [2] निरूपधिं, D.E.M.; °धि, B.C.P.P1. [3] उपधिप्प°, M.; न पकारद्वित्वं अन्येषु ह० D.E. एवञ्च उपधि। [4] °कत्वान, B.; अक्केत्वा, P1. इत्यत्र एता गाथा ७३ सुत्तेऽपि [5] कतमे, C. [6] सुख, B.D.E.P.P2 [7] दुक्ख, B.D.E.P.; [8] °ख, P1. [9] यत्त, B.P2 [10] °चिता, C. [11] निच्छातो, C.; निच्छातो (निच्छातो. A) ह० छातो "hungry" in Child. Dict. एता गाथा इत्थक्खा, ५४,५५ सुत्तयो

५३. [12] कतमे, C. [13] दुक्खा .....सु खा, C. [14] वेदनाति, M.

सुखा भिक्खवे[1] वेदना दुक्खतो दट्ठब्बा, दुक्खा वेदना सल्लतो दट्ठब्बा, अदुक्खमसुखा वेदना अनिच्चतो दट्ठब्बा। यतो खो[2] भिक्खवे! भिक्खुनो सुखा[3] वेदना दुक्खतो दिट्ठा होति; दुक्खा[4] वेदना सल्लतो दिट्ठा होति, अदुक्खमसुखा वेदना अनिच्चतो दिट्ठा होति, अयं[5] वुच्चति भिक्खवे! भिक्खु अरियो सम्मद्दसो[6], अच्छेज्जि[7] तण्हं[8] विवत्तयि[9] संयोजनं, सम्मा मानाभिसमया[10] अन्तमकासि दुक्खस्सा ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

यो सुखं दुक्खतो दक्खि[11] दुक्खमद्दक्खि[12] सल्लतो।
अदुक्खमसुखं सन्तं[13] अद्दक्खि नं[14] अनिच्चतो॥
स वे[15] सम्मद्दसो[16] भिक्खु यतो तत्थ विमुच्चति।
अभिञ्ञावोसितो[17] सन्तो स वे[18] योगातिगो[19] मुनी ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥४॥

(५४ — एसना-सुत्तं ३।१।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"तिस्सो इमा भिक्खवे! एसना। कतमा तिस्सो? कामेसना भवेसना ब्रह्मचरियेसना, । इमा खो भिक्खवे! तिस्सो एसना ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

[1] सुखा, C [2] यतो च खो, D I [3] सुख, B [4] दुक्ख, P4.
[5] अयम्, C [6] सम्मद्दसो—सम्मद्दसो सम्मदसो, C.M P P4; सम्मद्द°, D I
[7] अच्छेज्ज, C; अच्छेज्जि, D I; अच्छेत्ति, B. [8] तण्हा, C
[9] विवत्तयि, P; विवत्तयि, P4 [10] सम्मदसो सम्मामा°, D I.
[11] दक्खि, P; अद्दक्खि, P4; अद्द, D I [12] अद्दक्खि, P
[13] सन्तम्, P4 [14] अद्दक्खि, M; अद्दक्खि, D I; अद्दक्खि,
[15] वे, D M; वे, B C I P P4 [16] सम्मदसो, C; [17] °वोसितो,
[18] वे ना सन्तो, B; °वोसितो, P P4 [19] सवे, B C; सच, P,
P4; योगातिगो, B M P; °आतिगो, P4; आतिगो, B,
D; °ञ्ञासा, I; योगातिगो, C; सन्तो सन्तो अभिञ्ञा-
[illegible] सम्मदसो मुनि, P4 [illegible]
[illegible], D I

समाहितो सम्पजानो सतो बुद्धस्स सावको।
एसना च पजानाति एसनानञ्च सम्भवं॥
यत्थ[1] चेता निरुज्झन्ति मग्गञ्च खयगामिनं।
एसनानं खया भिक्खु निच्छातो[2] परिनिब्बुतो ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥५॥

(५५—एसना-सुत्तं ३।१।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"तिस्सो इमा भिक्खवे 'एसना। कतमा तिस्सो? कामेसना भवेसना ब्रह्मचरियेसना[3]। इमा खो भिक्खवे 'तिस्सो एसना' ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

कामेसना भवेसना ब्रह्मचरियेसना सह।
इति सच्चपरामासो[4] दिट्ठिट्ठाना[5] समुस्सया[6]॥
सब्बरागविरत्तस्स[7] तण्हक्खयविमुत्तिनो[8]।
एसना पटिनिस्सट्ठा[9] दिट्ठिट्ठाना[10] समूहता[11]।
एसनानं खया भिक्खु निरासो[12] अकथंकथी[13] ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥६॥

(५६—आसव-सुत्तं ३।१।७)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"तयो मे भिक्खवे आसवा। कतमे तयो? कामासवो भवासवो अविज्जासवो, इमे खो भिक्खवे! तयो आसवा' ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

[1] यस्स, D.E. [2] निच्छातो, C.; निच्छन्तो च, D.E. एतद्गाथार्थं द्र० ५२,५६ सूत्रयोः

५५ [3] °एसना सह, B (यथा प्रथम गाथायां) [4] °सच्चं°, D.E. P. P2 [5] B.C. लोप्यते च [6] समुस्सता, B.C. [7] °त्ताय, C. [8] °विमुत्तिनो, D.E. P. P2; °विमुत्तिनो (?) अरहतो, A; °विमुत्तिया, B.C.M. (तण्हक्खरा°, B) [9] °निस्सग्गा, C.; °निसग्गा, P.P2 [10] दिट्ठिसत्ता, B.M. [11] समूहिता, B [12] निवासो, D.E. [13] अकथंकथि, B.C.E.M.; °कथि, P.

समाहितो सम्पजानो सतो बुद्धस्स¹ सावको¹ ।
आसवे च² पजानाति आसवानञ्च³ सम्भवं ॥
यत्थ चेता निरुज्झन्ति मग्गञ्च⁴ खयगामिनं ।
आसवानं खया भिक्खु निच्छातो⁵ परिनिब्बुतो ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥७॥

(५७—आसव-सुत्तं ३।१।८)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"तयो' मे भिक्खवे! आसवा। कतमे तयो? कामासवो भवासवो अविज्जासवो। इमे खो भिक्खवे! तयो आसवा' ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

यस्स कामासवो खीणो अविज्जा च⁶ विराजिता ।
भवासवो⁷ परिक्खीणो विप्पमुत्तो निरूपधि⁸ ।
धारेति⁹ अन्तिमं देहं जेत्वा मारं सवाहनन्ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥८॥

(५८—तण्हा-सुत्तं ३।१।९)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"तिस्सो इमा भिक्खवे! तण्हा। कतमा तिस्सो? कामतण्हा भवतण्हा विभवतण्हा। इमा¹⁰ खो भिक्खवे! तिस्सो तण्हा' ति¹⁰। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

तण्हायोगेन संयुत्ता रत्तचित्ता भवाभवे ।
ते योगयुत्ता मारस्स अयोगक्खेमिनो¹¹ जना ।
सत्ता गच्छन्ति संसारं जातिमरणगामिनो ॥

५६. ¹ सम्बुद्धसावको, C. ² चे, C.Pa. ³ आसवानस, C
...गञ्चस्स, Pa. ⁵ निच्छातो, C. एतद्गाथार्धद्व० ५२,५४ सूत्रयोः
P.; स्यन्न: Pa. ⁷ भवाभवो, D.E. ⁸ निरुपधि, B.C.D.
...; निरुपधि, Pa; निरुप्पधि, P. ⁹ धारेन्ति, B.
८. ¹⁰ इमा......तण्हा ति स्यन्न: B.C.P.Pa. ¹¹ °क्खेमियो,
...खेमये B.

ये च तण्हं पहन्त्वान[1] वीततण्हा[2] भवाभवे।
ते च[3] पारङ्गता[4] लोके ये पत्ता[5] आसवक्खयन्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥९॥

(५९—मारधेय्य-सुत्तं ३।१।१०)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"तीहि भिक्खवे ! धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अतिक्कम्म[6] मारधेय्यं आदिच्चो व विरोचति। कतमेहि तीहि ? इध भिक्खवे ! भिक्खु असेखेन[7] सीलक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेखेन समाधिक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेखेन पञ्ञाक्खन्धेन[8] समन्नागतो होति। इमेहि खो भिक्खवे ! तीहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अतिक्कम्म[9] मारधेय्यं आदिच्चो' व[10] विरोचतीति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

सीलं समाधि पञ्ञा च यस्स एते सुभाविता[11]।
अतिक्कम्म[12] मारधेय्यं आदिच्चो, व विरोचती'ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[13]॥१०॥

वग्गो पठमो

तस्सुद्दानं—

मूलधातु[14] (५०,५१) अथ वेदना दुवे (५२,५३) एसना च[15] द्वे (५४,५५) होन्ति[16]। दुवे (५६,५७)।

तण्हातो च (५८) अथ मारधेय्यतो[17] (५९) वग्गमाहु पठमं [illegible][18]।

---

[1] पहन्त्वान, M P; पहत्वान, D I [2] वीततण्हा भव°, D I P P₂; वितण्हा च भ°, C; वितण्हा, B M. [3] वे, D I P P₂
[4] पारङ्गता, B; पारगता, D I [5] पत्ता, B C P₂
५९ [6] अतिक्कम्म, P P₂ [7] असेखेन, D I [8] [illegible]° D I
[9] अतिक्कम्म, B P P₂ [10] च व, B, [11] [illegible]°, D I, [illegible] C
[12] अतिक्कम्म, P P₂ [13] अयम्पि°—[illegible] M. [14] मूलधातु, P, [illegible] P₂
[15] च, [illegible] D I [16] आसवा च, B [17] मारधेय्यो, C, [illegible] D I.
[18] °[illegible], M; [illegible] D I

अक्खेय्यसञ्ञिनो सत्ता अक्खेय्यस्मिं पतिट्ठिता।
अक्खेय्यं अपरिञ्ञाय[1] योगमायन्ति मच्चुनो॥
अक्खेय्यञ्च परिञ्ञाय अक्खातारं[2] न मञ्ञति[3]।
फुट्ठो विमोक्खो मनसा सन्तिपदमनुत्तरं[4] ॥
स वे[5] अक्खेय्यसम्पन्नो सन्तो सन्तिपदे रतो।
सङ्खाय[6] सेवी धम्मट्ठो सङ्ख्यं[7] नोपेति[8] वेदगू ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥४॥

(६४—दुच्चरित-सुत्तं ३।२।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—तीणिमानि भिक्खवे! "दुच्चरितानि। कतमानि तीणि? कायदुच्चरितं वचीदुच्चरितं मनोदुच्चरितं। इमानि खो भिक्खवे! तीणि दुच्चरितानी"ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

कायदुच्चरितं कत्वा वचीदुच्चरितानि च।
मनोदुच्चरितं कत्वा यञ्चञ्ञं[9] दोससञ्हितं[10] ॥
अकत्वा कुसलं[11] कम्मं[12] कत्वानाकुसलं बहुं।
कायस्स भेदा दुप्पञ्ञो निरयं सो[13] उपपज्जती ति[13] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥५॥

(६५—सुचरित-सुत्तं ३।२।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—तीणिमानि भिक्खवे! सुचरितानि। कतमानि तीणि? कायसुचरितं वचीसुचरितं मनोसुचरितं। इमानि खो[1]

[1] अप्परि°, D E.; अक्खेय्यञ्च परि°, C.Pa. [2] अक्खातारं, C.M.; अक्खाभारं, Pa., अक्खातानं, B.D.E.P. [3] मञ्ञसि, B.; मुञ्चति, D.E. [4] आद्य गाथा द्वय also in the संयुत्तनिकायेऽपि (ed. Feer) 1.2,18, केवल द्वितीयस्य उत्तरार्द्धे भेदः। [5] स वे–किम् द्र० Sutt. 62, हस्तलेखे सचे; अच्चे, C. [6] सङ्खार, B. [7] सख्यं, B.; संख्या, C. [8] न उपेति, D.E.P.Pa. [9] यञ्चयं D.E.; य अञ्ञ, Pa; यं सञ्ञं, P. [10] °सञ्हितम्, D.; °सञ्हितं, E. [11] कत्वा अकुस°, Pa. [12] धम्मं, P. [13] सोपपज्जतीति, M.; द्र० ३३, ६५ सुत्त०.

भिक्खवे ! तीणि दुच्चरितानी'ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

कायदुच्चरितं[2] हित्वा[3] वचीदुच्चरितानि[2] च ।
मनोदुच्चरितं[2] हित्वा[4] यञ्चञ्ञं[5] दोससञ्हितं[6] ॥
अकत्वा कुसलं[7] कम्मं[8] करित्वान कुसलं बहुं ।
कायस्स भेदा सप्पञ्ञो सग्गं सो उपपज्जतीति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥६॥

(६६—सोचेय्य-सुत्तं ३।२।७)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं । तीणि'मानि भिक्खवे ! सोचेय्यानि । कतमानि तीणि ? कायसोचेय्यं वचीसोचेय्यं मनोसोचेय्यं । इमानि खो भिक्खवे ! तीणि सोचेय्यानी'ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

कायसुचिं[9] वाचासुचिं[9] चेतोसुचिं[10] अनासवं ।
सुचिसोचेय्यसम्पन्नं आहु सब्बपहायिनन्ति[11] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥७॥

(६७—मोनेय्य-सुत्तं ३।२।८)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—'तीणि'मानि भिक्खवे ! मोने-
...' । कतमानि तीणि ? कायमोनेय्यं वचीमोनेय्यं मनोमोनेय्यं । इमानि खो
...वे ! तीणि मोनेय्यानीति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं एति
...ति[12]—

... [1] स°भ°, स्पष्ट B.D.E.P2. [2] °दुच्चर°, P.P2. [3] गहेत्वा,
...त्वा, C. [4] गहेत्वा, P2 [5] यं सञ्ञा, P. [6] °सहितं, D.E.
...अकु°, B.D. E.P P2. [8] धम्मं, D.E.
... [9] °सुचि, B.M P.P2; °सुची, C.D.E. [10] °सुचीम, D.E.
...नन्ति, B.; आहु सुचिसंपापणन्ति, P.P2.
... [12] एतमत्थं', केवल M.; वे—इति D.E.

कायमुनि[1] वाचामुनि[1] मनोमुनिमनासवं ।
मुनिमोनेय्यसम्पन्नं[2] आहु निन्हातपापकन्ति[3] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥८॥

(६८—रागदोसमोह-सुत्तं ३।२।९)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"यस्स कस्सचि भिक्खवे! रागो अप्पहीनो दोसो अप्पहीनो मोहो अप्पहीनो, अयं वुच्चति भिक्खवे! बद्धो मारस्स,[4] पटिमुक्कस्स मारपासो[5], यथाकामकरणीयो च[6] पापिमतो। यस्स कस्सचि भिक्खवे! रागो पहीनो दोसो पहीनो मोहो पहीनो, अयं वुच्चति भिक्खवे! अबद्धो[7] मारस्स,[4] ओमुक्कस्स[8] मारपासो, न[9] यथाकामकरणीयो च[10] पापिमतो' ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

यस्स रागो च दोसो च अविज्जा च विराजिता।
तं भावितत्तञ्ञतरं[11] ब्रह्मभूतं तथागतं।
बुद्धं वेरभयातीतं आहु सब्बप्पहायिनन्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥९॥

(६९—रागदोसमोह-सुत्तं ३।२।१०)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"यस्स कस्सचि भिक्खवे[1] भिक्खुस्स वा भिक्खुनिया वा रागो अप्पहीनो दोसो अप्पहीनो मोहो अप्पहीनो,

[1] °मुनि, D. E.; °मुनि, B.M.P.Pa (वचिमुनि, P.); मुणो, C.
[2] मनुमोनेय्यसम्पन्ना, D.E. [3] निन्हात°, M.; निण्हाण°, Aa. (अट्ठानामग्गजलेन सुट्ठु विक्खालित पजहितपापमल, A.); निन्दात°, P.Pa; निन्दिता°, C.B.; B. पुस्तकेषु शोधित—निन्हात°; निहात, D.E.
६८ [4]मारपासस्स, C.P.Pa. [5]अवद्धो मारस्स ओमुक्कस्स मारपासो, D.E. (सूत्रस्योत्तरार्द्धमिव शब्दयोजना). [6] च—त्यक्तः M. [7] अवद्धो, D.E. [8] अपटिमुक्कस्स, B. [9]न—त्यक्तः D.E. [10] च—त्यक्त B.M. [11] भावितत्थ°, B.; °ञ्ञात्°, P.Pa.

अयं वुच्चति भिक्खवे ! न[1] अतरि[2] समुद्दं सऊमिं[3] सवीचिं सावट्टं[4] सगहं सरक्खसं। यस्स कस्सचि भिक्खवे ! भिक्खुस्स वा भिक्खुनिया वा रागो पहीनो दोसो पहीनो मोहो पहीनो, अयं वुच्चति भिक्खवे ! अतरि[5] समुद्दं सऊमिं[6] सवीचिं[7] सावट्टं सगहं सरक्खसं, तिण्णो पारंगतो[8] थले तिट्ठति ब्राह्मणो[9]'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति[10]—

यस्स रागो च दोसो च अविज्जा च विराजिता।
सोमं[11] समुद्दं सगहं सरक्खसं ऊमिभयं[12] दुत्तरं[13] अच्चतारि[14]॥
सङ्गातिगो[15] मच्चुजहो[16] निरूपधि[17] पहासि दुक्खं अपुनब्भवाय[18]।
अत्थङ्गतो सो न पमाणमेति[19] अमोहयि[20] मच्चुराजन्ति ब्रूमी'ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१०॥

दुतियो वग्गो

उद्दानं

पुञ्ञं[21] (१०) चक्खु[22] (११) इन्द्रियानि[23] (१२) अद्धा (१३) चरितं दुवे (१४,१५सुचि) [24] (१६)।
मोनी[25] (१७) अथ राग[26] दुवे (१८,१९) पुन वग्गमाहु दुतियमुत्तमन्ति[27]

---

[1] न त्यक्त B.C.M.; Aa. [2] अतरि, B.; अतिरीति अतिण्णो, A.; अगारी, D.E.; अपर, C.; अतिण्णो, M. [3] सऊमि, M.C.; सउम्मि, P.B., (न तु° B.C.), त्यक्त D.E.Pa. [4] सावाञ्जं, D.E. [5] अगारि, D.E.; अपर, C. [6] सऊमि, M.C., सउम्मि, P.Pa.B., (न तु° B.C.); सवुमि, D.E. [7] त्यक्त D.E. [8] पारगतो, C.D.E.P.Pa. [9] ब्रह्म°, B.P.Pa. [10] एतमत्थं° ड्रेवलं M. [11] सोमं, M. अन्येषु इ०—सो इमं। [12] ऊमि°, B.; वुमि°, D.E.; सुमि°, M.; सऊमि°, C.; उम्मि°, P.Pa.Aa. [13] दुत्तरमच्च°, M., अन्येषु इ०—दुत्तरं; दुक्करं, B. [14] अच्चतारि, M. P.Pa.; °तारि, B.; अच्चगारि, D.E.; अतरीति, C. [15] संगातिगो, B.; संगातिगो, C. [16] मच्चुहो, C.; त्यक्त D.E. [17] निरूपधि, C.M. निरु°, B.D.E.; निरू°, P.Pa. [18] °सपुन°, B. [19] [illegible] पाठान्तरं A. [20] [illegible] [21] [illegible] भिक्खु, D.E. [23] [illegible] योजित—च [24] [illegible] लुई सर्वेषु इ० [27] उत्तमन्ति, M.; अन्येषु इ० त्यक्त—न्ति।

३–दुतिय-वग्गो

(७०—दिट्ठ-सुत्तं ३।३।१)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—''दिट्ठा मया भिक्खवे ! सत्ता कायदुच्चरितेन समन्नागता वचीदुच्चरितेन समन्नागता मनोदुच्चरितेन समन्नागता, अरियानं उपवादका मिच्छादिट्ठिका मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं, विनिपातं, निरयं, उपपन्ना[1] । तं खो पनाहं भिक्खवे ! नाञ्ञस्स समणस्स वा, ब्राह्मणस्स[3] वा सुत्वा वदामि—'दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता कायदुच्चरितेन समन्नागता वचीदुच्चरितेन समन्नागता मनोदुच्चरितेन समन्नागता, अरियानं उपवादका, मिच्छादिट्ठिका मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना[4]' । अपि च भिक्खवे ! यदेव सामं[5] ञातं[5] सामं[6] दिट्ठं[6] सामं विदितं तदेवाहं[7] वदामि—'दिट्ठा मया भिक्खवे ! सत्ता कायदुच्चरितेन समन्नागता वचीदुच्चरितेन समन्नागता मनोदुच्चरितेन समन्नागता, अरियानं उपवादका, मिच्छादिट्ठिका मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना[8]'ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

मिच्छा मनं[9] पणिधाय[10] मिच्छा वाचं अभासिय[11] ।
मिच्छाकम्मानि कत्वान कायेन इध पुग्गलो ॥

७०. [1]स्पज्पते C. [2]उप्पन्ना, D.E ; सत्ता कायदुच्चरितेन.... उपपन्ना—इति ११ सुत्तेऽपि [3]ब्राह्मणस्स, B.P Pa. [4]उप्पन्ना, C.D.E. [5]सामञ्ञातं, C.D.E. [6]त्यक्त: E. D. [7]तमेवहं, B. [8]उप्पन्ना, C. [9]मान, C. [10]पनि°, D.E ; पनो°, C. [11]अभासिय, D.E.M.P.; अभासियं, C.; अभासिस्स, B ; मिच्छा वाच अभिस्सामीति (sic !) मिच्छा मुसावादादिवसेन वाचं भासित्वा, A , इ० ७१ सुत्तं म० पभासिय—किमु ?

अप्पस्सुतो[1] अपुञ्ञकरो[1] अप्पस्मिं इध जीविते[2]।
कायस्स भेदा दुप्पञ्ञो निरयं सो[2] उपपज्जतीति[2]॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१॥

(७१—दिट्ठ-सुत्तं ३।३।२)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं 'दिट्ठा मया भिक्खवे "सत्ता[3] काय-सुचरितेन समन्नागता वचीसुचरितेन समन्नागता मनोसुचरितेन समन्नागता अरियानं अनुपवादका सम्मादिट्ठिका सम्मादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा, सुगतिं सग्गं लोकं उपपन्ना[4]। तं खो पनाहं[5] भिक्खवे ! नाञ्ञस्स[6] समणस्स वा ब्राह्मणस्स[7] वा सुत्वा वदामि—'दिट्ठा मया भिक्खवे ! सत्ता कायसुचरितेन समन्नागता वचीसुचरितेन समन्नागता मनोसुचरितेन समन्नागता अरियानं अनुपवादका सम्मादिट्ठिका सम्मादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा सुगतिं[8] सग्गं लोकं उपपन्ना[9]'। अपि च भिक्खवे[10] ! यदेव सामं[11] ञातं[11] सामं[12] दिट्ठं[12] सामं विदितं तदेवाहं वदामि—'दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता कायसुचरितेन समन्नागता वचीसुचरितेन समन्नागता मनोसुचरितेन समन्नागता अरियानं अनुपवादका सम्मादिट्ठिका सम्मादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपन्ना[13]' ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

सम्मा मनं[14] पणिधाय[14] सम्मा वाचं अभासिय[15]।
सम्मा कम्मानि कत्वान कायेन इध पुग्गलो॥

[1]अप्पस्सुतापुञ्ञकारू°, M.; अप्पसुताप°, P.P2; अप्पसुतो पु°, B.C. (पुञ्ञकरो, B.) [2]सोपपज्जतीति, M.

७१. [3]सत्ता इत्यत्र पदं, कायस्स भेदा परम्मरणा—इति पोत्थकानुसारा [4]उपपन्ना, C.D.E.; उपपन्ना ति, B. [5]पन, B. [6]अञ्ञस्स, B. [7]ब्राह्मणस्स, B.P.P2. [8]सुगतिं, B. [9]उपपन्ना, C.D.E. [10]भिक्खवे स्वक्त, B; अपि च यदेव भिक्खवे, C.; अपि च देव भि°, D.E. [11]सामञ्ञातं, C.D.E.; सामञ्ञा°, B. [12]स्वक्त D.E. [13]उपपन्ना, D.E. [14]मनं पनी°, C. [15]अभासिय, C.D.E.M.P.P2; अभासियस्स, B; इ० ७० सुत्ते

बहुस्सुतो पुञ्ञकरो धम्मस्मिं च जीविते ।
कायस्स भेदा सप्पञ्ञो [1] सग्गं सो उपपज्जतीति [2] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥२॥

(७२—निस्सरण-सुत्तं ३।३।३)

72. (Itiv. III. 3) वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहताति मे सुतं—'तिस्सो इमा, भिक्खवे, निस्सरणिया[3] धातुयो। कतमा तिस्सो? कामानमेतं निस्सरणं यदिदं नेक्खम्मं, रूपानमेतं निस्सरणं यदिदं आरुप्पं [4], यं[5] खो पन किञ्चि भूतं सङ्खतं [6] पटिच्चसमुप्पन्नं निरोधो तस्स निस्सरणं। इमा खो, भिक्खवे, तिस्सो निस्सरणिया [7] धातुयो'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

कामनिस्सरणं [8] ञत्वा रूपानञ्च [9] अतिक्कमं [10] ।
सब्बसङ्खारसमथं फुसं [11] आतापी [12] सब्बदा ॥
स वे [13] सम्मद्दसो [14] भिक्खु यतो तत्थ [15] विमुच्चति ।
अभिञ्ञावोसितो [16] सन्तो स वे[17] योगातिगो[18] मुनी'ति ।
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥३॥[19]

---

[1] सपञ्ञो, B. [2] उपपज्ज°, P2.; उपज्ज°, P.

७२ [3] निस्सरणिया, B.M.P.P2.; निस्सरणिया ति निस्सरणधातुयो, A., °णीया, C.; निस्सारणिया, D.E. (नु D.); निस्सारणीया, Ch. Dict. [4] आरुप्पं, P.P2. [5] इदं D.E. [6] असङ्खतं B.C [7] निस्सारणिया, D ; °सारणिया, E.; निस्सरणीया°, C. [8] °निस्सरणं, D.E. [9] °रूप°, P.P2. [10] °क्कम्मं, P.P2. [11] फुसं, M; फुसन्तो, A. (फुसन्तेन—फुस°); फस्सं, P2.; फस्सं, P.; सम्मद्—(अक्खरानि), D.E.; सवं, B.C. [12] °ई, M.; °इ. [13] वे B.C. P2; स्वेव P. [14] सम्मसो, M. [15] यतोतिस्स, D.E.; यथा तत्थ, C [16] अभञ्ञाय C. P2; अबेव
वुसे [तत्थ] यतो वि......अभञ्ञाय (?)—इति अभिञ्ञाय वोसितस्स ! अभिञ्ञा [अबेल:] वोसितो सन्तो, C. [17] वे, B.C.P P2. [18] °गतिगो, D.E. [19] द्वितीय गाथा ५३, ८५ सुत्तयोरपि

(७३—रूप-सुत्तं ३।३।४)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं 'रूपेहि भिक्खवे "अरूपा[1] सन्ततरा[2], अरूपेहि निरोधो सन्ततरो[3]' ति[4]। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

ये च रूपूपगा सत्ता ये च अरूपट्ठायिनो[5] ।
निरोधं अप्पजानन्ता[6] आगन्तारो[7] पुनब्भवं ॥
ये च रूपे[8] परिञ्ञाय अरूपेसु[9] असण्ठिता ।
निरोधे ये विमुच्चन्ति ते जना मच्चुहायिनो[10] ॥
कायेन अमतं धातुं फस्सयित्वा[11] निरूपधिं[12] ।
उपधिप्पटिनिस्सग्गं[13] सच्छिकत्वा अनासवो ।
देसेति सम्मासम्बुद्धो असोकं विरजं पदन्ति ।
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥४॥

(७४—पुत्त-सुत्तं ३।३।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं ! तयो मे[14] भिक्खवे 'पुत्ता सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं। कतमे तयो ? अतिजातो अनुजातो अवजातो' ति[15]। कतमो च भिक्खवे ! पुत्तो अतिजातो होति ? इध भिक्खवे ! पुत्तस्स मातापितरो होन्ति न बुद्धं सरणंगता, न धम्मं सरणंगता, न सङ्घं सरणंगता, पाणातिपाता अप्पटिविरता अदिन्नादाना अप्पटिविरता, कामेसु मिच्छाचारा अप्पटिविरता, मुसावादा अप्पटिविरता, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना अप्पटिविरता, दुस्सीला

७३. [1] अरूपा, P.Pa. [2] सन्ततरा, C.P.Pa [3] सन्ततरो, C.Pa [4] ति, B. [5] अरूपट्ठायिनो, P.Pa C. पुस्तकयोः पूर्वोक्ते प्रश्ने °ना यिनो, B., C. पुस्तकयोस्तु योगद्वयार्थे पूर्वार्द्ध उभयत्र संपूर्णमिवास्ते V. 4.] [6] °आनन्ता, C. Pa. प्रत्येक एव । [7] आगन्तारो, B; आगन्तारो, C. [8] ये च रूपे सर्व० इ० द्वितीय तृतीये वाक्ये इ० ५१ सुत०। [9] अरूपेसु, D. E.; ये च रूपेसु, Pa [10] °हायिनो, B. [11] फस्सयित्वा, P.Pa, फुस्स°, C.; फुसय° B M; फुसय°, D I. [12] निरूपधिं, M; °धि,—अन्य० इ० एव—इत्यनेन सह समासेन अवस्थान अवकाशलाभाय । [13] °प्पटि°, अन्येषु इ० स्थाने °पटि° । [14] मे। [15] ति, स्यम D I.

पापधम्मा, पुत्तो च¹ नेसं¹ होति, बुद्धं सरणंगतो धम्मं सरणंगतो सङ्घं सरणं-
पाणातिपाता पटिविरतो² अदिन्नादाना पटिविरतो², कामेसु मिच्छाचारा पटि-
विरतो, मुसावादा पटिविरतो, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतो, सील-
कल्याणधम्मो—एवं खो³ भिक्खवे! पुत्तो अतिजातो होति। कतमञ्च भिक्खवे!
पुत्तो अनुजातो होति? इध भिक्खवे! पुत्तस्स मातापितरो होन्ति, बुद्धं सरणंगता,
धम्मं सरणंगता, सङ्घं सरणंगता, पाणातिपाता पटिविरता, अदिन्नादाना पटि-
विरता, कामेसु मिच्छाचारा पटिविरता, मुसावादा पटिविरता, सुरामेरयमज्ज-
पमादट्ठाना पटिविरता, सीलवन्तो कल्याणधम्मा, पुत्तो' पि नेसं होति बुद्धं सरणं-
गतो, धम्मं सरणंगतो, सङ्घं सरणंगतो, पाणातिपाता पटिविरतो, अदिन्नादाना
पटिविरतो, कामेसु मिच्छाचारा पटिविरतो, मुसावादा पटिविरतो, सुरामेरयमज्ज-
पमादट्ठाना पटिविरतो, सीलवा कल्याणधम्मो—एवं खो भिक्खवे! पुत्तो अनुजातो
होति। कतमञ्च⁵ भिक्खवे! पुत्तो अवजातो होति? इध भिक्खवे! पुत्तस्स
मातापितरो होन्ति, बुद्धं सरणंगता, धम्मं सरणंगता,⁶ सङ्घं सरणंगता, पाणाति-
पाता पटिविरता, अदिन्नादाना पटिविरता, कामेसु मिच्छाचारा पटिविरता,
मुसावादा पटिविरता, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरता, सीलवन्तो कल्याण-
धम्मा, पुत्तो च⁷ नेसं⁷ होति, न बुद्धं सरणंगतो,⁸ न धम्मं सरणंगतो, न सङ्घं
सरणंगतो, पाणातिपाता अप्पटिविरतो, अदिन्नादाना अप्पटिविरतो, कामेसु
मिच्छाचारा अप्पटिविरतो, मुसावादा अप्पटिविरतो, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना
अप्पटिविरतो, दुस्सीलो पापधम्मो—एवं खो भिक्खवे! पुत्तो अवजातो
होति⁹।—इमे खो भिक्खवे! तयो पुत्ता सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिन्ति।
एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

अतिजात अनुजात पुत्तमिच्छन्ति¹⁰ पण्डिता।
अवजातं न¹¹ इच्छन्ति यो होति कुलगन्धनो¹²॥
एते खो पुत्ता लोकस्मिं ये भवन्ति उपासका।

¹पनेस, D E   ²सर्वत्र ह० नतु C M   योजित—होति। D E.
योजित.—होति।   ⁴खो, स्यक्त P Pa   ⁵B योजित—खो।   ⁶ध° त°
न°, इस्यम P Pa प   ⁷पनेसं, D (ण) E.   ⁸D E. योजित—होति।
⁹अवजातो ति, B   ¹⁰पुत्तमिच्छ°, B D.E   ¹¹न—स्यक्त D E
¹²कुसजन्तुनो, C.; A.—कुलगन्धनो ति कुलच्छेदको, निद्दिस्यते पाठान्तर—
कुलपसनो (ह०—कुसलप°)

सद्धा[1] सीलेन सम्पन्ना[2] वदञ्ञू वीतमच्छरा ।
चन्दो अब्भघना[3] मुत्तो[4] परिसासु विरोचरे[5] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥७४॥

(७५—अवुट्ठिक-सुत्तं ३।३।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहताति मे सुतं—"तयोमे भिक्खवे[6] पुग्गला सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं। कतमे तयो? अवुट्ठिकसमो[7] पदेसवस्सी सब्बत्था-भिवस्सी। कथञ्च भिक्खवे पुग्गलो अवुट्ठिकसमो होति? इध भिक्खवे एकच्चो पुग्गलो सब्बेसञ्ञेव[8] न दाता होति, समणब्राह्मणकपणद्धि-कवनिब्बकयाचकानं[9] अन्नं पानं वत्थं यानं मालागन्धविलेपनं सेय्यावस-थपदीपेय्यं[10]—एवं खो भिक्खवे पुग्गलो अवुट्ठिकसमो होति। कथञ्च भिक्खवे पुग्गलो पदेसवस्सी होति? इध भिक्खवे एकच्चो पुग्गलो एकच्चानं दाता होति, एकच्चानं न दाता होति[11], समणब्राह्मणकपणद्धिकवनिब्बकयाचकानं[12] अन्नं पानं वत्थं यानं मालागन्धविलेपनं[13] सेय्यावसथपदीपेय्यं[14]—एवं खो भिक्खवे पुग्गलो[15] पदेसवस्सी होति। कथञ्च भिक्खवे पुग्गलो[16] सब्बत्थाभिवस्सी होति? इध भिक्खवे एकच्चो पुग्गलो सब्बेसं[17] देति, समणब्राह्मणकपणद्धिकवनिब्बकयाचकानं[18] अन्नं पानं वत्थं यानं मालागन्धविलेपनं[19] सेय्यावसथपदीपेय्यं[10]—एवं खो भिक्खवे पुग्गलो[16] सब्बत्थाभिवस्सी होति।—इमे खो भिक्खवे तयो पुग्गला सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिन्ति।—एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति।

[1]सद्दा°, B [2]°ञ्ञू, B P. [3]अब्भघना, M; नभ°, B; अब्भगता, C.P Pa; अब्भगतानि अब्भमघपटला, A; अब्भमता, D.E. [4]मुत्ते, M. [5]विरोचयेति, C; विरोचन्ति, D.E.Pa

७५. [6]भ°—स्यक्म [7]व°—स्यक्म: BCP. [8]न सब्बेसञ्ञेव, B. [9]°वनब्बिक°, M; °वनिब्बक°, B. [10]A.—मालर ति.. सव्वन्ति......विलेपनन्ति...... सेय्यानि...... आवसथन्ति .... प°; °गन्ध वि°, B; °दीपयं, B; °दीपयन्ति, Aa. [11]होति—स्यक्म: D E.P.Pa. [12]°वनब्बिक° M; ब्राह्मणकपणद्ध°, B; °ब्राह्मणान अधिक, P.Pa. [13]°गन्ध वि°, D.E. [14]°वसथं प°, D.E.; °पदिपयं, B. [15]व°—स्यक्म: C. [16]व°—स्यक्म B.C. [17]M. पोजिय—स, [18]°ब्राह्मण°, B. Pa, वनब्बिक°, B M. [19]गन्ध वि°, C.

७(—पुप्फ-सुत्तं [१।१।७]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं। तीणि मानि भिक्खवे पुप्फ
समन्नागतो सील स्मरेय्य पण्डितो। कतमानि तीणि? पसंसा मे आगच्छतू
सील स्मरेय्य पण्डितो, भोगा मे उप्पज्जन्तू[1] ति सील स्मरेय्य पण्डितो, कायस्स
भेदा परम्मरणा सुगति[2] सग्गं लोकं उपपज्जिस्सामी ति[3] सील स्मरेय्य पण्डितो
इमानि खो भिक्खवे तीणि पुप्फानि समन्नागतो सील स्मरेय्य पण्डितो ति[4]।
एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति।

सीलं स्मरेय्य मेधावी[5] समन्नागतो नरो पुप्फे।
पसंसं[6] वित्तलाभञ्च[7] पेच्च सग्गे पमोदनं[8] ॥
अकरोन्तो पि चे पापं करोन्तमुपसेवति।
संकियो[9] होति पापस्मिं अवण्णो चस्स रूहति ॥
यादिसं कुरुते मित्तं यादिसं चुपसेवति[10]।
स वे[11] तादिसको होति सहवासो[12] हि[13] तादिसो ॥
सेवमानो सेवमानं सम्फुट्ठो सम्फुसं[14] परं
सरो दुट्ठो[15] कलापं वा अलित्तमुपलिम्पति[16]।
उपलेपभया[17] धीरो[18] नेव पापसखा[19] सिया ॥
पूतिमच्छं कुसग्गेन यो नरो उपनय्हति[20]।
कुसा पि पूति वायन्ति एवं बालूपसेवना ॥
तगरञ्च[21] पलासेन यो नरो उपनय्हति[20]।
पत्ता पि सुरभि[22] वायन्ति एवं धीरूपसेवना ॥
तस्मा पत्तपुटस्सेव[23] ञत्वा सम्पाकम्[24] अत्तनो।

[1] उप्पज्जन्तु°, B.E.M. [2] सुगति, P; सुगतिं, P₂ [3] उप्पज्जू°, C.E
[4] नत्थि. P.P₂ [5] °वि, सर्वत्र न नत्थि तु E [6] पसंसं, B.C.
[7] वित्त°, E. P. P₂. च A (धनलाभं भागुप्पत्ति); वित्त, D, वित्ति°,
B.C.M. [8] च मोदनं, D E. [9] संकियो, D.E. [10] यादिसञ्चुप°,
P.P₂; ° कुपम°, M; यादिसंमुप°, C; °मप°, E., °म्मप°, D.
[11] वे, B C.M. [12] सहावासो, B; सभावासो, D E [13] पि, B.C M.
[14] सफुसं, B; °फुसी, C. [15] दिद्धो विन्दु [16] अमुलिलित्तपति, D.E
व्यम्पात [17] उपलिम्प°, P.M; उपलेपभया, P., °तिया, P₂.; उपले-
पतिना, C. [18] धारि (?)., C. [19] °सुखा, D.E. [20] उपनेय्हति,
B P.P₂. [21] तगर°, B M.P.P₂. [22] सुरभि, B. [23] पलासपुटस्सेव
केवलं M. च A.; मालपुटस्सेव, P; P₂ नत्थि गाथा मूलपुट्टस्सेव, B;
फलपुट्टस्सेव, C.; पत्तपुटस्सेव स्रोतुकस D.E. [24] सपातम् M.P. च
A.; संपाकम्, B D.E; सपाकम्, C.

७६ — सुख-सुत्तं [३।१।७]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं । तीणिमानि भिक्खवे सुखानि
पत्थयमानो सीलं रक्खेय्य पण्डितो । कतमानि तीणि ? पसंसा मे आगच्छतू ति
सीलं रक्खेय्य पण्डितो, भोगा मे उप्पज्जन्तू[1]ति सीलं रक्खेय्य पण्डितो, कायस्स
भेदा परम्मरणा सुगतिं[2] सग्गं लोकं उप्पज्जिस्सामी[3]ति सीलं रक्खेय्य पण्डितो ।
इमानि खो भिक्खवे तीणि सुखानि पत्थयमानो सीलं रक्खेय्य पण्डितो ति[4] ।
एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति ।

सीलं रक्खेय्य मेधावी[5] पत्थयानो तयो सुखे ।
पसंसं[6] वित्तलाभञ्च[7] पेच्च सग्गे पमोदनं[8] ॥
अकरोन्तो पि चे पापं करोन्तमुपसेवति ।
संकियो[9] होति पापस्मिं अवण्णो चस्स रूहति ॥
यादिसं कुरुते मित्तं यादिसं चूपसेवति[10] ।
स वे[11] तादिसको होति सहवासो[12] हि[13] तादिसो ॥
सेवमानो सेवमानं सम्फुट्ठो सम्फुसं[14] परं
सरो दिद्धो[15] कलापं व अलित्तमुपलिम्पति[16] ।
उपलेपभया[17] धीरो[18] नेव पापसखा[19] सिया ॥
पूतिमच्छं कुसग्गेन यो नरो उपनय्हति[20] ।
कुसा पि पूती वायन्ति एवं बालूपसेवना ॥
तगरञ्च[21] पलासेन यो नरो उपनय्हति[20] ।
पत्ता पि सुरभी[22] वायन्ति एवं धीरूपसेवना ॥
तस्मा पत्तपुटस्सेव[23] ञत्वा सम्पाकम[24] त्तनो ।

[1] उप्पज्ज°, B.E.M. [2] सुगति, P.; सुगति, Pa. [3] उप्पज्ज°, C.E. [4] नत्थि, P.Pa. [5] °वि, सर्वत्र न नास्ति तु E. [6] पसंसि, B.C. P.Pa.; ° [7] वित्त°, E.P.Pa च A (धनलाभं भागुप्पत्ति); वित्त, D; वित्ति°, B.C.M. [8] च मोदनं, D.E. [9] सङ्कियो, D.E. [10] यादिसञ्चुप°, P.Pa.; °ञ्चुपस°, M; यादिसामुप°, C.; °ञ्चुप°, E.; °ञ्चुप°, D. [11] चे, B.C.M [12] सहावासो, B; सभावासो, D.E. [13] पि, B.C.M. [14] सफुसि, B; °फुसी, C. [15] दिद्धो लित्तो [16] अमुलिलिम्पति, D.E. अपल्लाम [17] उपलिम्प°, P.M.; उपलेपनया, P.; °तिया, Pa.; उपलेपतिता, C. [18] धीरि (?), C. [19] °सुखा, D.E. [20] उपनेय्हति, B.P.Pa [21] तगर°, B.M.P.Pa. [22] सुरभि, B. [23] पलासपुटस्सेव केवलं M. च A.; मालपुटस्सेव, P.; Pa. नास्ति गाथा मूलमुट्ठस्सेव, B; फलमुट्ठस्सेव, C.; पत्तपुटस्सेव स्वोनुकूल D.E. [24] सपाकम् M.P. च A.; संपाकम्, B.D.E; सपाकम्, C.

न समणे न ब्राह्मणे न कपणिद्धिके न वनिब्बके[1] ।
लद्धान[2] संविभाजेति[3] अन्नं पानञ्च भोजनं ॥
त वे[4] अवुट्ठिकसमो ति आहु नं पुरिसाधमं[5] ॥
एकच्चानं न ददाति[6] एकच्चानं पवेच्छति[7] ।
तं[8] वे[9] पदेसवस्सीति[10] आहु मेधाविनो जना ॥
सुभिक्खवाचो[11] पुरिसो सब्बभूतानुकम्पको ।
आमोदमानो पकिरेति देथ देथाति भासति ॥
यथा पि[12] मेघो थनयित्वा[13] गज्जयित्वा[14] पवस्सति ।
थलं निन्नञ्च पूरेति अभिसन्दन्तो[15] वारिना[16]
एवमेव इध एकच्चो पुग्गलो होति तादिसो ॥
धम्मेन संहरित्वान[17] उट्ठानाधिगतं धनं ।
तप्पेति अन्नपानेन सम्मा पत्ते वनिब्बके[18] ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥६॥

---

[1] P.Pa. त्यक्ता. सर्वेनञ: समणब्राह्मणकप°, Pa., न समण ब्राह्मणे D.E. कपणद्धिके, B ; कपणिद्धि कवनिब्बके, M. [2] लद्दान, B.; लद्धानं, C सद्धान, D E. [3] °भाजेति, C., ° भजेति, M.; °भजति, P.Pa.; भजति, D E.; °राजति, B [4] चे, B.; नास्ति P.Pa. [5] नं साधमं D.E.; पुरिसाधम्मं, B.C. P.;Pa अनुष्टुप् [6] ददाति, D.E. [7] पवच्छेति, B.; °वेचति, C; °वेछति, Pa. [8] एतं, C.Pa. [9] चे, B. [10] परस्सवस्सिति, Pa. [11] °वाचो, B.M.A.; °वेवो°, C.; °वाचो, P.; सुभिक्खवेवाहो, D.E.A. पाठान्तरं—सुभिक्खवम्मो । [12] यथापि, C [13] थन°, C [14] गज्जयित्वा, D.E ; विज्जयित्वा, A ; B. च C. नास्ति गज्ज°; किन्तु B वस्सो, C. वदति, मेघो वस्सति । [15] अभिसन्तो, C. [16] वा वारिना, B.M.; च वारिना, C.; परिवारि, D.E [17] संहरित्वा, B; संहरित्वान, P. [18] सम्मा पत्ते, D.E.; सम्मगते, P.Pa.; समागते, M.; वनिब्बके, P.; वनिब्ब°, Pa. B अनुट्ठं, पाठद्वयं तप्प° अन्न° । सम्मा वर्णेन अन्नपानेन । सम्मा गते वनिब्बकेति । गाथात्रयं कोसलसुत्ते (ed. Feer) III. 3.4.17.

७६—सुख-सुत्तं (३।४।७)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं। तीणिमानि भिक्खवे सुखानि पत्थयमानो सीलं रक्खेय्य पण्डितो। कतमानि तीणि? पसंसा मे आगच्छतु ति सीलं रक्खेय्य पण्डितो, भोगा मे उप्पज्जन्तु[1] ति सीलं रक्खेय्य पण्डितो, कायस्स भेदा परम्मरणा सुगतिं[2] सग्गं लोकं उपपज्जिस्सामी[3] ति सीलं रक्खेय्य पण्डितो। इमानि खो भिक्खवे तीणि सुखानि पत्थयमानो सीलं रक्खेय्य पण्डितो ति[4]। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति।

सीलं रक्खेय्य मेधावी[5] पत्थयानो तयो सुखे।
पसंसं[6] वित्तलाभञ्च[7] पेच्च सग्गे पमोदनं[8]॥
अकरोन्तो पि चे पापं करोन्तमुपसेवति।
संकियो[9] होति पापस्मिं अवण्णो चस्स रूहति॥
यादिसं कुरुते मित्तं यादिसं चुपसेवति[10]।
स वे[11] तादिसको होति सहवासो[12] हि[13] तादिसो॥
सेवमानो सेवमानं सम्फुट्ठो सम्फुसं[14] परं
सरो दिद्धो[15] कलापं वा अलित्तमुपलिम्पति[16]।
उपलेपभया[17] धीरो[18] नेव पापसखा[19] सिया॥
पूतिमच्छं कुसग्गेन यो नरो उपनय्हति[20]।
कुसा पि पूति वायन्ति एवं बालूपसेवना॥
तगरञ्च[21] पलासेन यो नरो उपनय्हति[20]।
पत्ता पि सुरभि[22] वायन्ति एवं धीरूपसेवना॥
तस्मा पलासपुटस्सेव[23] ञत्वा सम्पाकम्[24] अत्तनो।

[1] उपपज्ज°, B.E.M. [2] सुगति, P; सुगतिं, P2 [3] उपपज्ज°, C.E. [4] नास्ति P.P2. [5] °वि, सर्वत्र न नास्ति तु E. [6] पसंसि, B.C. [7] वित्त°, E. P. P2. च A. (पसंसार्थ भागुप्पत्ति); वित्त, D.; वित्ति°, B.C.M. [8] च मोदनं, D.E. [9] संकियो, D.E. [10] यादिसञ्चुप°, P.P2; ° चुप°, M.; यादिसंचुप°, C.; °सप°, E.; °स्सप°, D. [11] चे, B.C.M. [12] सहावासो, B; सभावासो, D.E. [13] पि, B.C.M. [14] सम्फुसि, B; °फुसी, C. [15] दिद्धो लित्तु व्यत्यास [16] अमुलिलिम्पति, D.E. [17] उपलिम्प°, P.M.; उपलेपनया, P; °लिपा, P2; उपलेपलिता, C. [18] धीर(?), C. [19] °सखा, D.E. [20] उपनय्हति, B.P.P2 [21] तगरं°, B.M.P.P2. [22] सुरभि, B. [23] पलासपुटस्सेव केवलं M. च A.; मालपुटस्सेव, P.; P2. नास्ति गाथा मूलमुट्ठस्सेव, B.; पलमुट्ठस्सेव, C; पत्तपुटस्सेव म्होनुरूप D.E. [24] सम्पाकम् M.P. च A.; संपाकम्, B D.E; सपाकम्, C.

[illegible]

संसग्गा वनथो[5] जातो असंसग्गेन छिज्जति[6] ।
परित्तं[7] दारुमारुय्ह यथा सीदे महण्णवे ।
एवं कुसीतमागम्म[8] साधुजीवी[10] पि[9] सीदति ॥
तस्मा तं परिवज्जेय्य कुसीतं हीनवीरियं[11] ।
पविवित्तेहि[12] अरियेहि पहितत्तेहि झायिभि[13] ।
निच्चं आरद्धविरियेहि[14] पण्डितेहि सहा वसेति ।
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[15] ॥९॥

---

[1] न नत्थि M., धातुसो च, L., धातुसो याव, D [2] समेन्ति, C.D E P P2. [3] समिस्सन्ति, B.M. [4] एतम्° केवलं M [5] वनथो, B C.P.P2. [6] भिज्जति B [7] परित्त, C. [8] कुसीतं, B (क), C. [9] पि M. P. P2 A.; प सु°, C; स सु°, D E. (L. प), सप्°, B. [10] °जीवी, M.; °जीवि, C. D E. P P2, °जिवि, B. [11] °वीरियं, C. D. E. M.; °विरियं, B.P.P2 [12] विवित्तेहि, B., पविवित्तेहि, D.E. [13] झायिभि, M.; झायिभि, B.P.P2, झायिहि, C.D E. [14] °विरिय°, सर्वत्र [15] अयम्° केवलं M.

७९—परिहाण-सुत्तं [३।३।१०]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं[1]। तयो मे भिक्खवे धम्मा सेखस्स[2] भिक्खुनो परिहानाय संवत्तन्ति। कतमे तयो? इध भिक्खवे सेखो[3] भिक्खु कम्मारामो होति कम्मरतो[4] कम्मारामतमनुयुत्तो, भस्सारामो होति भस्सरतो भस्सारामतमनुयुत्तो, निद्दारामो होति निद्दारतो निद्दारामतमनुयुत्तो। इमे खो भिक्खवे तयो धम्मा सेखस्स[2] भिक्खुनो परिहानाय संवत्तन्ति। तयो–मे भिक्खवे धम्मा सेखस्स[2] भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तन्ति। कतमे तयो? इध भिक्खवे सेखो[3] भिक्खु न कम्मारामो होति न कम्मरतो[5] न कम्मारामतमनुयुत्तो, न निद्दारामो होति न निद्दारतो न निद्दारामतमनुयुत्तो। इमे खो भिक्खवे तयो धम्मा सेखस्स[6] भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तन्ति।

एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति[7]।

कम्मारामो भस्सरतो निद्दारामो च उद्धतो[8]।
अभब्बो तादिसो भिक्खु फुट्ठुं[9] सम्बोधिमुत्तमं॥
तस्मा हि अप्पकिच्चस्स अप्पमिद्धो अनुद्धतो[10]।
भब्बो सो तादिसो भिक्खु फुट्ठुं[9] सम्बोधिमुत्तमन्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[11] ॥१०॥

ततियो वग्गो

उद्दानं

द्वे दिट्ठि (७०, ७१) निस्सरण (७२) रूप (७३)
पुत्तो (७४) च दिट्ठेन (७५) च।
सुखा (७६) च[12] भिन्दना[13] (७७) धातु (७८)
परिहानेन (७९) ते दसाति॥

---

[1] वुत्त° केवल M. [2] सेक्खस्स, D.E. [3] सेक्खो, D.E. [4] °आरतो, B. [5] °आरतो, B.P. Pa. [6] °आरतो, Pa. [7] सेक्खस्स, D.E. [8] एतम्° केवलं M. [9] उद्दतो, B. [10] फुट्ठुं, M; फुट्ठं B.P.Pa; फुट्ठुं, C.D.E., द्र० सुत्त ३४. [11] अनुद्धतो, D.E. [12] अय° केवलं [13] च, C.; प, D.E. [14] भिन्दना, B.C.M.; भिदुरा D.E.; भिदरा, P.Pa.

चतुत्थो वग्गो

८०—वितक्क-सुत्तं [तिक. ४।१]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं[1]। तयो मे भिक्खवे अकुसलवितक्का[2]। कतमे तयो? अनवञ्ञत्तिपटिसंयुत्तो[3] वितक्को, लाभसक्कारसिलोकपटिसंयुत्तो[4] वितक्को, परानुद्दयतापटिसंयुत्तो[5] वितक्को। इमे खो भिक्खवे तयो अकुसलवितक्का[6] ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति[7]:

अनवञ्ञत्तिसंयुत्तो[8] लाभसक्कारगारवो।
सहनन्दि[9] अमच्चेहि [10]आरासंयोजनक्खया॥
यो च पुत्तं पसुं हित्वा[11] विवाहे[12] संहरानि[13] च।
भब्बो सो तादिसो[14] भिक्खु फुट्ठुं [15]सम्बोधिमुत्तमन्ति॥१॥

८१—सक्कार-सुत्तं [तिक. ४।२]

दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता सक्कारेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना[16]; दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता

[1] वुत्त° केवलं M. [2] अकुसला वि°, D.E. [3] °सञ्ञत्तो, P.Pa; °संञत्तो, D.E. [4] °सञ्ञुत्तो, P.Pa [5] परानुद्दयता°, B.M.P.; °ताय, Pa.; °सञ्ञुत्तो, P.Pa. [6] अकुसला वि, D.E.M.Pa [7] एतम्° केवलं M. [8] °सञ्ञुत्तो, D.P.Pa.; °°ञ्ञत्त°, C.; °° ञ्ञ°, E. [9] सहनन्दि D.E.M.P.Pa; °नन्ति, B; समानन्ति, C. [10] अमच्चेहि, C. [11] पुत्त, M. Aa; यो च पसुं हित्वा, D.E. [12] विवाहे, D.E.M.P. [13] सङ्कप-हानि, B.C.; सन्तहानि, B.E; सन्तह° D.; सङ्कपहानि, P.Pa; संहरानि, M.A. पाठान्तरं, किन्तु Ms. अनुद्धं A मतेन (="परिग्गहानि"), किन्तु सुन्दरतरं सङ्कप-हानि। [14] अभब्बो तादिसो C. [15] फुट्ठुं, M.; फुट्ठं, B P.Pa; फुट्ठ, C.D.E; इच्चादं सुत्तं १४. [16] उपपन्ना, D.E. सब्बेसु सुत्ते

अगारारेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं[2] उपपन्ना, दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता सक्कारेन च असक्कारेन च तदुभयेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना[3]। तं खो पनाहं भिक्खवे न अञ्ञस्स[4] समणस्स वा ब्राह्मणस्स[5] वा सुत्वा वदामि.[6] दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता सक्कारेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना, दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता असक्कारेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना; दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता सक्कारेन च असक्कारेन च तदुभयेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना; अपि च भिक्खवे यदेव मे सामञ्ञातं[7] साम दिट्ठं साम विदितं तदेवाहं वदामि दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता सक्कारेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना; दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता असक्कारेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना, दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता सक्कारेन च असक्कारेन च तदुभयेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना ति।

यस्स सक्करीयमानस्स[8] असक्कारेन चूभयं।
समाधि न विकम्पति[9] अप्पमादविहारिनो[10] ॥
तं[11] झायिनं[11] सातनिकं[12]
सुखुमदिट्ठिविपस्सकं[13]।
उपादानक्खयारामं[14] आहु सप्पुरिसो इतीति ॥१॥

---

[1] P.P2. नात्थि सब्बं दुग्गतिं इह [2] निरियं, B.P.P2. अवान्तर चेट्- ठते। [3] उपपन्ना ति, D.E.; C. नात्थि ततियं दिट्ठा.....उपपन्ना। [4] नाञ्ञस्स, M. [5] ब्रह्म°, B.P.P2. [6] M. नात्थि दुतियं इद [7] यदेव मे सामं ञातं, P.P2. [8] सक्करीय° D.; °ईय°, E.M.; सक्कारिय°, B.C.; सक्कारेय°, P.P2. [9] समाधिना वि° B.C.; विकम्पति, C.; समाधिम विकम्पति, P.P2. [10] अप्पमाद°, P.; अप्पमाद°, D.E.; अप्पमाद°, P2. [11] तम्झायिनं, P.P2. °झं, C. [12] सातनिं, M.; सातत्तिकं, C.P.P2.; सातनिं, B. [13] सुख हि°, B.C.D.E.P.M., दिट्ठिपस्सकं, B.; सुखदिट्ठि वि°, P2. [14] उपादानक्ख D.E. M.; उपादानं, B.C.; उपादानक्खय° P.P2.

८३—देवसद्द-सुत्तं [नि॰ ५।३]

तयो मे भिक्खवे देवेसु देवसद्दा निच्छरन्ति समया समयं उपादाय। कतमे तयो? यस्मिं[1] भिक्खवे समये अरियसावको केसमस्सुं ओहारेत्वा[2] कासायानि वत्थानि अच्छादेत्वा अगारस्मा अनगारियं[3] पब्बज्जाय चेतेति, तस्मिं भिक्खवे[4] समये देवेसु देवसद्दो निच्छरति: एसो अरियसावको मारेन[5] सद्धिं सङ्गामाय चेतेती ति। अयं भिक्खवे पठमो देवेसु देवसद्दो निच्छरति समया समयं उपादाय। पुन च परं भिक्खवे यस्मिं समये अरियसावको सत्तन्नं बोधिपक्खियानं[6] धम्मानं भावनानुयोगमनुयुत्तो विहरति, तस्मिं भिक्खवे समये देवेसु देवसद्दो निच्छरति: एसो अरियसावको मारेन[5] सद्धिं सङ्गामेती ति। अयं[7] भिक्खवे दुतियो देवेसु देवसद्दो निच्छरति समया समयं उपादाय। पुन च परं भिक्खवे यस्मिं समये अरियसावको आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं[8] दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं भिक्खवे समये देवेसु देवसद्दो निच्छरति: एसो अरियसावको विजितसङ्गामो, तमेव सङ्गामसीसं अभिविजिय[9] अज्झा वसती ति। अयं भिक्खवे ततियो देवेसु देवसद्दो निच्छरति समया समयं उपादाय। इमे खो भिक्खवे तयो देवेसु देवसद्दा निच्छरन्ति समया समयं उपादाया[10] ति।

> दिस्वा[11] विजितसङ्गामं सम्मासम्बुद्धसावकं[12] ।
> देवता पि नमस्सन्ति महन्तं वीतसारदं ॥
> नमो ते पुरिसाजञ्ञ[13] यो त्वं दुज्जयमज्झभू[14] ।
> जेत्वान मच्चुनो सेनं[15] विमोक्खेन अनावरं[16] ॥

[1] यस्मिं, B [2] ओहारापेत्वा, B [3] अनागा°, B Pa. [4] भि°, केवलं M. [5] मानेन, C. [6] A. पाठान्तरं °पक्खिकानं इच्च॰ सुत्त ९७ [7] अयम्पि, D.E. [8] नत्थि B इच्चस्सं ९७ च पुग्गलपञ्ञत्ति III. 1. [9] °विजय, P Pa; °विजिनिय, C.; विजाय, B. [10] इमे खो......उपादाय, नत्थि D.E.
[11] दिस्वा च, P.Pa. [12] °सम्बुद्धस्स सावकं, D. [13] °ञ्ञो, D E.; पुरिसजञ्ञा, B.
[14] अज्झभु, M. च A.; अज्झाभि, P.Pa; अभ्मागुं, C.; त्वं दुज्जयमज्झगू, B.; त्वा दुज्जयमज्झिय, D E. [15] जेत्वा मनोभुनो सेनं, M. [16] अनावरं, M.P. A. (अञ्ञेहि आवरितुं पटिसेधेतुं असक्कुनेय्यत्ता), अनासवं, C.D E; अनासवा, B. (पाठान्तरं आनसव ?).

इति देवे नमस्सन्ति देवा तावतिंसा[1] ।
तस्मिं सत्था नमस्सन्ति येन सत्थु पुरिमं गते ति ॥३॥

८३—पञ्चपुब्बनिमित्त-सुत्तं [ति॰ ३।४]

यदा भिक्खवे देवो देवकाया चवनधम्मो होति पञ्च[2] पुब्बनिमित्तानि पातुभवन्ति । माला[3] मिलायन्ति, वत्थानि किलिस्सन्ति, कच्छेहि सेदा मुञ्चन्ति[4], काये[5] दुब्बण्णियं ओक्कमति[6], सके देवो[7] देवासने नाभिरमतीति[8] । तमेनं[9] भिक्खवे देवा[10] चवनधम्मो अयं देवपुत्तोति इति विदित्वा तीहि वाचाहि अनुमोदेन्ति[11] इतो भो सुगतिं गच्छ, सुगतिं गन्त्वा सुलद्धलाभं[12] लभ,[12] सुलद्धलाभं[13] लभित्वा सुप्पतिट्ठितो भवाहीति[14] । एवं वुत्ते अञ्ञतरो भिक्खु भगवन्तं एतदवोच । किन्नु[15] खो भन्ते देवानं सुगतिगमनसङ्खातं[16], किञ्च[17] भन्ते देवानं सुलद्धलाभसङ्खातं[17], किं पन भन्ते देवानं सुप्पतिट्ठितसङ्खातं[17]न्ति ? मनुस्सत्तं खो भिक्खवे[18] देवानं सुगतिगमनसङ्खातं[17] । यं मनुस्सभूतो समानो तथागतप्पवेदिते धम्मविनये सद्धं[19] पटिलभति, इदं खो भिक्खवे[20] देवानं सुलद्धलाभसङ्खातं[17] । सा खो पनस्स सद्धा निविट्ठा[21] होति, मूलजाता पतिट्ठिता, दळ्हा असंहारिया समणेन वा ब्राह्मणेन[22] वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिं[23], इदं खो भिक्खवे[20] देवानं सुप्पतिट्ठितसङ्खातं[17]न्ति ।

यदा देवो देवकाया चवति आयुसङ्खया[17] ।
तयो सद्दा निच्छरन्ति देवानं अनुमोदतं[24] ॥

[1] सतमानसं, C.; सताम्°, B. [2] पञ्चसस, B.M.P.Pa. [3] मालानि,
B.C. [4] मुञ्चन्ति, D.E.; अट्ठकथाहसनेसे । [5] काय, D.E. [6] °अन्ति,
C.D.E. [7] स्य॰ C. [8] इति स्य॰ D E. [9] तमेनं, B.; तमेन, P.;
तमे, D.E.; कतमो, C.Pa. [10] देवो, C.D.E. [11] अनुमोदेन्ति, B.
C. M. [12] नात्थि C.Pa.; सु सुगति गन्ता लद्ध लाभं, B. (नात्थि लाभ).
[13] सुलद्ध ल°, B. [14] भगवाहीति, B.; भवाहि, C [15] कि नु, B M.
P.Pa. [16] °संख°, C.D.E. [17] किञ्च, M.; किञ्चि, C.D.E.P.
Pa.; किञ्चि, B. [18] भिक्खु, B.C.M.P. [19] सद्दं, B.; सद्धं, C
[20] भिक्खु, M. [21] निविट्ठा, B. [22] ब्रह्म°, B P.Pa. [23] लोकस्मिन्ति,
B.C.M. [24] अनुमोदयं, B.C.M.

इतो भो सुगतिं[1] गच्छ मनुस्सानं सहब्यतं[2]।
मनुस्सभूतो[3] सद्धम्मे लभ सद्धं अनुत्तरं॥
सा[4] ते सद्धा निविट्ठस्स[5] मूलजाता पतिट्ठिता।
यावजीवं असंहीरा सद्धम्मे सुप्पवेदिते॥
कायदुच्चरितं हित्वा वचीदुच्चरितानि च।
मनोदुच्चरितं हित्वा यञ्चञ्ञं दोससंहितं[6]॥
कायेन कुसलं कत्वा वाचाय कुसलं बहुं।
मनसा कुसलं कत्वा अप्पमाणं निरूपधिं[7]॥
ततो ओपधिकं[8] पुञ्ञं कत्वा दानेन तं बहुं।
अञ्ञे पि मच्चे सद्धम्मे ब्रह्मचरिये निवेसये[9]॥
इमाय अनुकम्पाय देवा देवं यदा[10] विदू।
चवन्तं[11] अनुमोदन्ति[12] एहि देव पुनप्पुनन्ति[13]॥४॥

८४—लोक-सुत्तं [ति. ४।६]

तयो मे पुग्गला लोके उप्पज्जमाना उप्पज्जन्ति बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय,[14] अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं। कतमे तयो? इध भिक्खवे तथागतो लोके उप्पज्जति अरहं, सम्मासम्बुद्धो, विज्जाचरणसम्पन्नो, सुगतो, लोकविदू, अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथि, सत्था देवमनुस्सानं, बुद्धो भगवा।[15] सो धम्मं देसेति आदिकल्याणं मज्झेकल्याणं परियोसानकल्याणं

[1] सुगति, P. [2] सहव्यतं, B.C.M.P.Pa. [3] °भूते, B.C. [4] सो, D.E.; सा, C. [5] निविट्ठस्सा ति निविट्ठा भवेय्य, A; निविट्ठस्स, D.E. [6] संहितं, D.E.M; संहि°, B. म० सुत्तं ३१ [7] नास्ति० सत्रि केवल A. निरुपधिन्ति निरुपधि ञाने क, C.D.E.M [8] ओपधिकं, C.M.P.A; उपधिकं, D.E.Pa; उपधिनं, B; Pa. अशुद्ध (ओपधिकं?) इते प्राह ततो ओपदुपधिकं। [9] निवेसये, B.C.; निवेसय, D.E.; निवेसयं, Pa. (P.?) [10] सदा, C. [11] चवनं, D.E. [12] अनुमोदेन्ति, C.M. [13] पुनपु,° P.Pa; पुनपुन,° B; एहि मेहि, D.E. [14] °कम्पकाय, D.E. [15] भगवाति, D.E.

सात्थं[1] सब्यञ्जनं[2] केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं पकासेति। अयं भिक्खवे पठमो पुग्गलो लोके उप्पज्जमानो उप्पज्जति बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय, अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं। पुन च परं भिक्खवे तस्सेव सत्थु सावको अरहं होति खीणासवो वुसितवा कतकरणीयो ओहितभारो अनुप्पत्तसदत्थो परिक्खीणभवसंयोजनो सम्मदञ्ञाविमुत्तो[3]। सो[4] धम्मं देसेति आदिकल्याणं मज्झेकल्याणं परियोसानकल्याणं, सात्थं। सब्यञ्जनं[5] केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं पकासेति। अयम्पि भिक्खवे दुतियो पुग्गलो लोके उप्पज्जमानो उप्पज्जति बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय, अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं, पुन च परं[6] भिक्खवे तस्सेव सत्थु सावको सेखो[7] होति पाटिपदो बहुस्सुतो सीलवतूपपन्नो[8]। सोपि धम्मं देसेति आदिकल्याणं मज्झेकल्याणं परियोसानकल्याणं, सात्थं। सब्यञ्जनं[9] केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं पकासेति। अयम्पि भिक्खवे ततियो पुग्गलो लोके उप्पज्जमानो उप्पज्जति बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय, अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं[10]। इमे खो भिक्खवे तयो पुग्गला लोके उप्पज्जमाना उप्पज्जन्ति बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय, अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानन्ति[11]।

सत्था हि लोके पठमो महेसि तस्सन्वयो सावको भावितत्तो।
अथापरो पाटिपदो पि सेखो[12] बहुस्सुतो सीलवतूपपन्नो[13]॥
एते तयो देवमनुस्ससेट्ठा[14] पभङ्करा[15] धम्ममुदीरयन्ता[16]।
अपावुणन्ति[17] अमतस्स द्वारं योगा पमोचेन्ति[18] बहुजनं[19] ते[19]॥

[1] सत्थं, M.P.; द्वितीयपदस्तो Pa. [2] °ब्यञ्ज°, B.M.P.Pa. [3] सम्माद°, B.P.Pa. [4] सो, C. [5] °ब्यञ्ज°, B.C.M.Pa. [6] पुनचरं, P.Pa. [7] सेक्खो, D.E. [8] °वतुपप°, B.P. [9] °ब्यञ्ज°, B.C.M.P.Pa. [10] °मनुस्सानन्ति, D.E. [11] C. नात्थि (इमे ..... °मनुस्सानन्ति), योजपतिअशुद्धः उप्पज्जमानो उप्पज्जति। [12] सेक्खो, D.E. [13] °उपप°, B. [14] °मनुस्सा स°, B.D.E. [15] पभङ्क°, B.M.P.Pa. [16] उदिरयन्ता, M.; °ईरियन्तो, D.E.;—उदिस्सयन्तो, C.;—उनिद्दिस्सयन्तो, B.;—उदिवस्सन्तो, P.; उदिवंसन्तो, Pa. [17] अपावुणन्ति ननु; अपापुणन्ति, B.; अपापुनेन्तीति उग्घाटेन्ति, A.; अपापुरेन्ति, M.; अपापुरन्ति, C.D.E.P.Pa. [18] पमोचेन्ति, P.Pa.; पमोचन्ति, C.D.E ; पमुच्चन्ति, B.M. [19] बहुजनं ते, Pa.; °जनन्ते, B.; °ज्जनन्ते, M.; °जण ते, D ; °जना ते, C.E. च P.?).

[illegible]
[illegible] ॥४॥

८५—असुभ-सुत्तं [तिक. ५।६]

असुभानुपस्सी[1] भिक्खवे कायस्मि विहरथ, आनापानस्सति[2] च वो[3] अज्झत्तं परिमुखं सूपट्ठिता[4] होतु[5] [illegible] अनिच्चानुपस्सिनो विहरथ[6]। असुभानुपस्सीनं भिक्खवे कायस्मि विहरतं[7] यो सुभाय धातुया रागानुसयो सो पहीयति[8]। आनापानस्सतिया[10] अज्झत्तं परिमुखं सूपट्ठिताय[11] ये [illegible]

[illegible] विहरतं[13] [illegible] पहीयति[14], [illegible] सा उप्पज्जतीति।

असुभानुपस्सी कायस्मि आनापाने[15] पटिस्सतो[16]।
सब्बसङ्खारसमथं पस्सं[18] आतापी[19] सब्बदा ॥
स वे[17] सम्मद्दसो[18] भिक्खु यतो तत्थ विमुच्चति।
अभिञ्ञावोसितो सन्तो स वे[19] योगातिगो[20] मुनीति ॥५॥

८६—धम्म-सुत्तं [तिक. ४।७]

धम्मानुधम्मपटिपन्नस्स भिक्खुनो अय[21]मनुधम्मो होति, वेय्याकरणाय[22] धम्मानुधम्मपटिपन्नो, पन्ति,[23] भासमानो धम्मञ्ञेव भासति नो अधम्मं,

[1] सत,° C.D E.P. [2] अनुपस्सति, M. [3] आनापाना सु°, B. [4] °सति वो, D.E.; °सति ते, C. [5] सु°, सर्वत्र; सुपतिट्ठिता, B C.P. [6] होतु ति, P.&Pa; होति, C.; होथ, M; होन्ति, B. [7] विहरथ, P.Pa.; नास्ति B C.D.E. [8] विहरथ, B. [9] पहिय्यति, B M P.Pa; पहिय्यति, C. [10] आनापानाम°, B. [11] सु° सर्वत्र; सुपतिट्ठिताय, B C.Pa. [12] °आनिया, B C.; विलक्खा विसया, D.E. [13] आनापान, D; आनापान, E. [14] °पहिय्यति, C; पहिय्यति, B M P Pa. [15] °ने, D E.M.; [16] °पतिस्सतो, D E.; पतिस्सतो, B C. [17] °इ सर्वत्र हस्तलेखे, B.C.P.Pa. [18] सम्मद्दसो, M.P.Pa; सम्म°, B.; सम्मदसो, C.; समद्दसो, D E. [19] स वे योगातिगो, D E.; स वे योगातिगो, P; °गा, C. चरमा योगाति (नास्ति मो मुनीति), Pa; °सङ्गातिगो, B.M.; [20] नास्ति P.Pa. [21] °करणस्स, C.; गाथा तु सुत्ते ५१ च ७२ [22] धम्मानुधम्मपटिपन्नो, यन्ति केवलं M. च Aa, °करणीयं, P.Pa.

न संख्या० येषु हस्त

वितक्कयमानो वा[1] धम्मवितक्कञ्ञेव वितक्केति नो अधम्मवितक्कं, तुण्हीभावं अभिनिवज्जेय्या[2] उपेक्खको[3] विहरति सतो सम्पजानो ति।

धम्मारामो धम्मरतो धम्मं अनुविचिन्तयं[4]।
धम्मं अनुस्सरं भिक्खु सद्धम्मा न परिहायति[5] ॥
चरं[6] वा यदि वा तिट्ठं निसिन्नो उदवा सयं।
अज्झत्तं समयं चित्तं सन्तिमेवाधिगच्छतीति ॥३॥

८७—अन्धकार-सुत्तं [तिक. ४।८]

तयो-मे भिक्खवे अकुसलवितक्का[7] अन्धकरणा अचक्खुकरणा अञ्ञाणकरणा पञ्ञानिरोधिका[8] विघातपक्खिका अनिब्बानसंवत्तनिका।[10] कतमे तयो? कामवितक्को भिक्खवे अन्धकरणो अचक्खुकरणो अञ्ञाणकरणो पञ्ञानिरोधिको विघातपक्खिको अनिब्बानसंवत्तनिको। ब्यापादवितक्को[9] भिक्खवे अन्धकरणो अचक्खुकरणो अञ्ञाणकरणो पञ्ञानिरोधिको[9] विघातपक्खिको अनिब्बानसंवत्तनिको। विहिंसावितक्को भिक्खवे अन्धकरणो अचक्खुकरणो अञ्ञाणकरणो पञ्ञानिरोधिको[10] विघातपक्खिको अनिब्बानसंवत्तनिको। इमे खो भिक्खवे तयो अकुसलवितक्का[7] अन्धकरणा अचक्खुकरणा अञ्ञाणकरणा पञ्ञानिरोधिका विघातपक्खिका अनिब्बानसंवत्तनिका। तयो-मे भिक्खवे कुसलवितक्का[11] अनन्धकरणा चक्खुकरणा ञाणकरणा पञ्ञावुद्धिका[10] अविघातपक्खिका निब्बानसंवत्तनिका। कतमे तयो? नेक्खम्मवितक्को[11] भिक्खवे अनन्धकरणो चक्खुकरणो ञाणकरणो पञ्ञावुद्धिको[8] अविघातपक्खिको निब्बानसंवत्तनिको। अब्यापादवितक्को[9] भिक्खवे अनन्धकरणो चक्खुकरणो ञाणकरणो पञ्ञावुद्धिको अविघातपक्खिको निब्बानसंवत्तनिको। अविहिंसावितक्को भिक्खवे अनन्धकरणो चक्खुकरणो ञाणकरणो पञ्ञावुद्धिको[8] अविघातपक्खिको

[1] घन, D E.P.Pa. [2] अभिनिवज्जेय्या, B.M. P.Pa.; अभिरमेय्या, C.; अभिनिवज्ज°, D. E.; A. अभिनिवतेय्या, व्याख्याति ······ अवरत्या। [3] उपेक्खको, D. E. [4] °चिन्तयं, C.; चिन्तरं, B [5] परिहायीति, D.E. [6] चरं, D E.; गाथा यायूर्वाई सुत्ते ११० अट्ठा-निर, निपाते ११ [7] अकुसला वि°, D. E.P.Pa. [8] पञ्ञा°, C. [9] सति ख्य°। [10] सञ्ञा° B.C [11] इमा, P.Pa. [12] कुसला वि°, D.E. [13] निक्ख°, B.C.; निक्खम°, M.

निब्बानसंवत्तनिको। इमे खो भिक्खवे तयो कुसलवितक्का[1] अनन्धकर
चक्खुकरणा ञाणकरणा पञ्ञावुद्धिका[2] अविघातपक्खिका निब्बानसंवु
निकाति।

तयो वितक्के[3] कुसले वितक्कये[4] तयो पन अकुसले निराकरे[5]।
स वे[6] वितक्कानि[7] विचारितानि[7] समेति वुट्ठिव[8] रजं[8] समूहतं।
स वे[9] वितक्कूपसमेन[10] चेतसा इधेव सो सन्तिपदं समज्झगाति[11] ॥८॥

८८—मल-सुत्तं [तिक, ४।६]

तयोमे भिक्खवे अन्तरा मला अन्तरा अमित्ता अन्तरा सपत्ता अन्तरा वधका
न्तरा पच्चत्थिका। कतमे तयो? लोभो भिक्खवे अन्तरा मलो अन्तरा अमित्तो
न्तरा सपत्तो अन्तरा वधको अन्तरा पच्चत्थिको। दोसो भिक्खवे अन्तरा मलो
न्तरा अमित्तो अन्तरा सपत्तो अन्तरा वधको अन्तरा पच्चत्थिको। मोहो भिक्खवे
न्तरा मलो अन्तरा अमित्तो अन्तरा सपत्तो अन्तरा वधको अन्तरा पच्चत्थिको।
मे खो भिक्खवे तयो अन्तरा मला अन्तरा अमित्ता अन्तरा सपत्ता अन्तरा
धका अन्तरा पच्चत्थिका ति।

अनत्थजननो लोभो लोभो चित्तप्पकोपनो[12]।
भयमन्तरतो जातं तं जनो नावबुज्झति॥
लुद्धो अत्थं न जानाति लुद्धो धम्मं न पस्सति।
अन्धं[13] तमं[13] तदा होति यं लोभो सहते नरं॥

[1]कुसला वि°, D.E. [2]सञ्ञा°, C. [3]वितक्कये, P. [4]वितक्कये, M.Aa. वितक्के, B.C.D.E.P.Pa. [5]निरामरे, C. [6]चे, B.C.M.; Om. Pa. [7]विचारितानि, M.; विहरितानि, D.E.; विचारितानि, B.C.P.Pa; C. घोस्सते ता; B Pa. add तानि, वितक्कानि इति सद्देन इतर०.; वितक्क, विचार, वितक्कितं, विचारितं संयुज्यते सद्दजालसुत्तं, ed Grimblot, p. 46 (स० अट्ठकथा P.T.S. 1886 p. 121) [8]वुट्ठीव, M.; वुट्ठिव, D.E.P; वुद्धिविरजं, B.C.; वुत्तिविरजं, Pa. [9]चे, B.C.M. [10]वितक्कुप°, B.M.P.Pa; वितक्कप्°, D.E.; B. adds च [11]समज्झगा ति, B. [12]चित्त°, M. [13]अन्धतम, B.M.P.

यो च लोभं पहन्त्वान[1] लोभनेय्ये न लुब्भति।
लोभो पहीयते[2] तम्हा[3] उदबिन्दु[4] व पोक्खरा॥
अनत्थजननो दोसो दोसो चित्तप्पकोपनो[5]।
भयमन्तरतो जातं तं जनो नावबुज्झति॥
दुट्ठो अत्थं न जानाति दुट्ठो धम्मं न पस्सति।
अन्धं[6] तमं[6] तदा होति यं दोसो सहते नरं॥
यो च दोसं पहन्त्वान[1] दोसनेय्ये न दुस्सति।
दोसो पहीयते[2] तम्हा[3] तालपक्कं[7] व[7] बन्धना॥
अनत्थजननो मोहो मोहो चित्तप्पकोपनो[5]।
भयमन्तरतो जातं तं जनो नावबुज्झति॥
मूळ्हो अत्थं न जानाति मूळ्हो धम्मं न पस्सति।
अन्धं[6] तमं[6] तदा होति यं मोहो सहते नरं॥
यो च मोहं पहन्त्वान[9] मोहनेय्ये न मुय्हति।
मोहं विहन्ति सो सब्बं आदिच्चो वुदयं[10] तमन्ति॥१॥

८९—देवदत्त-सुत्तं [ति. ३।१०]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं[11]। तीहि भिक्खवे असद्धम्मेहि अभिभूतो परियादिन्नचित्तो[12] देवदत्तो आपायिको[13] नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। कतमेहि तीहि? पापिच्छताय भिक्खवे अभिभूतो परियादिन्नचित्तो[14] देवदत्तो आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। पापमित्तताय भिक्खवे अभिभूतो

[1] पहत्वाना D E. Aa. [2] पहियते, B.C.M. [3] तम्हा, D.E.Aa., तस्मा, B.C.M.P.Pa. [4] उदकव्°, B [5] चित्तप°, M. [6] अन्धतमं, B M.P. [7] तालपक्कं व, M.; °पक्कमिव अन्यत्र ह° [8] होति, D.E. [9] पहत्वान, D.E. [10] वुदय, B.P.Pa.; वुधयं, C.; उदयं, D E. [11] गमन्ति, D.E. [12] वुत्तं°, एतमत्थं° केवल in M. सर्वत्र परियादिण्ण° अस्मिन् सूत्रे, अन्यत्र ह० सद्द इ अन्यदा ण्ण, [13] B., M. [14] अपाप°, B.C.P. Pa.

परियादिन्नचित्तो[1] देवदत्तो आपायिको[2] नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। सति
सो पन उत्तरिकरणीये[4] ओरमत्तकेन[5] विसेसाधिगमेन[6] च अन्तरा वोसान
मापादि[7]। इमेहि[8] खो भिक्खवे तीहि असद्धम्मेहि अभिभूतो परियादिन्न-
चित्तो[9] देवदत्तो आपायिको[9] नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो ति। एतमत्थ
गवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति[10]:

मा जातु कोचि लोकस्मिं पापिच्छो उपपज्जथ[11]।
तदमिना[13]पि जानाथ पापिच्छानं यथा गति॥
पण्डितो ति समञ्ञातो[12] भावितत्तो[13] ति सम्मतो।
जलं[14] व यससा अट्ठा[15] देवदत्तो ति मे सुतं॥
सो पमादमनुचिण्णो[16] आसज्ज[17] नं तथागतं।
अवीचिनिरयं पत्तो[18] चतुद्वारं भयानकं॥
अदुट्ठस्स हि यो[19] दुब्भे[20] पापकम्मं अकुब्बतो[21]।
तमेव पापं फुसेति[22] दुट्ठचित्तं अनादरं॥
समुद्दं[23] विसकुम्भेन[24] यो मञ्ञेय्य पदूसितुं।
न सो[25] तेन पदूसेय्य भस्मा[26] हि उदधि[27] महा[28]॥
एवमेव[29] तथागतं यो वादेन विहिंसति[30]।

[1] अपाय्°, C.D.E.P.Pa. [2] अपाय्°, C.D P.Pa. [3] तति, D E.M. तिहि, B.P.Pa ; तीहि, C. [4] उत्तरक्°, D.E , उत्तरिकरणियेन, P.Pa. [5] °मत्तके, D. E. [6] °धिगमेन, C. [7] आपादि, D.E.Aa.; आपादि, C.; आपज्जि, B.; आपज्जति, M. [8] इमे, B C.M. [9] अपाय्°, C.D.Pa. [10] उपपज्जति, M. [11] तदामिना, B. [12] समञ्ञातो, Pa.; सामञ्ञातो, B. [13] °अत्तो, B C. [14] जालं, B C. [15] अट्ठा, M ; अट्ठा, B.C.P.Pa Aa. (व्याख्यायते टीको); अत्था, D E. [16] पमादम्, D.E.P.Pa ; पमादं, B.C.; अनुचिण्णो, C ; पमादमनुचिण्णो, M.Aa. किन्तु A. पुस्तके पमादमनुयुञ्जि इति पाठान्तरं [17] आपज्ज, B.C.Aa.; आसज्ज, M.P.Pa ; आसज्ज, D E. [18] पुत्तो, C. [19] सो, C. [20] दुब्भे,D.E.M.P. Pa ; दुब्भो B C.; दुब्भो, (?) दि दुब्भेय्य A. [21] अकु- ब्बतो, B.C. [22] फुसेति, C. (फस्सेति इति स्थाने); फुसेति, P.Pa ; फुसति, B.; फुसति, D E.M. [23] समुद्द, B ; समुद्द, C. [24] वीस°, M ; विसकुम्भेन, B ; वीसकुम्भेन, C. [25] सो, C. [26] भस्मा (?) D.E.M. [27] उदधी, C.D E.M.; °इ, B P.Pa [28] महा, B. [29] एवमेव, M. [30] विहिंसति, C; विहिंसति, P.

पंचमो वग्गो

९०—पसाद-सुत्तं [तिक. ५।१]

*वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं[1]। तयो मे भिक्खवे अग्गप्प
सादा[2]। कतमे तयो? यावता भिक्खवे[3] सत्ता अपदा[4] वा द्विपदा वा
चतुप्पदा[6] वा बहुप्पदा[7] वा रूपिनो वा अरूपिनो वा सञ्ञिनो वा असञ्ञिनो
वा नेवसञ्ञिनासञ्ञिनो वा, तथागतो तेसं अग्गमक्खायति यदिदं अरहं
सम्मासम्बुद्धो। ये भिक्खवे बुद्धे पसन्ना अग्गे ते पसन्ना, अग्गे खो पन पसन्नानं
अग्गो विपाको होति। यावता भिक्खवे धम्मा सङ्खता वा असङ्खता वा विरागो तेसं
अग्गमक्खायति, यदिदं मदनिम्मदनो[9] पिपासविनयो आलयसमुग्घातो वट्टुपच्छेदो
तण्हक्खयो विरागो निरोधो निब्बानं[10]। ये भिक्खवे विरागे धम्मे पसन्ना अग्गे ते
पसन्ना, अग्गे खो पन[11] पसन्नानं अग्गो[12] विपाको होति। यावता भिक्खवे सङ्घा
वा गणा वा, तथागतसावकसङ्घो[13] तेसं अग्गमक्खायति, यदिदं चत्तारि[14]
पुरिसयुगानि[15] अट्ठ पुरिसपुग्गला, एस भगवतो सावकसङ्घो आहुनेय्यो[16]
पाहुणेय्यो[17] दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो[18] अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं[19]
लोकस्स[20]। ये भिक्खवे सङ्घे पसन्ना अग्गे ते पसन्ना, अग्गे खो पन[21]
पसन्नानं[21] अग्गो[22] विपाको होति। इमे खो भिक्खवे तयो अग्गप्पसादा[23] ति।
एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति

[1]वुत्तं°, एतमत्थं°, मयापि, केवल M [2]अग्ग° भिक्खु°, नत्थि C
[3]अपादा, P Pa [4]द्विप°, D I [5]चतुप्पदा, B M, नत्थि C
[6]बहुपदा, B M [7]नत्थि B C M P Pa [8]नत्थि D E
[9]°निम्मदनो, B C D I, मदनिम्मदनो, P Pa [10]°निब्बानन्ति,
B.M. [11]नत्थि C [12]अग्गो, C [13]तथागतस्स सावकसंघो, B
[14]नत्थि B C [15]°युगानि, B [16]आहुनेय्यो°, B I Pa [17]पाहुन°,
C.D.M P [18]°इयो, B M, °इयो, P Pa [19]पुञ्ञक्खेत्त B
[20]लोकस्सा ति, D E [21]नत्थि B [22]अग्गप्प°, B C M
[23]एतमत्थं,° केवलं M

*संपूर्ण सुत्तं अङ्गु०—निपा० चतुक्कनिपाते ३४

[निपा० ५।१]

पदुट्ठमनसङ्कप्पो मुट्ठस्सति[1] असम्पजानो असमाहितो विभन्तचित्तो पाकतिन्द्रियो। सेय्यथा पि भिक्खवे छवालातं उभतो पदित्तं मज्झे गूथगतं[2] नेव गामे कट्ठत्थं[3] फरति[4] न अरञ्ञे तथूपमाहं भिक्खवे इमं पुग्गलं वदामि, गिहिभोगा[5] च परिहीनो सामञ्ञत्थञ्च न परिपूरेतीति।

गिहिभोगा च परिहीनो सामञ्ञत्थञ्च दुब्भगो[6]।
परिधंसमानो[7] पकिरेति[8] छवालातं व[9] नस्सति॥
सेय्यो अयोगुळो[10] भुत्तो तत्तो अग्गिसिखूपमो।
यञ्चे भुञ्जेय्य दुस्सीलो रट्ठपिण्डं असञ्ञतोति॥२॥

६२—संघाटि-सुत्तं [तिक. ६।१]

सङ्घाटिकण्णे[11] चे[11] पि भिक्खवे

भिक्खु[12] गहेत्वा पिट्ठितो[13] अनुबन्धो अस्स पदे पादं निक्खिपन्तो सो च होति अभिज्झालू[14] कामेसु तिब्बसारागो[15] ब्यापन्नचित्तो[16] पदुट्ठमनसङ्कप्पो मुट्ठस्सति असम्पजानो असमाहितो विभन्तचित्तो पाकतिन्द्रियो, अथ खो सो आरका व[16] मय्हं अहञ्च तस्स। तं किस्स हेतु? धम्मं हि सो भिक्खवे भिक्खु न पस्सति धम्मं अपस्सन्तो[17] न[18] मं[18] पस्सति। योजनसते चे पि सो[19] भिक्खवे

[1]मुट्ठस्सति, M. [2]गूथ, B. गूथ°, P.Pa. [3]कट्ठत्थं, C. [4]फरति, C.P. [5]गिही°, C.E; गीहि°, B [6]दुब्भगो, Aa; दुभगो, B.; दुभगो, D.E. (क्रमेण सर्वं E.), दुभगो, ., दुब्भगो, M., दुब्भति, Pa; °ति, C. [7]परिधंस°, D E M.P.Pa; परिधंसमानो पि विद्धंसमानो, A.; परिधंसं, B; परिधंसं, C. [8]°पकिरे°, C M; पकिरे°, B [9]च, M.; व, C.D.E; °लातञ्च, B.P. अयोगुळ, ... [illegible] नत्थि [10]°गुळो, C D E, गुळो, P.; गुळो, B M Pa — द्वितीया गाथा ४८ सुत्तेपि [11]चे नत्थि D.E, सङ्घाटिकण्णेचे, C.

[12]भिक्खुनो, B. [13]पिट्ठितो पिट्ठितो, C, cp. [illegible] Grimblot, p. 2. [14]°लु, B D P.Pa, C [illegible] [15]तिब्ब°, B P Pa; [illegible], C D E [illegible] ब्य°, (इ० सु० ११) [16]व, B [17]°पस्सं, B [18]न म D E Pa [19]सो, D E P Pa.

...॥

६३—अग्गि-सुत्तं [तिइ. ३।५]

तयो मे भिक्खवे अग्गी[19]। कतमे तयो? रागग्गि, दोसग्गि, मोहग्गि
इमे खो भिक्खवे तयो अग्गीति।
रागग्गि[20] दहति[21] मच्चे[22] रत्ते[23] कामेसु मुच्छिते।
दोसग्गि पन व्यापन्ने[24] नरे पाणातिपातिनो[25] ॥

[1] °लू, E.; °लू, अन्यत्र ह० [2]तिप्प°, B.C.P Pa. D.E. विहाय सर्वत्र थ्य°, [3]अपद्रु°, B.C.M. [4]संवुतिन्द्रियचित्तो, B.C. [5]अहन्वस्स, M.; अहञ्च, B. [6]नास्ति B. [7]महिन्नो, C. [8]च, B.D.E.M. [9]ओजानुगो, D.E.; एजादासो, M.; एजामा, C. [10]°विद्धो, C [11]Pa. इह तृतीय गाथायाः चरम पाद, स्यन्यन्तेऽन्तर्रिकाः [12]सो, C.M. [13]रहदो उपनिवातो व, P.; बहदो उपनिवातो च, B.C.; दहदो वुपनिवातो, M. (व-च योर्वा विना); रहदो च निवातो च, D.E; A. व्याख्याति निवातट्ठाणे रहदो विय। [14]अनेजा, B.C. [15]निब्ब° स निब्ब, M.; निब्बुनस्स अनिब्बुतो, B.C.P. [16]अगिद्धो सो, B.M.; अविद्धो सो, C.P. [17]अग्गी, M.; अन्यत्र ह० °इ। [18]रागक्खि दहति, C. [19]मच्चो, B.C. [20]रत्तो, B. C. [21]D. E. विहायान्यत्र ह० इर°; व्यापन्नो, B. C. [22]°पातिने, C; °पातने, B; °पातिके, P. Pa.

मोहग्गि पन सम्मूळ्हे[1] अरियधम्मे अकोविदे[2]।
एते अग्गी अजानन्ता[3] सक्कायाभिरता पजा॥
ते वड्ढयन्ति[4] निरयं तिरच्छानञ्च योनियो[5]।
असुरं पेत्तिविसयञ्च[6] अमुत्ता मारबन्धना[7]॥
ये च[8] रत्तिं दिवा युत्ता सम्मासम्बुद्धसासने।
ते निब्बापेन्ति रागग्गिं[9] निच्चं असुभसञ्ञिनो॥
दोसग्गिं[10] पन मेत्ताय निब्बापेन्ति नरुत्तमा।
मोहग्गिं[9] पन पञ्ञाय[11] यायं[12] निब्बेधगामिनी[13]॥
ते निब्बापेत्वा निपका रत्तिन्दिवमतन्दिता[14]।
असेसं परिनिब्बन्ति असेसं दुक्खमच्चगुं[15]॥
अरियद्दसा[16] वेदगुनो[17] सम्मदञ्ञाय पण्डिता।
जातिक्खयम्[18] अभिञ्ञाय नागच्छन्ति पुनब्भवन्ति॥४॥

६४—उपपरिक्खय-सुत्तं [तिक. ५।६]

तथा[19] तथा[19] भिक्खवे भिक्खु

[1]सम्मूळ्हे, B. Pa.; सम्मूळ्हो, D.E.; सं°, C.P. (व); सम्मूळ्हो, B. [2]अकोविदो, C.D.E.; °विदे, P.; °विदो, B. [3]अजानन्तो, P.Pa. [4]वड्ढयन्ति, M.; वड्ढन्ति (?), Pa; वड्ढयन्ति, P.; वड्ढियन्ति, C. [5]योनियो, P.Pa; योनियो, C.

[6]असुरं (=असुरनिकायं ?), D.E.M.P.; असुरे, B.Pa; असुर°, C; [illegible] B.C.M.P.Pa.; °विसयं, [illegible] M. [7]°बन्धना, B [8][illegible] C. [9]°ग्गिं, M.; [illegible] [10]°ग्गिं, M., °ग्गी, D.E., [illegible] [11][illegible] C. [12][illegible] D.E. [13]°गामिनं, M. [14][illegible] B. [15]°च्चगुं, M.; [illegible], C., [illegible], B., [illegible], D.E.P.; [illegible], Pa. [16]अरियद्दसा, M.P.; अरियद्दसा, D.E.; अरियद्दसो, B.C.; [illegible], Pa.; A. [illegible] ([illegible] A.) [illegible] सुत्तं १५ [illegible] [17]°गुनो, D.E.P.; [illegible], B.; [illegible] C. [18]°यं, M. [illegible] [19]तथागतो, C.

उपपरिक्खेय्य[1], यथा यथा[2] उपपरिक्खतो[3] बहिद्धा चस्स[4] विञ्ञाणं अविक्खित्तं[5] होति अविसटं[6] अज्झत्तं असण्ठितं[7] अनुपादाय[8] अपरितस्सतो आयतिं[9] जातिजरामरणदुक्खसमुदय—सम्भवो न होतीति।

सत्तसङ्गप्पहीनस्स[10] नेत्तिच्छिन्नस्स भिक्खुनो।
विक्खीणो[11] जातिसंसारो नत्थि तस्स पुनब्भवोति॥ ५॥

९५—उपपत्ति-सुत्तं [तिक. ५।६]

तिस्सो इमा भिक्खवे कामूपपत्तियो[12]। कतमा तिस्सो? पच्चुपट्ठित-कामा[13] निम्मानरतिनो परनिम्मितवसवत्तिनो[14]। इमा खो भिक्खवे तिस्सो[15] कामूपपत्तियो[12] ति।

पच्चुपट्ठितकामा च ये देवा वसवत्तिनो।
निम्मानरतिनो देवा येचञ्ञे कामभोगिनो॥
इत्थभावञ्ञथाभाव[16] कामभोगेसु पण्डितो[17]।
सब्बे परिच्चजे[18] कामे ये[19] दिब्बा ये च मानुसा॥
पियरूपसातगधितं[20] छेत्वा सोतं[21] दुरच्चयं[22]।
असेसं परिनिब्बन्ति असेसं दुक्खमच्चगु[23]॥
अरियद्दसा[24] वेदगुनो[25] सम्मदञ्ञाय पण्डिता।
जातिक्खयम[26]भिञ्ञाय ना गच्छन्ति पुनब्भवन्ति॥ ६॥

---

[1] उपपरिक्खेय्य, B.; उपपरिक्खेय्यं, P.Pa. [2] यथा यथायं, D.E.; यथा ययस्सुपपरिक्खतो, P.Pa. [3] °क्खितो, C.; °क्खत्तो, B. [4] पस्स, D E. [5] विक्खि°, C. [6] अविसतं, B.; °टं, C. [7] असण्ठिता, D.E.; असण्डितं, P. [8] अनुप्पा°, C. [9] आयति, M; अन्येषु इ° °इ, [10] तत्यसङ्ग°, C. [11] विक्खनो, C. [12] कामुप, ° E. [13] °कामो, B.C. [14] परनिम्मितवस्स°, B. [15] नास्ति B. C. [16] इत्थिभा,° C.; न इत्य,° B. [17] सण्डिता, D.E. [18] परिचजे, B.; परिच्चजे, P. [19] ये च दिप्पा, P.Pa.; ते निब्बा, C.

[20] *°सातगोधतं, B.M.; cp उदानं II.7. पियरूपसातगधिता वे देवकाया पुथुमनुसा च*; °साताधितं, C.; °सातरामितं, B.; °सातरूपगोधनं, D.E. P. Pa; Aa. अपि इ० सु० १०९ [21] हेतं दुच्चरयं, C. [22] अज्जगुं, B.; अज्झगु, D.E.; इ० सुत ९३ [23] अरियद्दसा, B.D.E.M P.Pa.; अरियन्तसा, C.; इ० सु० ९३ गाथा पश्च संव [24] °गुणो, C.E.; °गुणा, B. [25] °मु M; शेषेषु इ० [26]कामरागयुत्तो, B.

९६—काम-सुत्तं (तिर. ६।७)

कामयोगयुत्तो[1] भिक्खवे भवयोगयुत्तो आगामी[2] होति आगन्ता इत्थत्तं[3], कामयोगविसञ्ञुत्तो[4] भिक्खवे भवयोगयुत्तो[5] अनागामी[6] होति अनागन्ता[7] इत्थत्तं, कामयोगविसञ्ञुत्तो भिक्खवे भवयोगविसञ्ञुत्तो[8] अरहा[9] होति खीणासवो ति।

> कामयोगेन सञ्ञुत्ता[11] भवयोगेन चूभयं।
> सत्ता[12] गच्छन्ति संसारं जातिमरणगामिनो[12]॥
> ये च कामे पहन्त्वान[13] अप्पत्ता आसवक्खयं[14]।
> भवयोगेन सञ्ञुत्ता[15] अनागामीति वुच्चरे॥
> ये च खो छिन्नसंसया[16] खीणमानपुनब्भवा।
> ते वे[17] पारंगता[18] लोके ये पत्ता[19] आसवक्खयन्ति॥७॥

सत्तमं[20]।

९७—कल्याण सुत्तं (तिर. ६।८)

कल्याणसीलो भिक्खवे भिक्खु कल्याणधम्मो कल्याणपञ्ञो इमस्मिं धम्मविनये केवली[21] वुसितवा उत्तमपुरिसो ति वुच्चति। कथञ्च भिक्खवे भिक्खु

[1] आगामी, M ; अनागामि, B.C.D.E ; अयो आगामि, P ; अयोआगामि, Pa [2] आगन्ता, केवलं M., सेसेसु ह० आगन्त्वा, A. अपि (आगमनधम्मो—इति वुत्ति) [3] इत्थत्तं, C.P. [4] योगसञ्ञुत्तो, C. [5] °योगविसंयुत्तो, B.C.P. Pa. [6] °इ, केवलं M.; सेसेसु ह० °इ, [7] अनागन्ता, केवलं M.; अनागता, B.; सेसेसु ह० °अन्त्वा। [8] भवराग°, B., भवयोग°, P. [9] अरह, C.; अरहं, D.E.P.Pa. [10] cp. अङ्गु०-निकाये चतु० निपा० १०।१ [11] सत्ता, B.P [12] सेसेसु ह० विन्दु M. योग्यमेव–ति, °गामिनो ति, B.P.Pa; °गामिनन्ति, C.D.E [13] पहन्त्वान, B.P ; पहत्वान, D.E. [14] °क्खयन्ति, B.C [15] सर्वेषु ह० संयु°। [16] छिन्नसंसया, C.M.Aa; छिन्न°, B.; छिन्नसंसारं, D.E.; खीणसंसारा, P °री, Pa [17] वो, P ; व, C.D ; वे, B. [18] पारंगु°, P ; पारगता, D.E [19] सत्ता, B.C.; पत्ता, Pa. [20] केवलं, B.C.

९८—दान-सुत्तं [तिक. ६।६]

द्वे-मानि भिक्खवे दानानि आमिसदानञ्च[4] धम्मदान[illegible] भिक्खवे इमेसं द्विन्नं दानानं यदिदं धम्मदानं। द्वे मे भिक्खवे संविभागा आमि[illegible] संविभागो[5] च धम्मसंविभागो च, एतदग्गं भिक्खवे इमेसं द्वि[illegible] यदिदं धम्मसंविभागो। द्वे-मे भिक्खवे अनुग्गहा आमिसानुग्गहो [illegible] च, एतदग्गं भिक्खवे इमेसं द्विन्नं अनुग्गहानं यदिदं धम्मानुग्गहो ति।

यमाहु दानं परमं अनुत्तरं यं संविभागं भगवा अवण्णयि।
अग्गम्हि[6] खेत्तम्हि[7] पसन्नचित्तो [illegible]
ये चेव भासन्ति सुणन्ति चूभयं पसन्नचित्ता सुगतस्स [illegible]
तेसं सो अत्थो परमो विसुज्झति ये अप्पमत्ता सुगतस्स [illegible]

९९ [illegible]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता [illegible]
ब्राह्मणं[9] पञ्ञापेमि, [illegible]
धम्मेन तेविज्जं ब्राह्मणं [illegible]
भिक्खवे भिक्खु अनेकविहितं [illegible]
जातियो[10] द्वे पि जातियो तिस्सो [illegible]
जातियो दस पि[11] जातियो वीसम्पि[12] जातियो तिंसम्पि [illegible] जातियो [illegible]
जातियो पञ्ञासम्पि जातियो जातिसतम्पि जातिसहस्सम्पि जातिसतसहस्सम्पि,

[1] [illegible], B C M [illegible] [2] [illegible], B D I [illegible], D I [illegible] P [illegible], D I [illegible], M [illegible], B [illegible], B [illegible], P [illegible], P Pa [illegible], M [illegible] B P Pa [illegible] M [illegible], M [illegible], B C P Pa [illegible] M [illegible], C P Pa [illegible], B [illegible], C P Pa [illegible] C D I P Pa [illegible], B C P Pa [illegible], B [illegible], P Pa, [illegible], D I [illegible] M [illegible]

*[illegible] सुत्त १००, अङ्गुत्तरनिकाय [illegible]

अनेके पि संवट्टविवट्टकप्पे अमुत्रासिं[1] एवंनामो एवंगोत्तो[2] एवंवण्णो एवमाहारो एवंसुखदुक्खपटिसंवेदी[3] एवमायुपरियन्तो, सो ततो चुतो अमुत्र उदपादिं[4] तत्रासिं[5] एवंनामो एवंगोत्तो एवंवण्णो एवमाहारो एवं सुखदुक्खपटिसंवेदी[6] एवमायुपरियन्तो, सो ततो चुतो इधूपपन्नो ति। इति साकारं सउद्देसं अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरति। अयमस्स पठमा विज्जा अधिगता होति, अविज्जा विहता विज्जा उप्पन्ना, तमो विहतो आलोको उप्पन्नो यथा तं अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्स विहरतो।—पुन च परं भिक्खवे भिक्खु दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन[7] सत्ते पस्सति चवमाने उपपज्जमाने हीने पणीते सुवण्णे दुब्बण्णे सुगते दुग्गते, यथाकम्मूपगे सत्ते पजानाति। इमे वत[8] भोन्तो सत्ता कायदुच्चरितेन समन्नागता वचीदुच्चरितेन[9] समन्नागता[9] मनोदुच्चरितेन[10] समन्नागता[10], अरियानं उपवादका मिच्छादिट्ठिका मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना। इमे वा पन भोन्तो सत्ता कायसुचरितेन समन्नागता वचीसुचरितेन[11] समन्नागता[11] मनोसुचरितेन समन्नागता अरियानं उपवादका सम्मादिट्ठिका सम्मादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपन्ना ति। इति दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन[12]—पे—यथाकम्मूपगे सत्ते पजानाति। अयमस्स दुतिया विज्जा अधिगता होति, अविज्जा विहता विज्जा उप्पन्ना, तमो विहतो आलोको उप्पन्नो, यथा तं अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्सविहरतो।—पुन च परं भिक्खवे भिक्खु आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं[13] दिट्ठे व धम्मे सयं अभिञ्ञाय[14] सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति। अयमस्स ततिया विज्जा अधिगता होति, अविज्जा विहता विज्जा उप्पन्ना, तमो विहतो आलोको उप्पन्नो, यथा तं अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्स विहरतो। एवं खो अहं भिक्खवे धम्मेन तेविज्जं ब्राह्मणं

[1] अमुत्रासिं, C.M.; °सि, B.D.E.P. Pa. [2] नास्ति D.E.
[3] °वेदि, B.C. P.Pa. [4] उदपादिं, M.; °दि, B.C.P.Pa; उप्पादि, D.E.
[5] तत्रापासन्ति, Aa.; °आसि, विहाय सर्वत्र द्र० तत्रासापि, D.E.; तत्रासि, C.
[6] °वेदि, B.C. [7] °मानुस्सकेन, B.M.P.Pa. [8] च पन, B [illegible]
त्यक्तं सर्वत्र द्र० सुत्तं ७०-७१. [10] दुच्च्°, सम्°, सचिन्त्य [illegible] न
त्यज्यते D. E. द्र० सुत्तं ७०-७१. [12] °मानुस्सकेन,
[13] °विमुत्ति M.; B.C. D.E.P.Pa; विहाय द्र० तदेव
[14] अभिञ्ञा, B.C.M.

पञ्ञापेमि नाञ्ञं[1] लपितलापनमत्तेनाति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति:[2]

(पुब्बेनिवासं यो वेदि सग्गापायञ्च ब्राह्मणञ्च।
पञ्ञापेमि न च अञ्ञं लपितलापनमत्तेन ॥)[3]
पुब्बेनिवासं यो [4]वेदि सग्गापायञ्च पस्सति[4]।
अथ[5] जातिक्खयं[6] पत्तो अभिञ्ञावोसितो[7] मुनि ॥
एताहि तीहि विज्जाहि तेविज्जो होति ब्राह्मणो।
तमहं[8] वदामि तेविज्जं नाञ्ञं[9] लपितलापनन्ति ॥१०॥
अयम्पि[10] अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[11] ॥१०॥

॥ पञ्चमो वग्गो ॥

तस्सुद्दानं[12]

[illegible][13] (१०) [illegible][14] (११) [illegible][15] (१२)
[illegible] (१३) [illegible] (१४)।
[illegible] (१५) [illegible] (१६) [illegible] (१७)
[illegible] (१८) [illegible] (१९) ते दस ति ॥

॥ तिकनिपातं[16] निट्ठितं ॥

---

[1] न अञ्ञं, C.M; अनञ्ञं, B [illegible]
[illegible]

चतुक्कनिपातो

१००. ब्राह्मणसुत्तं [चतु. १]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं[1]। अहमस्मि[2] भिक्खवे[3] ब्राह्मणो[4] याचयोगो सदा पयतपाणि अन्तिमदेहधारो[5] अनुत्तरो भिसक्को सल्लकत्तो। तस्स मे तुम्हे पुत्ता ओरसा[6] मुखतो जाता धम्मजा धम्मनिम्मिता[7] धम्मदायादा नो आमिसदायादा[8]। द्वे-मानि भिक्खवे दानानि आमिसदानञ्च[9] धम्मदानञ्च, एतदग्गं भिक्खवे इमेसं[10] द्विन्नं दानानं यदिदं धम्मदानं। द्वे-मे[11] भिक्खवे संविभागा आमिससंविभागो[11] च[10] धम्मसंविभागो[12] च,[13] एतदग्गं भिक्खवे इमेसं द्विन्नं संविभागानं यदिदं धम्मसंविभागो। द्वे-मे भिक्खवे अनुग्गहा, आमिसानुग्गहो[14] च धम्मानुग्गहो च, एतदग्गं भिक्खवे इमेसं द्विन्नं अनुग्गहानं यदिदं धम्मानुग्गहो। द्वे-मे भिक्खवे यागा, आमिसयागो च[12] धम्मयागो च, एतदग्गं भिक्खवे इमेसं द्विन्नं यागानं यदिदं धम्मयागो ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति[14]

यो धम्मयागं अयजी[15] अमच्छरी[16] तथागतो सब्बभूतानुकम्पी[17]।

[1]वुत्तं°, एतमत्थं°, अयम्पि, केवल M एतत्सूत्र भाशार्थ इ० मु० १८ [2] अस्मि, C.D.E. [3] भिक्खवे भिक्खु, B.C.P Pa. [4] ब्रह्मु°, B.P.Pa. [5] °धारो, B.M.; शेषेषु ह० °धरो। [6] ओरस, D. E.; B. ओरसा इत्यतः परं पुना; वाक्य समूहार्थं इ० अम्मन्तायनसुत्त ed. Pischel, P.9 [7] °निमित्ता, D.E.Pa. [8] आमिसस्स°, P.Pa.

[9] आमिसस्स°, B.P.Pa. [10] नास्ति D.E. [11] इमेद्वे मे, C. [12] आमिसस्स°, B. [13] नास्ति C. [14] आमिसस्सनु°, B.; आमिसस्स अनु,° Pa. [15] एतमत्थं, अयम्पि, केवलं M. [16] अयजी, M.E.; अयजि, D.Pa.; असज्जि, P.; अस्सजी, C.; अस्सज्जि, B. [16] °इ, B. P.Pa. [17] सब्बसत्तानुकम्पीति, Aa.; M. पश्चात् ११ °कम्पी, किन्तु शेषेषु ह० °कम्पितं सहैव लिखितं B, ११ पश्चात् तं, C. °कम्पित।

तं तादिसं देवमनुस्ससेट्ठं[1] सत्ता[2] नमस्सन्ति भवस्स पारगुन्ति[3] ॥
अयम्पि[4] अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[5] ॥१॥

१०१—चत्तारि-सुत्तं [चतु. २]

*चत्तारि-मानि भिक्खवे अप्पानि चेव सुलभानि च[6] तानि[6] च[6] अनवज्जानि। कतमानि चत्तारि? पंसुकूलं भिक्खवे चीवरानं[7] अप्पञ्च सुलभञ्च तञ्च अनवज्जं। पिण्डियालोपो भिक्खवे भोजनानं[8] अप्पञ्च सुलभञ्च तञ्च अनवज्जं। रुक्खमूलं भिक्खवे सेनासनानं[9] अप्पञ्च सुलभञ्च तञ्च अनवज्जं। पूतिमुत्तं भिक्खवे भेसज्जानं[10] अप्पञ्च सुलभञ्च तञ्च अनवज्जं[11]। इमानि खो भिक्खवे चत्तारि अप्पानि चेव सुलभानि च[12] तानि[12] च[12] अनवज्जानि। यतो खो भिक्खवे भिक्खु[13] अप्पेन च तुट्ठो होति सुलभेन च,[14] इदमस्साहं[15] अञ्ञतरं सामञ्ञङ्गन्ति वदामीति।

अनवज्जेन तुट्ठस्स अप्पेन सुलभेन च।
न सेनासनमारब्भ चीवरं पानभोजनं।
विघातो होति चित्तस्स दिसा नप्पटिहञ्ञति[16] ॥
ये चस्स धम्मा अक्खाता सामञ्ञस्सानुलोमिका।
अधिग्गहीता[17] तुट्ठस्स अप्पमत्तस्स भिक्खुनो[18] ति ॥२॥

---

1 °मनुस्सानं सेट्ठं, B C. 2 °सत्ता, C. 3 °गूति, B C P, °गूति Pa. 4 M. नत्थि Pi. 5 सुतन्ति च, P; सुतं च, Pa; [illegible] C. 6 चीवरं, D P. 7 भोजनं D [illegible] 8 [illegible] D [illegible] M P Pa. 9 भेसज्जं D, [illegible] 10 [illegible], C 11 [illegible] D [illegible] 12 [illegible] B 13 भिक्खु तुट्ठो होति अप्पेन [illegible] सुलभेन [illegible] D [illegible] 14 [illegible], D [illegible]; [illegible], P Pa 15 [illegible], M P, [illegible], [illegible] D P; [illegible], Pa, [illegible] B 16 [illegible] B M 17 [illegible] C D [illegible] A; Burmese [illegible] [illegible] Pa [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] — [illegible] [illegible] भिक्खवे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 18 [illegible] B [illegible]

*[illegible] सुत्तं अङ्गुत्तरनिकाये चतु० २७

१०२—ञाण-सुत्तं [चतु. ३]

जानतोहं¹ भिक्खवे पस्सतो आसवानं खयं वदामि, नो अजानतो अपस्सतो²। किञ्च³ भिक्खवे जानतो किं⁴ पस्सतो आसवानं खयो होति?⁵ इदं दुक्खन्ति भिक्खवे जानतो पस्सतो आसवानं खयो⁵ होति⁶, अयं दुक्खसमुदयो ति भिक्खवे जानतो पस्सतो आसवानं खयो होति, अयं दुक्खनिरोधो ति भिक्खवे जानतो पस्सतो आसवानं खयो होति, अयं दुक्खनिरोधगामिनी⁷ पटिपदा⁸ ति⁹ भिक्खवे जानतो पस्सतो आसवानं खयो होति। एवं खो भिक्खवे जानतो पस्सतो¹⁰ आसवानं खयो होतीति¹¹।

सेखस्स सिक्खमानस्स¹² उजुमग्गानुसारिनो।
खयस्मिं पठमं ञाणं ततो अञ्ञा अनुत्तरा¹³॥
ततो अञ्ञा विमुत्तस्स विमुत्तिञ्ञाणं¹⁴ मुत्तमं।
उप्पज्जति खये ञाणं खीणा¹⁵ संयोजना¹⁵ इति॥
न त्वेविदं¹⁶ कुसीतेन बालेनम¹⁷विजानता¹⁷।
निब्बानं अधिगन्तब्बं¹⁸ सब्बगन्थप्पमोचनन्ति¹⁹ ॥३॥

१०३—समण-सुत्तं [चतु. ४]

ये हि केचि²⁰ भिक्खवे समणा वा²¹

¹नो अपस्स° D E.Pa. ²किञ्चि, B.C.D.E. ³किं, M.P.; किं, B; किञ्च, D.E.; नास्ति C, Pa. ⁴खयो ति, Pa. ⁵खयो ति, Pa. ⁶°ई, C.D.E.; शेषेषु ह० °इ, ⁷पतिप,° P.Pa ⁸तं, P.; नास्ति C. Pa. ⁹सर्वत्र ह० किन्तु M. पठति एवं पस्सतो इरयत. प्राक्। ¹⁰होति, B.C.M. ¹¹भिक्खमानस्स, C.; खयमानस्स Pa. ¹²अनन्तरा, M. Pa; शेषेषु ह० अनुत्तरा। ¹³सार्द्धं, ञ्ज, B.p; अन्यत्र ह० एकेन ञ ¹⁴खीण, C.D.; खीणं, संयोजनं, M. आद्य गाथा द्वयं द्र० अङ्गुत्तरनिकाय ३।८४ ¹⁵सोचरं, B.C. ¹⁶A. पाठः—मकारो पदसन्धिकरो, द्र० Ed. Muller, pali, Gr. P. 63.; बालेन अविजु° B.C., बालेन अत्ता (?), D.E. ¹⁷°गन्धब्बं, B. ¹⁸°गन्थ°, M.; शेषेषु ह० °गन्थ°। ¹⁹काचि B.; योहि को चि, C. ²⁰नास्ति D.E.

ये च[1] दुक्खं पजानन्ति अथो[2] दुक्खस्स सम्भवं।
यत्थ[3] च सब्बसो दुक्खं असेसं उपरुज्झति॥
तञ्च मग्गं पजानन्ति दुक्खूपसमगामिनं[4]।
चेतो विमुत्तिसम्पन्ना अथो[5] पञ्ञाविमुत्तिया।
भब्बा[6] ते अन्तकिरियाय न ते जातिजरूपगा ति[7]॥

१०४—सील-सुत्तं[8] [सु. ५]

ये ते भिक्खवे भिक्खू सीलसम्पन्ना समाधिसम्पन्ना पञ्ञासम्पन्ना[9] विमुत्तिसम्पन्ना विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्ना[10] ओवादका विञ्ञापका[11] सन्दस्सका समादपका[12] समुत्तेजका[13] सम्पहंसका[14] अलंसमक्खातारो[15] सद्धम्मस्स[16] दस्सनम्पहं[17] भिक्खवे तेसं भिक्खूनं बहूपकारं[18] वदामि, सवन[19]म्पहं[19] भिक्खवे तेसं भिक्खूनं बहूपकारं वदामि, उपसङ्कमनम्पहं[20] भिक्खवे तेसं भिक्खूनं बहूपकारं वदामि, पयिरुपासनम्पहं[21] भिक्खवे तेसं भिक्खूनं बहूपकारं वदामि, अनुस्सरणम्पहं भिक्खवे तेसं भिक्खूनं बहूपकारं वदामि, अनुपब्बज्जम्पहं भिक्खवे तेसं भिक्खूनं बहूपकारं वदामि। तं किस्स हेतु? तथारूपे भिक्खवे

[1] नास्ति B. [2] यतो, B.C.M.P.Pa. [3] यत्त, B. [4] दुक्खुप°, B.P.Pa. [5] अत्थो, C. [6] भब्बा, M.; अन्येषु ह० सब्बा। [7] °जरूप°, P.Pa.; B. चरमं गाथा, द्वय द्विः प्रथमः पादो स्पष्टः [8] B. एतत्सूत्र स्याद्येना शेन द्र० पुग्गल-पञ्ञत्ति, ४।२३ द्वितीयां शेन द्र० पुग्ग० ३।१३

[9] नास्ति P.Pa. [10] नास्ति B.C.P.Pa. [11] पश्चात्—विञ्ञ°, P.Pa. योजयतः अथबोधका, इति अवबोधका-स्थाने A. व्याख्या [12] °पिका B. [13] °जिका, B. [14] °सिका, B. [15] सलमसत्तका, C.; अलंसम्मत्तका। सद्धम्मस्स द°, B. [16] सद्दस्स, C.; नास्ति D.E.; पश्चात्—सद्ध° P.Pa. योजयतः देसेतारो, A. व्याख्या [17] पहं, यच्च यद् वारम्हि,=अपिअहं, B. सर्वदा—अहं नास्ति P; C.D.E.M. प्रास्यने कर्मवचने सर्वदा अनुस्वार; दस्सनं सहं, C. [18] केवलं C. पाठः प्रायः सर्वदा बहुप°; अन्येषु ह० बहु°. D.E. सर्वदा बहुकारं; C. च प्रथमवारं [19] सवानं सवं, C.; समणं पहं D.E. [20] पहान, C. [21] पयिरूप°, B; पतिरूप°, C.; पुस्तके नास्ति Pa. पयिर°, अनुस्स°, अनुप°

१०५—तण्हा-सुत्तं [चतु. ६]

* चत्तारोमे भिक्खवे तण्हुप्पादा यत्थ भिक्खुनो तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति। कतमे चत्तारो? चीवरहेतु वा भिक्खवे[1] भिक्खुनो तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, पिण्डपातहेतु वा भिक्खवे[1] भिक्खुनो तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, सेनासनहेतु वा भिक्खवे भिक्खुनो तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, इतिभवाभवहेतु[2] वा भिक्खवे भिक्खुनो तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, इमे खो भिक्खवे चत्तारो तण्हुप्पादा यत्थ भिक्खुनो[3] तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जतीति।

तण्हादुतियो पुरिसो दीघमद्धान[4] संसरं[5] ।
इत्थभावञ्ञथाभावं संसारं[6] नातिवत्तति ॥
एवमा[7] दीनवं ञत्वा तण्हा दुक्खस्स[8] सम्भवं ।
वीततण्हो अनादानो सतो भिक्खु परिब्बजे ति ॥६॥[9]

१०६—ब्रह्म-सुत्तं [चतु. ७]

[10] सब्रह्मकानि भिक्खवे तानि कुलानि येसं पुत्तानं माता पितरो अज्झागारे पूजिता होन्ति। सपुब्बदेवतानि[11] भिक्खवे तानि कुलानि येसं पुत्तानं मातापितरो अज्झागारे[12] पूजिता होन्ति। सपुब्बाचरियानि भिक्खवे तानि कुलानि येसं पुत्तानं माता पितरो अज्झागारे पूजिता होन्ति[13]। साहुनेय्यकानि[14] भिक्खवे तानि कुलानि

[1] नास्ति D.E. [2] इतिभवाभ°, C. [3] य° भिक्खवे त°, B.C.; Pa. एतस्य सूत्रस्य गद्यभागेऽतिसंदिग्धः पाठः। [4] सर्वत्र ह० Pa. पुस्तकं विहाय अद्धान—इति पाठः। [5] °सारं, P.Pa. [6] संसरं, B. [7] एतं, D.E. [8] तण्हं दु°, M.; तण्हाहेतु स्स, Pa. [9] ता एव गाथा १५ सूत्रे [10] संपूर्णं सूत्रं दृश्यते अङ्गुत्तरनिकाये–तिक० ३१, चतु० ६३ च। तिकनिपात—पाठः समीचीनतमः गाथानुकूल्यात्। अस्य सूत्रस्य द्वितीयं (सपुब्बदेवतानि) अधिकम्। [11] पुब्ब°, अन्तरा स—, C. Pa.

[12] °आगारेसु, B. [13] यथा A.D E. अन्येषु ह० नास्तीदं तृतीयं वाक्य (सपुब्बाचरियानि), यद्यपि पुब्बाचरिया—इति अपरार्द्धे अस्य सूत्रस्य सर्वत्र ह० योज्यते (पंचमः D.E., चतुर्थः शेषेषु ह०) पाहुणेय्यकानि (सपाहुन°, M.; सापिहुण°, P.) भिक्खवे तानि कुलानि येसं पुत्तान ..न तु इदमिव एतत्सूत्रोत्तरार्धे नास्ति च A. [14] आहुण,° B.C.P.Pa.

* संपूर्णं सूत्रं अङ्गुत्त०—तिक० चतु० ९.

येसं पुत्तानं माता पितरो अज्झागारे[1] पूजिता होन्ति। ब्रह्मा ति[2] भिक्खवे मातापितून्नं[3] एतं अधिवचनं। पुब्बदेवता[4] ति भिक्खवे मातापितून्नं[3] एतं अधिवचनं। पुब्बाचरिया ति[5] भिक्खवे मातापितून्नं[3] एतं[6] अधिवचनं। आहुनेय्या ति भिक्खवे मातापितून्नं[3] एतं[7] अधिवचनं[8]। तं किस्स हेतु? बहूपकारा[9] लोकस्स दस्सेतारो ति।

ब्रह्मा ति मातापितरो पुब्बाचरिया ति वुच्चरे[10]।
आहुनेय्या च पुत्तानं पजाय अनुकम्पका ॥
तस्मा हि ने[11] नमस्सेय्य सक्करेय्य[12] च[12] पण्डितो।
अन्नेन अथो पानेन वत्थेन सयनेन च।
उच्छादनेन न्हापनेन[13] पादानं धोवनेन च ॥
ताय नं पारिचरियाय मातापितूसु पण्डितो।
इधेव नं पसंसन्ति पेच्च सग्गे पमोदतीति[14] ॥७॥

१०७—बहूपकार-सुत्तं [चतु. ८]

बहूपकारा[15] भिक्खवे ब्राह्मणगहपतिका[16] तुम्हाकं, ये वो[17] पच्चुपट्ठिता चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खारेहि। तुम्हे पि[18] भिक्खवे बहूपकारा[19] ब्राह्मणगहपतिकानं[20], यं नेसं[21] धम्मं देसेथ आदिकल्याणं मज्झे-कल्याणं परियोसानकल्याणं, सात्थं[22] सब्यञ्जनं[23] केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं पकासेथ[24]। एवमिदं भिक्खवे अञ्ञमञ्ञं निस्साय ब्रह्मचरियं वुस्सति[25] ओघस्स नित्थरणत्थाय[26] सम्मा दुक्खस्स अन्तकिरियायाति।

[1] अगारेसु, B. [2] ब्रह्मा नि, B.C.; ब्रह्मका ति Pa. [3] °पितुन्नं, D.E. [4] °देवा, B.P.Pa [5] एव एतं, B. [6] चरियानीति, B. [7] नास्ति B. [8] पुब्बदेवता ...... अधिवचनं Om C. [9] बहूपकारा, B. M P.Pa. [10] वुच्चरे—इत्यतः परं C. पाठ —वे—B —व—. [11] ते, D.E. [12] सक्कार,° B.; सक्करेय्या च, C.; °एय्याथ, D E. [13] न्हापनेन, C.D.E. न्हानेन, M. [14] पमोदति, C.
[15] बहुप°, B.M.P. [16] ब्राह्मण°, P.Pa; ब्राह्मणा, B [17] ते, C.; B. M. पुस्तकयोः वो, ते—इतीव। [18] हि, B [19] बहुप°, B.M.P.Pa. [20] ब्रह्म° B P.Pa. [21] तेस, C. [22] सत्थ,° M P. [23] सब्य°, B M.P.Pa. [24] सेथ, D.E. [25] वुच्चति P. [26] °त्ताय, B.

सागारा[1] अनागारा[2] च[3] उभो अञ्ञोञ्ञनिस्सिता ।
आराधयन्ति[4] सद्धम्मं योगक्खेममनुत्तरं[5] ॥
सागारेसु[6] च चीवरं पच्चयं सयनासनं ।
अनागारा[7] पटिच्छन्ति परिस्सयविनोदनं[8] ।
सुगतं[9] पन निस्साय गहट्ठा[10] घरमेसिनो ।
सद्दहाना[11] अरहतं अरियपञ्ञाय[12] झायिनो ॥
इध धम्मं चरित्वान मग्गं[13] सुगतिगामिनं ।
नन्दिनो देवलोकस्मिं मोदन्ति कामकामिनोति ॥

१०८—कुहना-सुत्तं [चतु. ६]

ये केचि भिक्खवे भिक्खू कुहा थद्धा लपा सिङ्गी[14] उन्नळा[15] असमाहिता, न मे[16] ते भिक्खवे भिक्खू मामका, अपगता[17] च ते भिक्खवे[18] भिक्खू[19] इमस्मि धम्मविनये वुद्धिं विरूळ्हिं[20] वेपुल्लं आपज्जन्ति । ये च खो[21] भिक्खवे भिक्खू

[1]सगारा B C.D E. [2]अनग° C.M. [3]D E.P.P2.व, अनाग°—इत्यतः प्राक्, [4]आरामयन्ति, C. [5]यथा D.E.M.A.; B.C.P.P2. पाठः—योगक्खेमस्स पतिया ।
[6]सगार,° B.; सागर,° D.E. [7]अनग°, M.; अनागारं, B. [8]अपरिस्स,° B; परिस्सयन्तिविन°, D.E; सरिस्सयविन° C.; A. पाठः परिस्सयविनोदनन्ति उपुपरिस्सयादिपरिस्सयपगहूनं विदूरतादि आवमनं, D.E.A2. (P. P2.पाठः सरिस्स°); सुगत्त, M.; सद्धम्मं B.C.; पाठोऽनुदत्त A. व्याख्यानि सुगत, तस्य सरनं वाचर—सावरो हि इध सुगतो हि (?) अधिप्पेतो । [9]सुगतं, [10]घरट्ठा, P.P2. [11]सद्दहाना D.E.; सद्दहानो, B.C.M. P.P2.A2. [12]°पञ्ञाय, D.E; धम्मपञ्ञाय, B.; धम्मंप,° C.
[13]मग्गं, C [14]सिङ्गी, D.E.P.P2. सींगिनि, A2.; सिङ्गा, B C.M.; ...सद्दो इच्चन्यन प्रधान, पाठ आवा व शुद्धः A. व्याख्याने—एवंवुत्तेहि संघ ?)—सत्तिमेहि पाकटकिलेसेहि समन्नागता । [15]उन्नटा, M. [16]न च ते C. ...अपगता, C. [17]भाति D.E. [18]भाति B C.P.P2. [20]विरूळ्हिं, ...M.P.P2. (न तु B.P2) । [21]खो ते, D.E.P.P2.

निवुता [1]निल्लपा धीरा अपद्धा [illegible] सुसमाहिता [illegible]
भिक्खू मामका, अनपगता च ते भिक्खवे [illegible] [illegible]
भिक्खवे भिक्खू इमस्मिं धम्मविनये वुद्धिं [illegible]

दुहा पद्धा लपा सिङ्गी [illegible] उन्नळा [illegible] असमाहिता ।
न[10] ते धम्मे विरूहन्ति[10] सम्मासम्बुद्धदेसिते ॥
निवुता[11] निल्लपा[12] धीरा अपद्धा[13] सुसमाहिता[14] ।
ते वे[15] धम्मे विरूहन्ति[16] सम्मासम्बुद्धदेसिते ति ॥[illegible]

१०६—पुरिस-सुत्तं [चतु १०]

सेय्यथापि भिक्खवे पुरिसो नदिया सोतेन ओवुय्हेय्य[1] पियरूपसातरूपेन [illegible] तमेनं चक्खुमा पुरिसो[2] तीरे ठितो दिस्वा एवं वदेय्य [illegible] किञ्चापि खो त्वं अम्भो [illegible] पुरिस[3] नदिया सोतेन ओवुय्हसि[4] पियरूपसातरूपेन[5], अत्थि चेत्थ हेट्ठा रह[illegible]

[1]यथा B.C M., इ० द्वितीया गाथा, P पाठ —असन्धा [illegible] निल्लपा धी[illegible] आवन्धा [illegible]
अवन्धा अपद्धा; D I. पाठ निवुक[illegible] निरपद्धा निल्लपा [illegible] [2]नत्थि M.P2 [3]नत्थि B C[illegible]
A न सुप्पाठयन्ति गुण्वयलं [illegible] BCMP,P2 नत्थि इम[illegible] अधरस्ता [illegible]
[4]इमस्मा D I., इमस्हा BCMP,P2 [illegible] न च ते, C, ते, [illegible]
मावद् इमस्मि । [5]ते च कल्यनया च ते, P, न च ते, P, [illegible] प्रार, D I [illegible] [6]विरूहि[illegible]
च, B.M.; किन्तु B, पाठे च, इमस्मि इमन भिक्खवे भिक्ख) । [illegible] तिट्ठन्ती, D[illegible]
इमस्मिञ्च ते धम्मविनये (न तु— [7]लिहिता, I. P P2, सुसमाहिता, नत्थि [illegible]
P P2. (न तु B P.P2) [8]न ते, सुसमाहिता, नत्थि [illegible]
B.C.M [9]उन्नळा, M [illegible] (B P कारेन उ सह[illegible]
केवलं M, विरूहन्ति, B C D I P [11]असद्धा, P [illegible]
[11]निवुता, D I [12]निल्लपा, D I [16]विरूहन्ति केवलं M[illegible]
[13]च B
सुसमाहिता; नत्थि P2 (B P.P2 उ कारेन सह)
B C D E P P2 (B P.P2 उ कारेन सह) [illegible] सुसमाहिता [illegible]
[18]ओवुय्हे, D, ओवुय्ह, P, ओरस्स, B P2, पुरिसो, [illegible]
[illegible] P P2 [19]पुरिसो, P [20]अम्भो, B. [21]पुरिसो, P P[illegible] [22]सातरूपेन, [illegible]
[illegible] ओवुय्ह, D I [illegible] M.

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

---

१०६ —पुरिस-सुत्तं [सु. १०]

[illegible] पुरिसो [illegible] [illegible] आवुसो [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] पुरिसो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अभियेत्य [illegible]
पुरिस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[1] B.C.M., [2] द्वितीया गाथा, P पाठ —अमन्धा [illegible] अवन्धा = अवद्धा; D.E. पाठ निक्क° निरवद्धा निलपा धी° आवन्धा [illegible] [3] नास्ति B.C. [illegible] [4] नास्ति M.P₂. A [illegible] गुत्तपत्ते नास्ति [illegible] अपस्सना: [illegible] [illegible] D.E.; [illegible] B.C.M.P.;P₂ [illegible] ते, P.; [illegible] ते, C, ते, [illegible] [illegible] [illegible] प्राक्, D. E [illegible] [6] [illegible] [illegible], B.M.; किन्तु B, पाठे [illegible] [illegible] (मिश्र)। [illegible] [illegible] (न तु — [7] [illegible], E.P.P₂; [illegible], D [illegible] P.P₂. (न तु B.P.P₂.) [8] [illegible], [illegible]; नास्ति [illegible] B.C.M. [9] [illegible], M. [illegible] B.C.D.E.P. (B.P [illegible] उ सह) [illegible] केवलं M.; [illegible], B.C.D.E.P. (B.P [illegible] उ सह). [13] [illegible], P. [illegible]
[11] [illegible], D.E. [14] निलपा, D.E. [15] [illegible] B [16] [illegible] केवल M. [illegible], नास्ति P₂ (B.P.P₂ उ [illegible] सह). [illegible], B.P₂.; [illegible]
B.C.D.E.P.P₂ (B.P.P₂ उ [illegible] सह). [illegible], B.P₂.; [illegible], [illegible]
[17] [illegible], D.; [illegible], P, [illegible], B.P₂.; [21] [illegible], P.P₂. [illegible]
[illegible] [19] पुरिसो, P [20] [illegible], B. [23] [illegible], [illegible]
P.P₂ [illegible] C.; [illegible], D.E. [24] [illegible], M.

स वेसु मुनिसक्कारियो¹
ओरम्मु पासगो² ति वुच्चतीति ॥१०॥*

११०—चर-सुत्तं [चतु. ११]

चरतो³ चे⁴ पि भिक्खवे भिक्खुनो उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापाद-वितक्को⁵ वा विहिंसावितक्को वा; तञ्चे भिक्खवे⁶ भिक्खु अधिवासेति नप्पजहति⁷ न विनोदेति न ब्यन्तिकरोति⁸ न अनभावं⁹ गमेति, चरं पि भिक्खवे भिक्खु एवंभूतो¹⁰ अनातापी¹¹ अनोत्तप्पी¹² सततं समितं कुसीतो हीनवीरियो ति वुच्चति। ठितस्स चे¹³ पि¹⁴ भिक्खवे भिक्खुनो उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को वा; तञ्चे भिक्खवे¹⁵ भिक्खु अधिवासेति नप्पजहति न विनोदेति न ब्यन्तिकरोति न अनभावं गमेति, ठितो पि भिक्खवे भिक्खु एवं भूतो अनातापी अनो- त्तप्पी सततं समितं कुसीतो हीनवीरियोति वुच्चति।—निसिन्नस्स चे पि¹⁶ भिक्खवे भिक्खुनो उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को वा; तञ्चे भिक्खवे¹⁸ भिक्खु अधिवासेति नप्पजहति न विनोदेति न ब्यन्तिकरोति न अनभावं गमेति, निसिन्नो पि¹⁷ भिक्खवे भिक्खु एवंभूतो¹⁸ अनातापी अनोत्तप्पी सततं समितं

¹ कुसित°, M.P.; कुसिन°, B C.Pa.; कुसितं, E.; सितं, D.; °कारियो, P.Pa. ² पासंग°, B. ³ वुच्चति, C.D.E.; P.Pa. पाठे चरतो। ⁴ चे-केवलं M. ⁵ ब्यु°, P.Pa. ⁶ For चर° D.E. पाठे—चर° अस्मिन् सुत्ते ⁷ केवलं M. अस्मिन् परत्ते सुत्ते च केवलं D.E.; सोवेसु इ० ब्य°। ⁸ ब्य° केवलं D.E.; सोवेसु इ० ब्य°; M. ⁹ न पज°, D.E. ¹⁰ इ० अनभावकता अट्ठ० ४।२२ ¹¹ एवं पाठ· सर्वत्र—ब्यन्तिइकरोति। ¹² अनातापी सर्वत्र M.; सोवेसु इ० सर्वत्र °इ। ¹³°त्तप्पी पि भूतो, C. सर्वत्र M., द्वि० इव C.; °इ, B.C.; D.E.P.Pa. पाठ· सर्वत्र °त्तप्पि अस्मिन् परत्ते च सुत्ते ¹⁴ चे, नास्ति M. ¹⁵ पि, नास्ति C. ¹⁶ केवलं M. ¹⁷ पिल्लो, D.E. ¹⁸ एवंपि भ,° C. ¹⁹ C. नास्ति वाक्यखण्डः... (सयानस्स ...वुच्चति

*इ० अट्ठ० निपा० चतु० ८।२,२
+ इदं च सुत्तं अट्ठ०-निपा० चतु० ११

कुसीतो हीनविरियोति वुच्चति।—सयानस्स[1] चे पि भिक्खवे भिक्खुनो जागरस्स उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को वा; तञ्चे भिक्खवे[2] भिक्खु अधिवासेति नप्पजहति न विनोदेति न ब्यन्तिकरोति न अनभावं गमेति, सयानो पि भिक्खवे भिक्खु जागरो एवंभूतो अनातापी अनोत्तप्पी सततं समितं कुसीतो हीनविरियोति वुच्चति[1]।—चरतो चे[3] पि भिक्खवे भिक्खुनो उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को वा, तञ्चे भिक्खवे[2] भिक्खु नाधिवासेति[4] पजहति विनोदेति ब्यन्तिकरोति अनभावं गमेति, चरं पि भिक्खवे भिक्खु एवंभूतो आतापी ओत्तप्पी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो[5] ति वुच्चति।—ठितस्स चे पि[3] भिक्खवे भिक्खुनो उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को वा, तञ्चे भिक्खवे[6] भिक्खु नाधिवासेति पजहति विनोदेति ब्यन्तिकरोति अनभावं गमेति, ठितो[7] पि भिक्खवे भिक्खु[8] एवंभूतो आतापी ओत्तप्पी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो[9] ति वुच्चति।—निसिन्नस्स चे पि[10] भिक्खवे भिक्खुनो उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को वा, तञ्चे भिक्खवे[11] भिक्खु नाधिवासेति पजहति विनोदेति ब्यन्तिकरोति अनभावं गमेति, निसिन्नो पि भिक्खवे भिक्खु एवंभूतो आतापी ओत्तप्पी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो[9] ति वुच्चति।—सयानस्स[12] चे पि[13] भिक्खवे भिक्खुनो जागरस्स[13] उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को वा, तञ्चे[14] भिक्खवे[15] भिक्खु नाधिवासेति पजहति विनोदेति ब्यन्तिकरोति अनभावं गमेति, सयानो पि भिक्खवे भिक्खु जागरो एवंभूतो आतापी ओत्तप्पी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो ति वुच्चतीति।

चरं वा यदि वा तिट्ठं निसिन्नो उदवा सयं।[16]
यो वितक्कं वितक्केति पापकं गेहनिस्सितं॥
कुमग्गं[17] पटिपन्नो[18] सो मोहनेय्येसु मुच्छितो।
अभब्बो तादिसो भिक्खु फुट्ठुं[19] सम्बोधिमुत्तमं॥

[1] चे, [illegible] M [2] भिक्खो, D I [3] [illegible], [illegible] F C D F; [illegible] P Pa [4] [illegible], C. [5] [illegible] C. [6] [illegible] D I, P Pa [7] [illegible], C. [8] [illegible], C. [9] [illegible] C. [10] [illegible] B C. [11] [illegible] D I P Pa [12] [illegible] (?), C. [13] [illegible] C. [14] [illegible] B [15] [illegible] M [16] [illegible] [17] [illegible], D I [18] [illegible], D I Pa [19] [illegible], P Pa.

यो चरं¹ वा ठो² तिट्ठं वा निसिन्नो उदवा सयं।
वितक्कं समयित्वान³ वितक्कोपसमे⁴ रतो।
भब्बो⁵ सो⁶ तादिसो भिक्खु फुट्ठुं⁷ सम्बोधिमुत्तमन्ति ॥११॥

१११*—सम्पन्न-सुत्तं [चतु. १२]

सम्पन्नसीला भिक्खवे विहरथ, सम्पन्नपातिमोक्खा⁸ पातिमोक्खसंवर-संवुता⁹ विहरथ, आचारगोचरसम्पन्ना अनुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्साविनो⁹, समादाय सिक्खथ¹⁰ सिक्खापदेसु।—सम्पन्न सीलानं भिक्खवे विहरतं, सम्पन्नपातिमोक्खानं ¹¹पातिमोक्खसंवरसंवुतानं¹¹ विहरतं, आचारगोचर-सम्पन्नानं¹² अनुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावीनं¹³ समादाय सिक्खतं¹⁴ सिक्खापदेसु किमस्स¹⁵ भिक्खवे उत्तरि¹⁶ करणीयं ?—चरतो¹⁷ चे पि¹⁸ भिक्खवे भिक्खुनो अभिज्झा विगता होति, ब्यापादो विगतो होति, थीनमिद्धं विगतं होति, उद्धच्चकुक्कुच्चं विगतं होति, विचिकिच्छा पहीना होति, आरद्धं

¹चरम्, C. ²ठ, M.; नास्ति Pa. D.E. पाठ.—यो चरं यदि वा तिट्ठं ³समयि-त्वान, D.E.M. (=उपसमेत्वा, A.) समसित्वान, P.Pa.; सम्मसित्वान, B.C. ⁴°पसमे, P.Pa.; °उपसमे, D.E. ⁵समो सो, D.E. ⁶फुट्ठुं, M.; सेसेसु ह०—फुट्ठुं (फु°, D.E.), द्र० सु० ३४, ७९, ८०

⁷°पाटि° C.D.M.; सम्पन्नपातिमोक्खा संवर°, B.C.M.P.; सर्वेण वाक्येन सह द्र० सुत्तं ९७ Pa. प्रथमं द्वितीयं वाक्यं च भाष्यात् मिश्रित संक्षिप्य एकीहृतं ⁸ख, Pa. पाठे पुनः—भिक्खवे, आचार° इत्यत परं। ⁹°वि, B.C.P.; °विनो, D.E. ¹⁰°थ, केवलं M ; °त, D ; °ति, B.C.E. P.Pa ; समादाय सिक्खन्ति सिक्खापदेसु—इत्याद्येवपाठे (द्र० सु० ९७ अङ्गुत्तर [illegible] Index S.V. सिक्खापद), अतः सिक्खति—इतिप्राय अयुक्तस्थाने, यथा वाक्य [illegible] ¹¹°पाटि°, D.M.; सम्पन्नपातिमोक्खानं संवर° B C. सम्पन्नपातिमोक्खसंवर° [illegible] P.M. ¹²B.C. भाष्येऽप्यने—भिक्खवे, आचार° इत्यतः परम्। ¹³°वि, B.C. [illegible] केवलं M.; °विनं, D.E.P., °वि, B.C. ¹⁴सिक्खति, B.C. [illegible] ¹⁵किमस्स, D.E ; किस्सस, B ; किस्स, M. ¹⁶न तु - सर्वत्र [illegible] ¹⁷चर°, D E., यथा सु० ११०. ¹⁸चे पि, M.; केवलं चे, D.E.P.[illegible] केवलं—पि, B C.; द्र० सु० ११०.

* सम्पूर्णमिदं सुत्तं = अङ्गु° ० चतु० १२

कुसीतो हीनविरियोति वुच्चति।—सयानस्स[1] चे पि भिक्खवे भिक्खुनो जाग-
रस्स उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को वा;
तञ्चे भिक्खवे[2] भिक्खु अधिवासेति नप्पजहति न विनोदेति न ब्यन्तिकरोति
न अनभावं गमेति, सयानो पि भिक्खवे भिक्खु जागरो एवंभूतो अनातापी
अनोत्तप्पी सततं समितं कुसीतो हीनविरियोति वुच्चति[1]।—चरतो चे[3] पि
भिक्खवे भिक्खुनो उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावि-
तक्को वा; तञ्चे भिक्खवे[2] भिक्खु नाधिवासेति[4] पजहति विनोदेति ब्यन्ति-
करोति अनभावं गमेति, चरं पि भिक्खवे भिक्खु एवंभूतो आतापी ओतप्पी सततं
समितं आरद्धविरियो पहितत्तो[5] ति वुच्चति।—ठितस्स चे पि[5] भिक्खवे
भिक्खुनो उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को
वा, तञ्चे भिक्खवे[6] भिक्खु नाधिवासेति पजहति विनोदेति ब्यन्तिकरोति
अनभावं गमेति, ठितो[7] पि भिक्खवे भिक्खु[8] एवंभूतो आतापी ओतप्पी
सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो[9] ति वुच्चति।—निसिन्नस्स चे पि[10]
भिक्खवे भिक्खुनो उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को
वा; तञ्चे भिक्खवे[11] भिक्खु नाधिवासेति पजहति विनोदेति ब्यन्तिकरोति
अनभावं गमेति, निसिन्नो पि भिक्खवे भिक्खु एवंभूतो आतापी ओतप्पी
सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो[9] ति वुच्चति।—सयानस्स[12] चे पि[13]
भिक्खवे भिक्खुनो जागरस्स[13] उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा
विहिंसावितक्को वा; तञ्चे[14] भिक्खवे[15] भिक्खु नाधिवासेति पजहति विनो-
देति ब्यन्तिकरोति अनभावं गमेति, सयानो पि भिक्खवे भिक्खु जागरो एवंभूतो
आतापी ओतप्पी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो ति वुच्चतीति।

चरं वा यदि वा तिट्ठं निसिन्नो उद वा सयं।[16]
यो वितक्कं वितक्केति पापकं गेहनिस्सितं॥
कुम्मग्गं[17] पटिपन्नो[18] सो मोहनेय्येसु मुच्छितो।
अभब्बो तादिसो भिक्खु फुट्ठुं[19] सम्बोधिमुत्तमं॥

[1] चे, केवलं M. [2] भिक्खो, D.E. [3] नाधिवृ°, सर्वत्र हु° नाधिव,° B.C. D.E; अनधिव,° P.Pa. [4] ° स्सो, C. [5] नास्ति C. [6] नास्ति D.E.P.Pa. [7] निसिन्नो, C. [8] भिक्खु जागरो एवं भ,° C. [9] °त्तो, C. [10] नास्ति B.C. [11] नास्ति D.E.P.Pa. [12] यवेहदि (?), C. [13] नास्ति C. [14] तं चे पि, B. [15] केवलं M. [16] इ० वु० ८६ [17] कुम्मग्गं, D.E. [18] °पन्नो, D.E.Pa. [19] फुट्ठ, P.Pa.

यो चरं[1] वा यो[2] तिट्ठं वा निसिन्नो उदवा सयं।
वितक्कं समयित्वान[3] वितक्कूपसमे[4] रतो।
भब्बो[5] सो[6] तादिसो भिक्खु फुट्ठुं[6] सम्बोधिमुत्तमन्ति ॥११॥

१११*—सम्पन्न-सुत्तं [चतु. १२]

सम्पन्नसीला भिक्खवे विहरथ, सम्पन्नपातिमोक्खा[7] पातिमोक्खसंवर-संवुता[1] विहरथ, आचारगोचरसम्पन्ना[8] अनुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावी[9], समादाय सिक्खथ[10] सिक्खापदेसु।—सम्पन्न सीलानं भिक्खवे विहरतं, सम्पन्नपातिमोक्खानं [11] पातिमोक्खसंवरसंवुतानं[11] विहरतं, आचारगोचर-सम्पन्नानं[12] अनुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावीनं[13] समादाय सिक्खतं[14] सिक्खापदेसु किञ्चस्स[15] भिक्खवे उत्तरि[16] करणीयं ?—चरतो[17] चे पि[18] भिक्खवे भिक्खुनो अभिज्झा विगता होति, ब्यापादो विगतो होति, थीनमिद्धं विगतं होति, उद्धच्चकुक्कुच्चं विगतं होति, विचिकिच्छा पहीना होति, आरद्धं

[1] चारम, C. [2] °त, M.; नत्थि Pa. D.E. पाठ—यो चरं यदि वा तिट्ठं [3] समयित्वान, D.E.M. (=वूपसमेत्वा, A.) समयित्वान, P.Pa.; सम्मयित्वान, B.C. [4] °वसमे, P.Pa.; °ऊपसमे, D.E. [5] भब्बो सो, D.E. [6] फुट्ठुं, M.; सेसेसु इ०—फुट्ठुं (फु°, D.E.).

* इ० सु० १४, ७९, ८०

[7] °पाटि° C.D.M.; सम्पन्नपातिमोक्ख संवर°, B.C.M.P.; सर्वेण वाक्येन सह इ० सुत्तं ९७ Pa. प्रथमं द्वितीयं वाक्यं च आगत्य लिखित समितप एवीयुतं [8] °स, Pa. पाठे पुन—भिक्खवे, आचार° इ यत्न पदं। [9] °वि, B.C.P.; °विनो, D.E. [10] °थ, केवलं M.; °त, D; °ति, B.C.E. P.Pa; समादाय सिक्खन्ति सिक्खापदेसु—इत्याद्येकस्थाने (इ० सु० ९७ अट्ठकथा Index S.V. सिक्खापद), अतः सिक्खति—इतिपाठ अयुक्तस्थाने, यथा वाक्य° [11] °पाटि°, D.M ; सम्पन्नपातिमोक्खानं संवर° B.C. सम्पन्नपातिमोक्खसंवर° इत्यादि परम्। [12] °ति, B.C.P.M. [13] B.C. आप्रेइपने—भिक्खवे, आचार° इत्यादि परम्। [14] सिक्खति, B.C. केवलं M ; °ति, D.E.P., °वि, B.C. [15] किस्स, M. [16] न सु—सर्वेण केवलं [17] °चित्तावाल, D.E ; चित्तावाल, B ; चित्तस्स, M. [18] वे पि, M.; केवलं चे, D.E.P.P [19] चर°, D.E., यथा सु० ११०. केवलं—पि, B.C.; इ० सु० ११०.

होति विरियं असल्लीनं, उपट्ठिता सति असम्मुट्ठा[1], पस्सद्धो[2] कायो असारद्धो[3], समाहितं चित्तं एकग्गं,[4] चरं[5] पि भिक्खु एवंभूतो आतापी ओत्तापी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो ति[6] वुच्चति[7]।—ठितस्स चे पि भिक्खुनो अभिज्झा[8] विगता होति, ब्यापादो विगतो[9] होति, थीनमिद्धं विगतं[10] होति[11], उद्धच्चकुक्कुच्चं विगतं होति, विचिकिच्छा पहीना होति, आरद्धं होति विरियं असल्लीनं, उपट्ठिता सति असम्मुट्ठा[12], पस्सद्धो कायो असारद्धो[13], समाहितं चित्तं एकग्गं, ठितो पि भिक्खु एवंभूतो आतापी ओत्तापी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो ति[14] वुच्चति।—निसिन्नस्स चे पि भिक्खुनो अभिज्झा विगता होति, ब्यापादो विगतो[15] होति[16], थीनमिद्धं विगतं होति[17], उद्धच्चकुक्कुच्चं विगतं होति, विचिकिच्छा पहीना होति, आरद्धं होति विरियं असल्लीनं, उपट्ठिता सति[18] असम्मुट्ठा[19], पस्सद्धो कायो असारद्धो, समाहितं चित्तं एकग्गं, निसिन्नो पि[20] भिक्खु एवंभूतो आतापी ओत्तापी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो ति वुच्चति[21]।—सयानस्स[22] चे पि[23] भिक्खुनो जागरस्स अभिज्झा विगता होति, ब्यापादो विगतो[24] होति[25], थीनमिद्धं विगतं होति, उद्धच्चकुक्कुच्चं विगतं[26] होति[26], विचिकिच्छा पहीना[27] होति[27], आरद्धं होति[28] विरियं असल्लीनं, उपट्ठिता सति असम्मुट्ठा[29], पस्सद्धो

[1]असंमुट्ठा, इ० सम्मुस्स न ता, पुग्गल पञ्ञत्ति २१८ असमुस्सनता, धम्मसंङ्गणि १४,... . अप्पमुट्ठा, D.E., इ० सुमङ्गल-विलासिनी I-p. 113, J.P.t.S., 1884, P.94. [2]°द्ध, C. [3]असार°, C. [4]एतस्सं, D.E., B.C. आघ्रेपदने—चित्तं, एकग्गं इत्य: परं। [5]चरम्पि, B.C. D.E.; चर°, D.E.

[6]ति, नात्ति B.; °त्थे तोति, C. [7]D.E.Pa. नात्ति चे; B.C. नात्ति चे पि. [8]अविज्झा, D.E. [9]॥प॥, M. [10]नात्ति B.C. M.P.Pa.; (॥पे॥, C.; ॥प॥, B). [11]नात्ति सर्वत्र ह० [12]असंमुट्ठ, P.; असप्पमुट्ठा, Pa; अप्पमुट्ठा, D.; अपम्म°, E. [13]आरद्धो, C. [14]नात्ति Pa. [15]°त्थो, C. [16]B.C.Pa. केवल चे। [17]न सर्वत्र ह० (॥पे॥, C.; ॥प॥, B.) [18]उपट्ठितस्सति, C. [19]अप्पमुट्ठा, D.E. [20]नात्ति B.C.D. [21]नात्ति D.E. [22]सयनस्स, B.C. [23]C. Pa. पाठे केवलं—चे. D.E. नाहि चे पि। [24]॥प॥, M. [25]न सर्वत्र ह० (॥पे॥, C.; ॥प॥, B.) [26]न सर्वत्र ह० [27]नात्ति M. [28]नात्ति C. [29]अपम्मुट्ठो, D.E.

कायो असारद्धो, समाहितं चित्तं एकग्गं, सयानो पि भिक्खवे भिक्खु जागरो एवंभूतो आतापी ओत्तप्पी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो ति वुच्चतीति।

यतं[1] चरे[2] यतं[3] तिट्ठे यतं[3] अच्छे[4] यतं[3] सये।
यतं [5]सम्मिञ्जये[6] भिक्खु यतमेनं[7] पसारये[8] ॥
उद्धं तिरियं अपाचिनं[9] यावता जगतो[10] गति[10]।
समवेक्खिता च[11] धम्मानं खन्धानं उदयब्बयं[12] ॥
एवं विहारिमा[13]तापिं[14] सन्तवुत्ति[15]मनुद्धतं।
चेतोसमथसामीचिं[16] सिक्खमानं सदा सतं[17]।
सततं[18] पहितत्तो ति[19] आहु भिक्खु[20] तथाविधन्ति[21] ॥१२॥

११२—[22]लोक-सुत्तं [चतु. १३]

वुत्तं[23] हेतं[24] भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं। लोको भिक्खवे तथागतेन अभिसम्बुद्धो, लोकस्मा तथागतो विसञ्ञुत्तो; लोकसमुदयो भिक्खवे तथागतेन अभिसम्बुद्धो, लोकसमुदयो तथागतस्स पहीनो; लोकनिरोधो भिक्खवे तथागतेन अभिसम्बुद्धो, लोकनिरोधो तथागतस्स सच्छिकतो; लोकनिरोधगामिनी पटिपदा भिक्खवे तथागतेन अभिसम्बुद्धा[25], लोकनिरोधगामिनी पटिपदा [illegible] तथागतस्स भाविता। यं[26] भिक्खवे सदेवकस्स लोकस्स[27] समारकस्स सब्रह्मकस्स [illegible]

[1] यतं, B.C. [2] चरे, D E. [3] यतं, B. [4] तिट्ठे, C. [5] [illegible], P [illegible] [6] सम्मिञ्जये, B.P.; सम्मिञ्जेय्य, C. [illegible] सम्मिञ्जये, M.; °आये, D.E; [7] यतमेनं, D E., [illegible] मेनं, P.Pa [illegible] सुमङ्गलविलासिनी, I. p. 196. [illegible] सम्°, B. [8] पसारए°, P.Pa.
[9] अपाचीनं—इति वण्णनया (= हेट्ठा, A.); अपाचिनं, P.Pa; अपाचि[illegible] B, °नी, C.; अपाचिनं D.E.; अपाचिन, M. [10] जगतो, P; जगतो, Pa; [illegible] D E.; जगतो, B. C.; गती, D. E.; यावता च लोकगति M. [11] च [illegible] [12] °ब्बयं, D [illegible] E.; अम्पहरन सिलपाठे—च, समवेक्खिता खन्धानं, C. [13] °हारिं, D [illegible] विहारतिं, P. [14] आतापि [illegible] [15] °वुत्ति, M; °त, B C.D E.Pa.; °वुत्तिं, M.; °इं, D E.; °त, P.[illegible] [16] सामि°, D E.; °सामीचि, M.; [illegible] °इ, B.M.P.Pa; [illegible], M. [17] [illegible] सतिं [illegible] °वुद्ध, B C. [18] °सतत°, C.; [19] पहितत्तोति, D E. [20] °उ, [illegible] Pa. [illegible] सतिं D.E. [21] °विधन्ति, D E. [22] संपुण्णं सु° अट्ठमस्स-निक° (cf. Mo[illegible] [23] वुत्तमहेतं, B P.Pa; [24] हेतं, C. [25] °बुद्धा [illegible] अनु° ९१ [26] यं हि, [illegible] अनु° [illegible] अम्बोवु ह°, Morris अनु°-निक°, l.c. °बुद्धो।

इति देवा[1] मनुस्सा च ये बुद्धं सरणंगता
सङ्गम्म[2] तं[3] नमस्सन्ति महन्तं वीतसारदं॥
दन्तो दमयतं[4] सेट्ठो[5] सन्तो समयतं इसि[6]।
मुत्तो मोचयतं अग्गो तिण्णो तारयतं वरो॥
इति हेतं नमस्सन्ति महन्तं वीतसारदं
सदेवकस्मिं लोकस्मिं नत्थि ते[8] पटिपुग्गलो ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥१३॥

चतुक्कनिपातं निट्ठितं

तस्सु[7]द्दानं[8]।

ब्राह्मणा [9] (१००) चतारि (१०१) जानं[10] (१०२) समण (१०३) सील[11] (१०४) तण्हा (१०५) ब्रह्मा (१०६)। बहुकारा[12] (१०७) कुहना[13] (१०८ पुरिसा (१०९) चर[14] (११०) सम्पन्न (१११) लोकेन (११२) तेरसानि[15]॥

इतिवुत्तके द्वादसाधिकसतं सुत्तानि [16]।

इतिवुत्तकं निट्ठितं [17]।

---

[1] हेव°, B C., and Morris l.c. [2] तथागत D.E. [3] सम्मयतं सेट्ठं, B. [4] इसि, B. [5] च तं, P.; ति, Pa. [6] हेवतं M. [7] हेवतं in M. [8] उत्तरं M.P.Pa. [9] °स्स, C.; ब्राह्मणा, B.M.P.Pa. (I take ब्राह्मणा as ablative: after br.) [10] जानं, M.; जिता, B P.Pa; जिनास च C.; परिजना, D.E. [11] सील, P.Pa. [12] अनुमीयते; बहुकरा, M.; बहुतरा, B.C.P.Pa. °करा, D.E. [13] °न, D; °ना, E.; कुहना, P.; कुह, M. [14] अनुमीयते चर, M.; च, B C.P.Pa.; च, D.E. [15] तेरसानि, M. [16] °सुत्त, नत्थि D.E.; °द्विसतसुत्त° B.C.—Instead of this line M. has the following verses:

सत्तविसेकनिपातं सुत्तं बावीससुत्तसङ्गहितं।
समपञ्ञासमथनिके तेरस चतुक्कञ्च इति इमिदं॥
द्विसुत्तरसुत्त सते सङ्गायित्वा समादहिंसु पुरा।
अरहन्तो चिरठितिया तमाहु नामेन इतिवुत्तन्ति॥

[17] इतिवुत्तकपाळि निट्ठिता, C.M.